उल्लू तन्त्र
कौवा तन्त्र
और पशु-पक्षी तन्त्र

(सम्पूर्ण तीनों खण्ड)

लेखक :

के. एल. निषाद (भैरमगढ़ी)

संस्थापक : यक्षिणी तन्त्र, वनस्पति तन्त्र एवं उल्लू और पशु-पक्षी तन्त्र शोध केन्द्र
तथा
आदिवासी क्षेत्रों की प्राचीन लुप्त विद्याओं के गहन अध्ययनकर्ता
और
छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश के तन्त्र शिरोमणि

मूल्य : ₹ 200.00

आवश्यक सूचना

हमारी प्रकाशित पुस्तकों में सभी विद्वान लेखकों ने विभिन्न प्राचीन मान्यताओं, प्रचलित किवदंतियों और दुर्लभ तथा लुप्तप्राय ग्रन्थों के आधार पर इन मन्त्र-तन्त्र विद्याओं और यन्त्रों को बनाने व उनके प्रयोग करने के ढंग का वर्णन पुस्तकों में किया हुआ होता है। प्रत्येक पुस्तक में दिए गये वर्णन उस विषय की जानकारी के लिए हैं। यदि कोई पाठक कोई भी उचित या अनुचित प्रयोग करता है तो वह उसके हानि-लाभ का स्वयं उत्तरदायी होगा। जानवरों व पशु-पक्षियों को मारना अब कानूनी अपराध है इसकी भूल न करें। अत: पाठक पुस्तक को पढ़कर कोई प्रयोग करने की चेष्टा न करें। उस प्रयोग करने से पूर्व किसी योग्य तान्त्रिक, मन्त्रवेत्ता व ज्योतिषी से पूरी जानकारी प्राप्त करना उचित होगा।

प्रकाशक, मुद्रक व विक्रेता को विषयवस्तु की जानकारी नहीं होती। अत: तत्संबंधी विस्तृत ज्ञान के लिए अन्य पुस्तकें पढ़ें।

कुछ प्रसिद्ध व पुरानी पुस्तकों के लेखक जो स्वर्गवासी हो चुके हैं अथवा जिनका लेखकों व तन्त्रिकों का कोई स्थाई पता नहीं है और फोन या मोबाइल नम्बर नहीं है, उसके लिए प्रकाशक व मुद्रक की मजबूरी है। अत: इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं कि उनसे सम्पर्क नहीं करवा सकते।

इस पुस्तक के पृष्ठ १ से ८० तक की जानकारी के लिए—इसी लेखक की पुस्तक **तान्त्रिक तरंग** पढ़ें। प्रस्तुत पुस्तक उपरोक्त पुस्तक का ही एक भाग है।

प्रकाशक-लेखक-मुद्रक

अनुक्रम

उल्लू तन्त्र
कौवा तन्त्र
और पशु-पक्षी तन्त्र

(सम्पूर्ण तीनों खण्ड)

लेखक :

के. एल. निषाद (भैरमगढ़ी)

संस्थापक : यक्षिणी तन्त्र, वनस्पति तन्त्र एवं उल्लू और पशु-पक्षी तन्त्र शोध केन्द्र

तथा

आदिवासी क्षेत्रों की प्राचीन लुप्त विद्याओं के गहन अध्ययनकर्ता

और

छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश के तन्त्र शिरोमणि

मूल्य : ₹ 200.00

आवश्यक सूचना

हमारी प्रकाशित पुस्तकों में सभी विद्वान लेखकों ने विभिन्न प्राचीन मान्यताओं, प्रचलित किवदंतियों और दुर्लभ तथा लुप्तप्राय ग्रन्थों के आधार पर इन मन्त्र-तन्त्र विद्याओं और यन्त्रों को बनाने व उनके प्रयोग करने के ढंग का वर्णन पुस्तकों में किया हुआ होता है। प्रत्येक पुस्तक में दिए गये वर्णन उस विषय की जानकारी के लिए हैं। यदि कोई पाठक कोई भी उचित या अनुचित प्रयोग करता है तो वह उसके हानि-लाभ का स्वयं उत्तरदायी होगा। जानवरों व पशु-पक्षियों को मारना अब कानूनी अपराध है इसकी भूल न करें। अत: पाठक पुस्तक को पढ़कर कोई प्रयोग करने की चेष्टा न करें। उस प्रयोग करने से पूर्व किसी योग्य तान्त्रिक, मन्त्रवेत्ता व ज्योतिषी से पूरी जानकारी प्राप्त करना उचित होगा।

प्रकाशक, मुद्रक व विक्रेता को विषयवस्तु की जानकारी नहीं होती। अत: तत्संबंधी विस्तृत ज्ञान के लिए अन्य पुस्तकें पढ़ें।

कुछ प्रसिद्ध व पुरानी पुस्तकों के लेखक जो स्वर्गवासी हो चुके हैं अथवा जिनका लेखकों व तन्त्रिकों का कोई स्थाई पता नहीं है और फोन या मोबाइल नम्बर नहीं है, उसके लिए प्रकाशक व मुद्रक की मजबूरी है। अत: इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं कि उनसे सम्पर्क नहीं करवा सकते।

इस पुस्तक के पृष्ठ १ से ८० तक की जानकारी के लिए—इसी लेखक की पुस्तक **तान्त्रिक तरंग** पढ़ें। प्रस्तुत पुस्तक उपरोक्त पुस्तक का ही एक भाग है।

प्रकाशक-लेखक-मुद्रक

अनुक्रम

उल्लू तन्त्र कौवा तन्त्र एवं पशु-पक्षी तन्त्र

तन्त्र जगत में पशु पक्षियों को भी विशेष स्थान प्राप्त है। कुछ पशु-पक्षियों के अंग-प्रत्यंग में धन समृद्धि प्रदान करने की चमत्कारी शक्ति होती है। कुछ ऐसे भी पशु-पक्षी भी हैं जिसके अंग-प्रत्यंग को तांत्रिक विधियों से सिद्ध करके अनेक तन्त्र प्रयोग किए जाते हैं। कुछ पशु-पक्षियों में आकर्षण, सम्मोहन, वशीकरण की शक्ति होती है। इस पुस्तक में कुछ ऐसे ही पशु-पक्षियों के सम्बन्ध में तान्त्रिक प्रयोग प्रस्तुत हैं जो कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए सफल व सार्थक सिद्ध होंगे। पीड़ित व्यक्ति प्रयोग करके अपना जीवन सुखी बना सकता है। एक बात और भी लिखना चाहूँगा कि प्रस्तुत तन्त्र प्रयोग सरल लगते हुए भी एक विस्फोटक विलक्षण शक्ति से परिपूर्ण हैं।

कृपया साधक और पाठक ध्यान दें

यह पुस्तक केवल उन्हीं श्रद्धावान व्यक्तियों के लिए है जो भारतीय प्राचीन गुह्य विद्याओं में पूर्ण रूप से आस्था रखते हैं। अत: जिस किसी के पास भी यह पुस्तक रहे उसे चाहिए कि वह इसको पवित्रता से रखे तथा किसी ऐसे व्यक्ति के हाथ में न दें जो इस विद्या का अपमान करता हो। पुस्तक का सम्मान करना एवं इसे साफ-सुथरा रखना; इसमें दिए प्रयोगों में सफलता पाने के लिए अनिवार्य है। पुस्तक को जहाँ भी रखें रेशमी वस्त्र से सुन्दर ढंग से आवेष्टित करके रखें एवं उसी प्रकार से किसी अन्य को भी रखने के लिए प्रेरित करें।

—लेखक

विशेष—

पुस्तक में दिए गये किसी भी प्रयोग के हानि-लाभ के उत्तरदायी प्रकाशक या लेखक नहीं हैं। जानवरों से सम्बन्धित किसी भी सामग्री के लिए प्रकाशक को फोन न करें। ये प्रतिबन्धित हो चुकी हैं। पुस्तक को केवल भारतीय पुरातन विद्या की जानकारी के लिए अध्ययन करें।
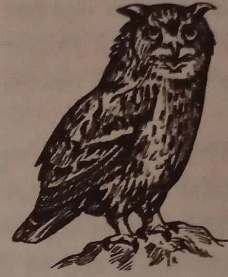
उल्लू तन्त्र

उल्लू तन्त्र जगत का महान चमत्कारी, चर्चित, रजनीचर पक्षी है। इसके सम्बन्ध में अधिक विस्तार से लिखना चाहूँगा क्योंकि इस पक्षी को सभी वर्ग के लोग जानते हैं। उल्लू को हमारे देश के निवासी आज भी अशुभ मानते हैं परन्तु इसी रजनीचर पक्षी को विदेशों में बड़े आदर के साथ शुभ माना जाता है। वैसे इसकी बोली भयानक और डरावनी होती है, हमारे अध्यात्म जगत में इसे लक्ष्मीजी का वाहन माना गया है। जहाँ तक मेरे अनुभव में ऐसा आया है कि उल्लू ज्यादातर शुभ फल ही देता है। जैसे कि उल्लू का मकान के अन्दर घोंसला बनाकर निवास करना यह युति अतिशुभ होती है। इसके उस घर में निवास करने वाले पर सदा ही लक्ष्मी की कृपा बनी रहेगी, यदि उल्लू मकान के ठीक दरवाजे की ओर बोल रहा हो तो कोई बाहरी मेहमान कुछ लेकर आने वाला है ऐसा संकेत मिलता है। यदि उल्लू मकान के पीछे की ओर बोल रहा हो तो उस दिशा से लाभ होने के संकेत मिलते हैं। उल्लू किसी के सिर पर आकर बैठ जाए तो समझो वह व्यक्ति कुछ ही दिनों में महान व्यापारी बन सकेगा। इस बारे में एक ऐसा भी अनुभव आया है कि उल्लू का सिर पर बैठना उस व्यक्ति को यह बताता है कि उस व्यक्ति को शीघ्र ही कोई नौकरी मिलने वाली है। पर ऐसा होना आज दुर्लभ है। उल्लू किसी नारी के सिर पर बैठे तो समझो वह नारी को पुत्रवान होने की ओर संकेत दे रहा है। उल्लू की चोंच को यदि दुकान में गाड़ दिया जाए तो उस दुकान की बिक्री बढ़ जाती है। नख को धारण करने का प्रचलन आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में है। नख धारण करने से आकस्मिक धन प्राप्ति होने की

संभावना बनी रहती है। उल्लू के पंखों को आग में जलाकर भभूत तैयार भी किया जाता है। इस भभूत की कुँवारी कन्या तिलक लगा ले तो उसे सुन्दर वर की प्राप्ति होती है। यदि उल्लू के दाहिने पैर को तिजोरी में रखा जाए तो तिजोरी खाली नहीं होती।

अब कुछ अशुभ लक्षण भी बता देते हैं। उल्लू का बायाँ पैर शत्रु के घर में डाल देने पर उस शत्रु का उच्चाटन हो जाता है पर हमें इस बात को समझना पड़ेगा कि उल्लू का दाहिना पैर शुभ और बायाँ पैर अशुभ क्यों? इसका एक कारण यह है कि उल्लू हमेशा खराब काम के लिए जैसे साँप, चूहा आदि को अपने बाएँ पैर से ही पकड़कर मार डालता है। मैंने यहाँ तक देखा है कि उल्लू श्मशान में जाकर बाएँ पैर पर ही खड़े होकर रुदन करता है। उल्लू बाएँ पैर से अपने अंग को नोचता है आदि अनेक उदाहरण इसके बाएँ पैर के हैं। शायद इसी कारण से उल्लू के बाएँ पैर को उच्चाटन प्रयोग में लाया जाता है।

उल्लू में एक और भी अचरज भरी विशेषता है कि मादा उल्लू जब बच्चा देती है और बच्चा कुछ बड़ा हो जाता है उस वक्त मादा उल्लू अपने बच्चों को दाहिने पैर से पकड़कर रात को जमीन में उतार देती है और फिर तत्काल अपने पैरों से पकड़कर अपने घोंसले में ले जाती है, तो वह ऐसा क्यों करती है? इसका भी कारण है। मादा उल्लू बच्चों को रात में इसलिए जमीन पर उतारती है कि उल्लू के बच्चे के पैर जमीन में लगें और बच्चा शीघ्र से शीघ्र बढ़े। कभी-कभी ऐसा देखने में आया है कि उल्लू अपने बच्चों को किसी मन्दिर के पास लाती है उसे वहाँ छोड़कर दूर चली भी जाती है। यह भी एक शुभत्व की निशानी है। मैनें यह भी देखा है कि उल्लू अपना पंख उस जगह फड़फड़ाती है जहाँ पर भूतों का वास होता है। कभी-कभी उल्लू अपना पंख नदी संगम में भी फड़फड़ाती है और एक या दो पंख उल्लू के शरीर से गिरकर जमीन पर पड़ा रहता है। यदि किसी भाग्यवान व्यक्ति को ऐसा पंख मिल जाता है तो उस व्यक्ति को चाहिए की उसे तिजोरी में रख ले तो धन की बढ़ोत्तरी होगी।

कुछ तान्त्रिक ग्रन्थों में लिखा भी गया है कि उल्लू के मांस को किसी

स्त्री या पुरुष को खिला दिया जाए तो वह खिलाने वाले के वश में हो जाते हैं। उल्लू के गर्दन में जो बाल होते हैं उसे जलाकर राख कर ली जाए, फिर उसे अपने चेहरे पर लगाने से चेहरे की सुन्दरता बढ़ती है।

उल्लू अकस्मात किसी गम्भीर बीमारी वाले के शरीर को छू ले तो वह निरोग होने लगता है। किसी के खेत खलिहान में उल्लू बैठकर बोले तो समझो उसकी आर्थिक उन्नति अतिशीघ्र होने वाली है। उल्लू नववधू को स्पर्श कर दे तो समझो वह कन्या अतिशीघ्र पुत्र को जन्म देगी। कहते हैं कि इस तरह के बालक को गर्भ से दाँत निकला हुआ होता है पर ऐसा कहीं-कहीं हुआ होगा तभी तो गाँव के बुजुर्ग कहा करते हैं कि अमुक घर की नववधू को उल्लू छू दिया है उसकी सन्तान की दाँत गर्भ से होगी। इस सच्चाई का पता लगाना चाहिए क्योंकि यह एक शोध का विषय भी है। मैंने अभी तक ऐसा होना पाया नहीं है।

उल्लू का कलेजा चाँदी की डिब्बी में रखकर रखने वाला लक्ष्मीवान बनता है। ये बात अन्धविश्वास नहीं है क्योंकि मैंने एक व्यक्ति के पास उल्लू का कलेजा देखा है और वह सुखी-सम्पन्न है। वैसे तान्त्रिक अपनी सिद्धि के लिए उल्लू को पिंजड़े में बन्द करके रखा करते है। मैनें स्वयं भी अपने सिद्धि के लिए उल्लू का सहारा लिया और कुछ साधनाओं में सफलता भी प्राप्त की। अब उल्लू से कैसे साधना सम्पन्न की जाती है, इसके लिए पता लगाएँ कि उल्लू का बसेरा कहाँ पर है? पता लग जाने के पश्चात अमावस्या के दिन किसी युक्ति से उल्लू को पकड़कर पिंजड़ा में डालकर बन्द कर देना चाहिए।

यहाँ सोचना होगा जब तक उल्लू पिंजड़ा में बन्द रहेगा, किसी के द्वारा दिए गए खाना को नहीं खाएगा। उल्लू के सामने तेल का दीपक जलाकर स्वयं उसके सामने बैठ जाना चाहिए और उल्लू की आँख पर अपनी आँख गड़ाकर एकटक त्राटक करना करना चाहिए। ये प्रयोग रात्रि को निशाकाल (अंधरे पक्ष) में ही करना चाहिए। एकटक त्राटक में देखते रहने पर उल्लू की आँख की रोशनी साधक के आँख में आती है। उस समय एक दिव्यानुभव होता है, कुछ-कुछ परछाँई दिखाई देने लगती है, दूसरे दिन फिर

त्राटक करने से और भी कई अनुभूति होने लगती है, तीसरे दिन जब उल्लू के आँख में त्राटक करने बैठें उसी वक्त उल्लू बोलने लगता है, उसकी आवाज इस तरह होती है—हूँ हूँ हूँ हूँ अं अं हूँ। जब ऐसी आवाज उल्लू बोलने लगे तो उस वक्त सतर्क हो जाना चाहिए कि किसी अदृश्य शक्ति का आगमन हो रहा है। साधक एकटक त्राटक करते रहे तो अन्त में उल्लू अपना सिर घुमा देती है। बस उसी वक्त दिव्यशक्ति साधक को मिल जाती है। इस दिव्य शक्ति के सहारे साधक अनसुलझे कार्य को सुलझाकर समाज का कल्याण व प्रयोग अच्छे कार्यों के लिए कर सकता है।

लक्ष्मी साधना में उल्लू

विश्व में उल्लू ही एकमात्र ऐसा पक्षी माना गया है जो दिन में देख नहीं सकता। उसकी आँखों की बनावट की कुछ इस प्रकार की है कि वह सूर्य की रोशनी या प्रकाश में देख नहीं सकता, उसकी आँखें चौंधिया जाती हैं। वह केवल अन्धकार में देख सकता है। बिल्ली से ७५ प्रतिशत अधिक उल्लू की दृष्टि रात्रि में कार्य करती है। उल्लू की उड़ान सुनसान, भयानक स्थानों, खंडहरों आदि में ही अधिक होती है। ऐसे ही स्थान उसे प्रिय भी हैं। शकुन शास्त्र के अनुसार जिस भवन पर उल्लू या चील बैठती है वह शीघ्र ही अपशकुनों और आपदाओं की परिधि में आ जाता है। उल्लू एक डरावना परन्तु सुन्दर पक्षी माना गया है। उसकी बोली अशुभ है। कहा जाता है अगर उल्लू किसी का नाम लेकर पुकारे तो उसकी मृत्यु लगभग निश्चित होती है। उल्लू निर्जनता और विपदा का प्रतीक भी है। मुहावरा बन गया है···और वहाँ उल्लू बोलने लगे। उल्लू के सम्बन्ध में यह न केवल भारत में वरन विश्व के अनेक देशों में भी अपशकुनी के रूप में अनेक बातें प्रचलित हैं। उल्लू को बेवकूफ के लिए इसी रूप में लिया गया है। लेकिन तन्त्र में उल्लू बहुत ही महत्त्वपूर्ण जीव है।

कुरूप, डरावनी, विकृत और तमाम अपशकुनों के बावजूद उल्लू लक्ष्मी का वाहन माना गया है। धन की देवी इसी को वाहन रूप में प्रयोग करती है। अपनी आकृति और व्यवहार के कारण उल्लू का तन्त्र, मन्त्र में

बड़ा महत्त्व माना गया है। सच तो यह है कि उल्लू की छिपी उपयोगिता को केवल तान्त्रिकों ने ही पहचाना है। इसी कारण एक अलग ही शाखा 'उलूक तन्त्र' के नाम से स्थापित हो गई है।

उल्लू वास्तव में लक्ष्मी का प्रतीक है। लक्ष्मी के साथ घनिष्ठता के कारण लक्ष्मी साधना में इसका विशेष महत्त्व है और इसी कारण उल्लू को तन्त्र में अजीब सा रहस्यमय स्थान दिया गया है। '**उलूक साधना**' एक अति रहस्यमय, जटिल तान्त्रिक प्रक्रिया है और श्मशान से सम्बन्ध रखती है। उल्लू सिद्ध तान्त्रिक का पथ प्रदर्शन करता है। आज के युग में इस प्रकार की साधना करना असम्भव नहीं तो दुष्कर अवश्य है।

कई वर्ष पूर्व उत्तराखण्ड (हिमालय) की यात्रा के अवसर पर एक सिद्ध तान्त्रिक से परिचय होने पर उसके द्वारा उलूक साधना की वास्तविक विधि का पता चला था। उल्लू की विशेषता है वह जीवित अवस्था में और मरने के बाद दोनों ही स्थितियों में तन्त्र में उपयोगी सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त तान्त्रिक लोग उल्लू के हर अंग का तन्त्र साधना में उपयोग करते हैं।

उलूक साधना प्रायः दीपावली के अवसर पर ही की जाती है। श्रद्धा, निष्ठा और एकाग्रता के साथ इसको सम्पन्न कर आप लाभान्वित हो सकते हैं।

दीपावली से पूर्व कभी भी किसी भी समय उल्लू के पंख का एक हिस्सा प्राप्त कर लें। दीपावली के दिन उस पंख को लक्ष्मी की प्रतिमा के तले रख दें। पूजा उपासना के उपरान्त हवन कुण्ड में डालकर भस्म कर दें। जब तक वह पंख भस्म हो आप '**ॐ उलूकाय नमः**' का निरन्तर जाप करते रहें। पंख जलने पर दुर्गन्ध तो अवश्य होगी। आप उस ओर ध्यान न दें। इसके बाद वह भस्म एकत्रित कर लाल रंग के कपड़े में बाँध दें। अब यह तिलस्मी भस्म तैयार है। इसे घर के किसी कोने में छिपा कर रख दें।

जब तक यह पोटली आपके घर में रहेगी धनाभाव कदापि न होगा, इसकी किसी से चर्चा न करें। यह अत्यन्त सरल साधारण किन्तु उपयोगी साधना है, प्रत्येक गृहस्थ बिना किसी भय के कर सकता है। आप इस साधना

को करें, आपका कोई कार्य धनाभाव से न रूके, यही हमारी कामना है।

उल्लू वास्तव में लक्ष्मी का प्रतीक है। इसका प्रमाण आज भी है। जिन व्यवसायियों ने इसका प्रयोग व्यापार-चिह्न के रूप में किया है, वह करोड़पति बन गए हैं। विश्व प्रसिद्ध हथियार सौदागर औनासिस और राष्ट्रपति की सुन्दर पत्नी जैकलीन कैनेडी से विवाह करने वाला अरबपति है। उसका व्यापार-चिह्न उल्लू है। समाज में उल्लू हँसी-व्यंग्य का प्रतीक है, पर धनदायक है।

प्रिय साधकों! अगर आपके पास प्रचुर समय और साधना की शक्ति है तो आप निम्न मन्त्र का जाप भी कर सकते हैं—

''ॐ नमो उलूकराजे, नमो लक्ष्मी वाहने मम अभिलाषां पूर्ण कुरु अमुकस्य उच्चाटनं कुरु कुरु कुरु ऐं ह्रीं क्लीं ग्लौं फट् स्वाहा।''

उल्लू के विषय में एक अन्य चर्चित और प्रसिद्ध व्यक्ति के विचार भी देखें—

उल्लू का तन्त्र शास्त्र में विशद विवरण है। उसकी कुछ साधनाएँ इस प्रकार हैं—उल्लू एक मध्यम आकार वाला कुरुप पक्षी है। इसके रोम तथा पंख सफेदी लिए मटमैले ढंग के होते हैं। इसकी गर्दन छोटी होती है तथा सिर और नेत्र गोल होते हैं। चोंच छोटी तथा थोड़ी नीचे की ओर झुकी होती है। इस पक्षी की अनेक प्रकार की जातियाँ पाई जाती हैं।

इस पक्षी को सूरज की रोशनी में दिखलाई नहीं देता अर्थात् यह उजाले में अन्धा रहता है। रात के अन्धेरे में इसे खूब दिखलाई देता है। इसी कारण यह दिन के समय अपने घोंसले में ही बैठा रहता है और किसी को दिखलाई नहीं देता है। यह हमेशा रात के समय निकलता है और ऊँची जगहों पर बैठा दिखलाई देता है। पृथ्वी पर नीचे उतरकर नहीं घूमता। यह पक्षी सारे संसार में पाया जाता है। भारत में इस पक्षी को मनहूस, मूर्ख तथा अशुभ समझा जाता है। इसी कारण यहाँ इसके नाम पर अनेक गालियाँ भी प्रचलित हैं। यूरोप में इस पक्षी को शुभ माना जाता है और कई स्थानों पर इसके चित्र भी टाँगे जाते हैं। उल्लू के द्वारा भी शुभाशुभ का विचार तथा तान्त्रिक प्रयोग किए जाते हैं।

उल्लू के बोलने के शुभ-अशुभ फल

- अगर प्रातः उल्लू पूर्व दिशा में किसी वृक्ष की डाली पर बैठा हुआ बोल रहा हो तो धन का लाभ होता है और चिन्ताएँ भी दूर होती हैं। अगर प्रातः उल्लू पक्षी नैऋत्य कोण में किसी ऊँचे स्थान पर बैठकर बोल रहा हो तो सुनने वाले को शारीरिक कष्ट होता है तथा वह बीमार भी पड़ता है। अगर प्रातः में उल्लू उत्तर दिशा में किसी खंडहर पर बैठकर बोल रहा हो तो उसका शब्द सुनने वाले को भय होता है तथा उसके समीपवर्ती क्षेत्र में रोगी हो तो उसकी मृत्यु तक हो जाती है।
- अगर प्रातःकाल में उल्लू ईशान कोण में बैठा बोल रहा हो तो सुनने वाले के व्यवसाय में वृद्धि होती है और वह रोग-मुक्त भी हो जाता है।
- अगर प्रातःकाल में उल्लू पश्चिम दिशा में किसी सूखे वृक्ष पर बैठा हुआ हो तो सुनने वाले के धन का नाश होता है। अन्य स्थितियों में विभिन्न दिशाओं तथा कोणों में उल्लू पक्षी के बोलने का कोई विशेष फल नहीं होता है।
- अगर प्रातःकाल में उल्लू दक्षिण दिशा में किसी ऊँचे स्थान पर बोल रहा हो तो सुनने वाले के शत्रुओं का नाश होता है।
- मंगलवार को प्रातःकाल में अन्य किसी भी दिशा में उल्लू की बोली सुनाई देने का फल अशुभ बताया गया है।
- मंगलवार की सुबह में उल्लू पूर्व दिशा में किसी वृक्ष पर बैठा बोल रहा हो तो सुनने वाले को सन्तति-लाभ होता है और अगर पश्चिम दिशा में किसी सूखे वृक्ष पर बैठा बोल रहा हो तो सुनने वाला कठिन रोग का शिकार होता है।
- मंगलवार के दिन प्रातः में पूर्व दिशा के अतिरिक्त अन्य किसी दिशा में उल्लू की बोली सुनाई दे तो सुनने वाले को चाहिए कि वह निम्नलिखित मन्त्र का २१०८ की संख्या में जप करे तथा दान करे।

मन्त्र इस प्रकार है—"**ॐ नमो उलूक वाहिन्यै भगवती लक्ष्मी कृपां कुरु कुरु स्वाहा।**"

- ❖ दिन के प्रथम प्रहर में उल्लू बोल रहा हो तो भयंकर वर्षा होने की संभावना रहती है। दिन के तीसरे प्रहर में उल्लू बोल रहा हो तो अतिवृष्टि के कारण भीषण अकाल पड़ने की सम्भावना रहती है तथा अन्न मँहगा होता है।
- ❖ दिन के दूसरे प्रहर में उल्लू जिस स्थान पर बोल रहा हो, वहाँ कोई रोग फैलता है अथवा सुनने वालों के घर के बीमार पड़ते हैं।
- ❖ दिन के चौथे प्रहर में उल्लू बोल रहा हो तो मुखिया की मृत्यु अथवा अन्य प्रकार से संकट आता है।
- ❖ अगर यात्रा के समय घर अथवा गाँव से बाहर निकलते ही उल्लू बाईं ओर को बोले अथवा दिखाई दे तो सुख प्राप्त होता है।
- ❖ अगर यात्रा के समय उल्लू यात्री की पीठ के पीछे चले तो यात्री की मनोभिलाषा पूर्ण होती है।
- ❖ अगर यात्रा के समय उल्लू सामने की ओर बोले तो उसे अशुभ फलकारक समझना चाहिए। सुनने वालों को अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं।
- ❖ अगर यात्रा के समय उल्लू दाईं ओर को बोले अथवा दिखाई दे तो वह अशुभ फलकारक होता है।
- ❖ अगर यात्रा के समय उल्लू पीछे-पीछे की ओर बोले तो शत्रु भय होता है।

रात्रि के विभिन्न प्रहरों में उल्लू के बोलने का सुनने वाले पर क्या प्रभाव होता है, उसे इस प्रकार समझना चाहिए।

- ❖ अगर रात्रि के द्वितीय प्रहर में उल्लू पूर्व दिशा में बोले तो सुनने वाले का धन-नाश, पश्चिम में बोले तो मानसिक चिन्ता, उत्तर में बोले तो रोग और दक्षिण में बोले तो नाना प्रकार की हानि होती है। अन्य दिशाओं में बोलने का कोई विशेष फल नहीं होता।
- ❖ अगर रात्रि के प्रथम प्रहर में उल्लू पूर्व दिशा की ओर किसी पेड़ की

डाली पर बैठा बोलता हुआ दिखाई दे तो सुनने वाले को धन का लाभ होता है तथा व्यवसाय में वृद्धि होती है। अन्य दिशाओं में बोलने का कोई विशेष फल नहीं होता।

- ❖ अगर रात्रि के तीसरे प्रहर में उल्लू किसी भी दिशा में बोले तो उसका भी कोई विशेष फल नहीं होता है।
- ❖ दक्षिण-पश्चिम कोण में बोलने पर मानसिक कष्ट होता है। उत्तर पूर्व कोण में बोलने पर किसी बिछुड़े हुए से मिलन होता है। दक्षिण-पूर्व कोण में बोलने पर आक्रमण होता है तथा उत्तर-पश्चिम कोण में बोलने पर सुनने वाले को शोक, चिन्ता एवं रोग आदि अशुभ फल होते हैं।
- ❖ अगर रात्रि के चौथे प्रहर में उल्लू पूर्व दिशा में बोले तो परदेश गया हुआ घर लौटकर आता है। अगर पश्चिम दिशा में बोले तो कृषि का नाश होता है। अगर उत्तर में बोले तो सुनने वाले को कष्ट होता है और अगर दक्षिण में बोले तो सुनने वाले के घर का कोई बीमार पड़ता है।

दिन में उल्लू दिखाई देने का फल

- ❖ अगर दिन की तीसरी घड़ी में उल्लू किसी ऊँचे स्थान, मकान, वृक्ष आदि पर बैठा दिखाई दे तो यात्रा सफल होती है तथा लाभ भी होता है। सुख-सम्मान की उपलब्धि होती है।
- ❖ अगर दिन की पहली घड़ी में उल्लू किसी वृक्ष की डाली पर बैठा दिखाई दे तो यात्रा में सफलता मिलती है तथा चिन्ताएँ दूर होती हैं। अगर दिन की दूसरी घड़ी में उल्लू किसी सूखे वृक्ष की कोटर में बैठा दिखाई दे तो यात्रा असफल होती है।
- ❖ अगर दिन की पाँचवीं घड़ी में उल्लू किसी सूखे वृक्ष पर बैठा हुआ दिखाई दे तो किसी रोग अथवा दुर्घटना का शिकार बनना पड़ता है।
- ❖ अगर दिन की छठी घड़ी में उल्लू किसी वृक्ष की डाली पर बैठा दिखाई दे तो सुख-शान्ति, व्यवसाय में सफलता एवं यात्रा में लाभ

होता है।

- ❖ अगर दिन की चौथी घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो व्यय में वृद्धि होती है तथा यात्रा सफल होती है।
- ❖ अगर दिन के सातवीं घड़ी में उल्लू किसी खण्डहर पर बैठा दिखाई दे तो पत्नी वियोग, शारीरिक कष्ट आदि अनेक प्रकार के अशुभ फल प्राप्त होते हैं।
- ❖ अगर दिन के आठवीं घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो बिछुड़े हुए प्रेमी से मिलन होता है।
- ❖ अगर दिन की नवीं घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो कोई परिजन लौटकर आता है।
- ❖ अगर दिन की ग्यारहवीं घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो देखने वाले का किसी युवती से मिलन होता है। अगर किसी स्त्री को दिखाई दे तो किसी युवक से मिलन होता है।
- ❖ अगर दिन की बारहवीं घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो देखने वाले का वियोग होता है। अगर किसी विवाहित स्त्री को दिखाई दे तो उसका पति से वियोग होता है।
- ❖ अगर दिन की दसवीं घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो देखने वाले को असफलता हानि अथवा मुकदमें में पराजय मिलती है। अगर कोई रोगी देखे तो उसकी मृत्यु की सम्भावना रहती है।
- ❖ अगर दिन की तेरहवीं घड़ी में उल्लू दिखाई दे तो देखने वाले को किसी दुर्घटना का शिकार बनना पड़ता है अथवा उसे कोई विषैला जन्तु काटता है। अगर दिन की पन्द्रहवीं घड़ी में उल्लू किसी निर्जन स्थान अथवा कोटर में बैठा हुआ दिखाई दे तो मित्र वियोग चिन्ता एवं शारीरिक-कष्ट आदि फल प्राप्त होते हैं।
- ❖ अगर दिन की चौदहवीं घड़ी में उल्लू किसी वृक्ष की डाली पर बैठा हुआ दिखाई दे तो धन का लाभ होता है। अगर गर्भवती हो तो उसे पुत्र की प्राप्ति होती है।

रात्रि में उल्लू के दिखाई देने का फल

- ❖ अगर रात्रि की पहली घड़ी में उल्लू किसी डाली पर बैठा दिखाई दे तो धन लाभ होता है। अगर देखने वाला नौकरी करता हो तो पदोन्नति होती है। अगर रात्रि की दूसरी घड़ी में उल्लू किसी वृक्ष की डाली से उड़कर शोर मचाता हुआ भागता दिखाई दे तो परिवारजन की मृत्यु होती है।
- ❖ अगर रात्रि के चौथी घड़ी में घर के पश्चिम की ओर कोई उल्लू किसी वृक्ष की डाल पर बैठा हुआ दिखाई दे तो चोरी का भय होता है। अगर उसी समय उल्लू उड़कर उत्तर दिशा की ओर चला जाए तो डाकुओं के भय के साथ जीवन-हानि की सम्भावना भी रहती है।
- ❖ अगर रात्रि के तीसरी घड़ी में उल्लू किसी मकान की छत पर बैठा हुआ दिखाई दे तो व्यवसाय में लाभ अथवा मुकदमें में विजय प्राप्त होती है।
- ❖ अगर रात्रि की पाचवीं घड़ी में उल्लू अपने मकान के समीप किसी अन्य मकान पर बैठा दिखाई दे तो वह भयंकर आग लगने के भय का सूचक होता है।
- ❖ अगर रात्रि की छठी घड़ी में उल्लू किसी नीम के वृक्ष पर बैठा बोलता हुआ दिखाई दे तो पारिवारिक कलह तथा चिन्ताओं का सूचक होता है।
- ❖ अगर रात्रि की आठवीं घड़ी में उल्लू किसी मकान के मुंडेर पर बैठा हुआ दिखाई दे तो उस घर में श्री लक्ष्मी का आगमन होगा।
- ❖ अगर रात्रि की नवीं घड़ी में उल्लू आकाश में उड़ता हुआ दिखाई दे तो शारीरिक कष्ट होते हैं और उसे कोई लम्बी यात्रा करनी पड़ती है।
- ❖ अगर रात्रि की दसवीं घड़ी में कोई उल्लू किसी वृक्ष की डाली पर बैठा हुआ दिखाई दे तो धन की वृद्धि होती है।
- ❖ अगर रात्रि की सातवीं घड़ी में उल्लू किसी दीवार पर बैठा दिखाई दे तो उस मकान के गिर जाने का भय होता है।

❖ अगर रात्रि की ग्यारहवीं घड़ी में कोई उल्लू कोटर में बैठा दिखाई दे तो घर में भूत-प्रेतों का उपद्रव होने अथवा चिन्ताएँ बढ़ने की सम्भावनाएँ अधिक रहती है।

❖ अगर रात्रि को बारहवीं घड़ी में उल्लू किसी मकान के भीतर घुसकर इधर से उधर फिरे तो उस मकान में रहने वालों के ऊपर संकट आ जाते हैं। उल्लू का इस प्रकार उड़ना या बोलना अशुभ बताया गया है।

❖ अगर रात्रि की चौदहवीं घड़ी में उल्लू किसी खेत में बैठा दिखाई दे तो उस खेत की फसल नष्ट हो जाती है।

❖ अगर रात्रि की पन्द्रहवीं घड़ी में कोई उल्लू किसी ऊँची जगह पर बैठा दिखाई दे तो अनेक चिन्ताएँ एवं कठिनाइयाँ दूर होती है।

❖ अगर रात्रि की तेरहवीं घड़ी में उल्लू किसी ऊँचे स्थान पर बैठा दिखाई दे तो घर से गया हुआ कोई अपने साथ धन लेकर लौट आता है।

उल्लू सम्बन्धी शकुन

❖ अगर किसी के मकान में घुसकर लगातार उल्लू बोलता रहे तो उस घर की सम्पत्ति को चोर ले जाते हैं।

❖ अगर उल्लू दिन के समय बोले तो वह अनिष्ट सूचक होता है।

❖ अगर उल्लू शब्द कर रहा हो तो उसे अशुभ समझना चाहिए, लेकिन अगर वह मैथुनार्थी होकर ऐसा कर रहा हो तो नष्ट नहीं होता।

❖ अगर उल्लू लगातार कई रात तक किसी के घर पर बोलता रहे तो उस घर का नाश हो जाता है।

❖ अगर उल्लू रात्रि के समय किसी के घर में बोले तो उसे दुःखदायक समझना चाहिए। वह श्रोता की मृत्यु का सूचक भी हो सकता है।

❖ अगर उल्लू कई रात तक किसी एक ही स्थान पर बैठकर बोलता रहे तो उसे उस देश के लिए अनिष्टकारक समझना चाहिए।

❖ अगर उल्लू 'चल चल' शब्द कर रहा हो तो उसे कलह की सूचना समझनी चाहिए।

❖ अगर उल्लू सामने की ओर बोले तो सुनने वाले के अनेक शत्रु होते हैं। अगर पीछे पीछे की ओर बोले तो भी शत्रु भय होता है।

❖ अगर उल्लू किसी मकान के भीतर कोटर बनाकर रहना आरम्भ कर दे तो उस मकान की गरीबी दूर हो जाती है। अगर किसी बगीचे में रहे तो वहाँ के वृक्षों में अत्यधिक फल आते हैं। किसी भण्डार घर में रहे तो वहाँ पर किसी वस्तु की कमी नहीं पड़ती।

❖ अगर उल्लू किसी घर में पानी रखने के स्थान पर जा बैठे तो घर का स्वामी जलाशय का निर्माण कराता है।

❖ अगर उल्लू कोर्ट में जाते हुए किसी व्यक्ति के सामने से उड़ता हुआ चला जाए तो उसकी विजय होती है।

❖ अगर उल्लू किसी के रसोई में प्रवेश कर जाए तो उस घर में अन्न की कमी नहीं रहती।

❖ अगर उल्लू रात के समय किसी कुँआरे सोते हुए युवक के बिस्तर पर आ बैठे तो उसका विवाह शीघ्र हो जाता है और अगर विवाहित हो तो परिवार में वृद्धि होती है।

❖ अगर उल्लू किसी गर्भवती स्त्री के शरीर का स्पर्श करता हुआ चला जाए तो वह पुत्र को जन्म देती है। अगर उल्लू उसके पास ही बैठ जाए तो कन्या का जन्म होता है।

❖ अगर उल्लू रात के समय किसी रोगी के बिस्तर पर आ बैठे तो वह रोगमुक्त हो जाता है।

❖ अगर उल्लू किसी अविवाहित के शरीर के किसी अंग का स्पर्श करता हुआ चला जाय तो उसका विवाह शीघ्र हो जाता है।

❖ अगर उल्लू किसी मकान में आकर मर जाए तो जिस की दृष्टि उसकी देह पर पहले पड़ेगी वह भी मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा अथवा उसे कोई भयंकर रोग होगा।

❖ अगर प्रातः में उल्लू किसी मनुष्य के शरीर का स्पर्श करे तो उसे अनेक प्रकार के लाभ होते हैं।

❖ अगर किसी मकान की छत पर उल्लू के पंख बिखरे दिखाई दें तो वह घर बर्बाद हो जाता है और वहाँ बेवजह कलह उत्पन्न हो जाता है।

❖ अगर किसी दिन दोपहर के समय कोई उड़ता हुआ उल्लू किसी पुरुष के सिर पर आ गिरे तो उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है और स्त्री के सिर पर गिरे तो उसका पति मर जाता है।

❖ अगर दिन के समय उल्लू किसी मकान की छत पर बैठकर बोलना आरम्भ कर दे तथा उड़ाने पर भी वापस वहीं आकर बैठ जाया करे तो उस मकान में रहने वाले व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

❖ अगर किसी नौकरी करने वाले मनुष्य के सिर पर उल्लू आ बैठे तो नौकरी छूट जाती है। अगर किसी मुकदमे के बारे में न्यायालय जाने वाले व्यक्ति के सिर पर उल्लू आकर बैठ जाए तो उसकी हार होती है।

❖ अगर किसी अभियुक्त के सिर पर उल्लू बैठे तो उसे सजा होती है।

तन्त्र ग्रन्थों में उल्लू द्वारा सिद्ध होने वाले अनेक प्रकार के तान्त्रिक प्रयोग पाए जाते हैं।

उल्लू के तान्त्रिक प्रयोग

१. रविवार के दिन उल्लू को पकड़कर बन्द कर लें। फिर उसे केवल देसी शराब पिलाएँ तथा उसे सोने न दें। पिंजरे में बन्द उल्लू को खाने के लिए कुछ नहीं देना चाहिए, पीने के लिए देसी शराब ही देनी चाहिए। उल्लू को जगाए रखना चाहिए। जगाने वाले व्यक्ति को उल्लू के सामने बैठा रहना चाहिए। इस प्रकार जागते रहने के बाद चौथे दिन उल्लू स्वयं मनुष्य की बोली में बोलने लगता है। इसके बाद उससे अनेक प्रकार के काम लिए जा सकते हैं। लेकिन तन्त्र में यह प्रयोग वर्जित माना गया है।

२. उल्लू के लगभग सात पंखों को अपने हाथ में लेकर **'ॐ नमो कालरात्रि'** इत्यादि मन्त्रों द्वारा ३१ बार अभिमन्त्रित करके जिस घर में डाल दिया जाए वह घर सूना हो जाता है।

३. उल्लू के पंख को अभिमन्त्रित करके अपने हाथ में बाँधने तथा **'ॐ नमो कालरात्रि'** मन्त्र का जप करने से भूत-प्रेतादि का दोष

दूर होता है।

४. उल्लू के पंख तथा पूँछ को **'ॐ नमो कालरात्रि'** मन्त्र द्वारा ३१ बार अभिमन्त्रित करके अपनी भुजा में बाँधने से दुष्ट ग्रहों का प्रभाव शनैः-शनैः शान्त हो जाता है।

उल्लू द्वारा गड़े धन का पता लगाना

अगर आपको किसी स्थान पर गड़े हुए धन के बारे में पता न चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रयोग करने से उस स्थान का पता लग सकता है।

कार्तिक की अमावस्या को मध्य रात्रि के बाद एक उल्लू पकड़ लाएँ। फिर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसके शरीर पर २१७ बार जल के छींटे मारें। हर बार एक मन्त्र का उच्चारण करने के बाद जल का एक छींटा मारना चाहिए। पानी का छींटा मारने के लिए कुशा का प्रयोग करें। मन्त्र निम्न हैं—

'ॐ नमः शिवाय, नमः विश्वरूपाय, नमः कामाक्षा देव्यै, नमः लक्ष्मी वाहनाय, नमः पक्षिराज उलूकराय, ॐ क्रां क्रीं क्रौं श्रां श्रीं श्रौं हीं हीं हौं हुँ फट् स्वाहा।'

उक्त मन्त्र द्वारा उल्लू को अभिमन्त्रित करने के पश्चात उसके डैने से छह पंख नोंचकर उन्हें रख लें तथा उल्लू को उड़ा दें। शुक्ल पक्ष की एकादशी को दिन में उपवास रखकर रात के समय श्मशान समीप मृगछाला बिछाकर उसके ऊपर पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाएँ तथा उल्लू के छः पंखों को अपने सामने रखकर, पूर्वोक्त मन्त्र का २१७ बार जप करें। इसके बाद नदी के जल में स्नान करके तथा पंखों को साथ लेकर वापस आ जाएँ।

इसके बाद चार मास तक प्रत्येक एकादशी को उपवास रखते हुए पूर्वोक्त क्रिया करें। जब पाँच एकादशी के उपवास हो जाएँ, तब अमावस्या की रात के समय श्मशान जाकर लौटकर उन पंखों को अपनी शय्या पर तकिए के नीचे रखकर सो जाएँ। उस दिन स्वप्न में किसी दिव्यात्मा के आपको दर्शन होंगे। और वे जिस स्थान पर धन गड़ा हुआ होगा उसके विषय में विस्तारपूर्वक सब कुछ बतला देंगे।

उल्लू का ताबीज बनाना

शुक्ल पक्ष की द्वितीया से आरम्भ करके पूर्णिमा तक नित्यप्रातः स्नानादि से निवृत होकर निम्नलिखित मन्त्र का दस हजार संख्या में जप करते रहें। फिर अमावस्या की रात के समय एक पात्र में जल भरकर तथा बीट और पंख के हाथ में लेकर श्मशान में जाएँ और वहाँ किसी धधकती हुई चिता के सामने कुश के आसन पर पूर्वाभिमुख, सिद्धासन लगाकर मौन बैठ जाएँ तथा जल के पात्र एवं उल्लू के पंख और बीट वाली भस्म को अपने सामने रखकर निम्नलिखित मन्त्र का जप करना शुरू करें। हर बार मन्त्र पढ़ने के बाद जल लेकर बीट तथा पंख पर थोड़ा सा छिड़क देना चाहिए।

'ॐ नमो लक्ष्मी वाहनाय, पक्षिराजाय, उलूकाय अं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं त्रं त्रां क्रीं क्रौं स्वाहा।'

उक्त मन्त्र को दो लाख जपना चाहिए। जप पूरा हो जाने पर पंख तथा बीट को चिता की गरमी से सुखा लें, फिर उन्हें लेकर लौट आएँ तथा ताबीज में बीट एवं पंख को भरकर मुँह बन्द कर दें तथा उसमें पीले रंग का डोरा भी बाँध दें।

जब भी स्त्री के मन का भेद जानना हो, वह जब सो रही हो, उस समय उस ताबीज को उसकी छाती पर रख दें। ताबीज के प्रभाव से वह सोती हुई ही बड़बड़ा कर अपने मन का भेद खोलना शुरू कर देगी।

उल्लू के द्वारा विद्वेषण

उल्लू के रोम, पंख, जीभ, चोंच, टाँगें, आँखें तथा सम्पूर्ण शरीर की हड्डियों को अलग-अलग करके रख लें।

उल्लू के अंग-प्रत्यंग को सावधानी से रख लें। इसके बाद मंगलवार के दिन वाली अमावस्या को रात के समय श्मशान में जाकर किसी धधकती हुई चिता में उन सब अंगों को जलाकर भस्म कर लें तथा उस भस्म को किसी पात्र में भर लें फिर चिता के समीप ही, कुश के आसन पर सिद्धासन लगाकर, पूर्वाभिमुख हो बैठ जाएँ तथा भस्म को अपने सामने रखकर निम्न मन्त्र का एक लाख जप करते हुए प्रत्येक बार मन्त्रोच्चारण के बाद भस्म पर

फूँक मारते हुए भस्म को अभिमन्त्रित करें।

'ॐ नमः शिवाय। नमः कालिका देव्यै। नमो उलूकराजाय। नमो लक्ष्मी वाहनाय। क्रां क्रीं क्रूं क्रें क्रौं क्रं फट् स्वाहा।'

जप पूरा हो जाने पर, भस्म को लेकर लौट आएँ। फिर दूसरे ही दिन अवसर पाकर, जिन दो व्यक्तियों में परस्पर विद्वेषण कराना हो, उन दोनों के घरों के सहन में अभिमन्त्रित भस्म फेंक दें। पन्द्रह दिन के भीतर ही उनका विद्वेषण हो जाएगा।

उल्लू द्वारा भाग्य वृद्धि

अमावस्या की रात के समय किसी उल्लू के जितनी बीट, पंख एवं अण्डे के छिलके मिलें, उन सबको कपड़े में बाँधकर घर ले आएँ। फिर पूर्णिमा को रात के समय किसी नदी तट पर जाकर, पोटली को दाएँ हाथ में लेकर स्नान करें। यह ध्यान रहे कि स्नान करते समय पोटली को जल की सतह से ऊपर उठाए रखें, ताकि भींग न जाए। इसके बाद नदी तट पर कम्बल का आसन बिछाकर, उस पर पूर्वाभिमुख हो, सिद्धासन लगाकर बैठ जाएँ तथा पोटली को अपने सामने रख लें। अब हवन-कुण्ड बनाकर हवन करें। हवन-सामग्री में काले तिल, जौ, चावल, सफेद चन्दन का चूरा, लाल चन्दन का चूरा, गूगल, छार छबीला, कपूर कचरी, खांड, लौंग, गाय का घी, सुपारी, पान के पत्ते, आम, बेल, अमरूद, गूलर, शरीफा की समिधा तथा देशी कपूर लें। इनके अतिरिक्त एक कलश, सुवा तथा एक चौमुखा दीपक भी साथ ले आना चाहिए। सर्वप्रथम कलश में पानी भरकर सामने रखें। फिर समिधा को चुनकर हवन कुण्ड तैयार करें तथा हवन-सामग्री को एकत्र कर लें। फिर पान के पत्तों को पानी के कलश में डाल दें और चौमुखा दीपक जलाएँ। इसके बाद निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए हवन आरम्भ करें।

हर बार हवन सामग्री की चुटकी डालने के बाद एक चम्मच गाय के घी की आहुति भी देते रहना चाहिए। हर बार आहुति डालने तथा शुद्ध घी चढ़ाने के बाद जल के कलश में पड़े हुए पान के पत्तों की सहायता से दो-दो बूँद जल पूर्व दिशा की ओर छिड़कते जाना चाहिए।

मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ नमो पक्षिराजाय, काकारि, लक्ष्मी वाहनाय, उलूकराजाय, विघ्न-विनाशनाय, दुर्भाग्य नाशनाय, क्रां क्रीं क्रू क्रें क्रों क्रं फट् मम सौभाग्य वर्द्धन कुरु कुरु कुरु स्वाहा।'

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए २१६ आहुतियाँ देनी चाहिए। अन्त में एक पूर्णाहुती देना ना भूलें। जब हवन समाप्त हो जाए, तब पूर्ण आहुति के रूप में पोटली में बँधे उल्लू की बीट, पंख, अण्डों के छिलके आदि को एक साथ मन्त्रोच्चारण करते हुए हवन कुण्ड में डाल देना चाहिए। जब हवन कुण्ड में डाली गई सब सामग्री जल जाए और अग्नि शान्त हो जाए तब कुण्ड की भस्म को एकत्र कर पोटली बाँध लेनी चाहिए।

इसके बाद पोटली को हाथ में लेकर, नदी को प्रणाम करें, तदुपरान्त लौट आएँ तथा उस भस्म में से आधी भस्म को निम्न मन्त्र पढ़ते हुए घर के आँगन में छिड़क दें। **'ॐ नमो उलूक राजाय, लक्ष्मी वाहनाय, दुर्भाग्य नाशनाय, मम सौभाग्य वृद्धि कुरु कुरु कुरु श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा।'**

पूर्णिमा के बाद जो भी गुरुवार आए, उस दिन उल्लू को पकड़ लाएँ तथा उसे पिंजड़े में बन्द करके रख दें। सात दिन तक उसे खाने के लिए हड्डी का चूर्ण, चावल तथा कौए का मांस दें। फिर जब अमावस्या आए तब उस दिन आधी रात के समय उल्लू के पिंजड़े को लेकर किसी निर्जन स्थान में बहने वाली नदी के तट पर जा पहुँचें। वहाँ सर्वप्रथम पिंजड़े को नदी के जल में डुबकी लगवाएँ, ताकि उसमें कैद उल्लू का भी स्नान हो जाए। फिर साधना कर सिद्ध कर लें। इसके बाद उसके पंख उखाड़कर उसकी भस्मी बना लें। उस भस्म को सदैव अपने पास रखें। सब प्रकार से भाग्य उदय होगा।

उल्लू द्वारा वशीकरण

'उल्लू कल्प' के अनुसार माघ शुक्ला चतुर्दशी के दिन उल्लू को पकड़ कर पिंजड़े में बन्द कर लें। फिर—

'ॐ नमो भगवते रुद्राय आगच्छ आगच्छ प्रविशय प्रविशय धुन धुन आकर्षय आकर्षय मण्डलं प्रविशय प्रविशय स्वाहा।'

इस मन्त्र को सवा लाख जप कर सिद्ध कर लें। फिर उल्लू का पूजन कर, पूर्वोक्त मन्त्र ५१ बार पढ़कर उसके ललाट तक पंखों का स्पर्श करें। फिर—

'ॐ कुरु कुरु महेश्वरीं अंगवर्द्धिनी प्रियेश्वरी नमः।'

इस मन्त्र का ३१ बार जप करें। नित्यप्रति चावलों को उल्लू के शरीर पर मारते हुए जप करना चाहिए।

मनुष्य की हड्डी का चूर्ण तथा मृत का ताम्बूल इनका चूर्ण बनाकर चावल के चूर्ण में या फिर मांस में मिलाकर उल्लू को खिलाना चाहिए। फिर उसे मिट्टी शकोरे में पानी पिलाकर मन्त्र का जप करना चाहिए। ४१ दिन तक इस क्रिया को करते हुए उसकी पूँछ से एक पंख उखाड़ लेना चाहिए। फिर उस पंख को **'ॐ उलूकायै नमः'** इस मन्त्र द्वारा ११०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने पास रख लेना चाहिए।

उक्त अभिमन्त्रित पंख को थोड़ा-सा भी भाग जिस किसी व्यक्ति को खिला दिया जाएगा, वह तुरन्त वशीभूत हो जाएगा। दूसरा प्रयोग इस प्रकार है—किसी भी मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन पवित्र होकर **'ॐ नमो भगवते रुद्राय आगच्छ आगच्छ प्रविशय प्रविशय धुन धुन आकर्षय आकर्षय मण्डलं प्रविशय प्रविशय स्वाहा।'** उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए उल्लू को पकड़ कर किसी प्रकार उसे बन्धन में कर लें, ताकि वह उड़ न जाए। फिर उल्लू को किसी पात्र में बैठाकर **'ॐ उलूकायै नमः'** इस मन्त्र का ११०८ बार जप करके ग्यारह बार प्रदक्षिणा करें। तदुपरान्त उल्लू की पूँछ को पकड़कर उसे ऊपर की ओर उठा लें ओर उसकी पूँछ से एक पंख निकाल कर, पंख का पूर्वोक्त विधि से पूजन करें।

उक्त पूजित तथा अभिमन्त्रित पंख का एक भाग जिस व्यक्ति को खिला दिया जाता है, वह तुरन्त वशीभूत हो जाता है।

अदृश्य होने का प्रयोग

माघ शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को उल्लू पकड़ कर, उसे किसी पात्र में बैठाकर पूजन करें। जब भी उल्लू का अश्रुपात हो उन आँसुओं की बूँदों को किसी पात्र में भर लें। फिर उसमें शुद्ध गोरोचन तथा काली गाय का

घी मिलाकर अंजन तैयार कर लें। उक्त अंजन को आँखों में लगाने वाला व्यक्ति अदृश्य होता है। इसके बाद जब आँखों को गोमूत्र से धो लिया जाता है, तब वह पूर्व स्थिति को प्राप्त कर लेता है।

वशीकरण प्रयोग

किसी भी वर्ष माघ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को उल्लू पकड़कर ले आएँ और उसे किसी पिंजरे में बिठाकर निम्नलिखित मन्त्र का ११०८ बार जप करें।

'ॐ नमो रुद्राय ह्रीं हूं हें फट् नमः'

जप पूरा हो जाने पर पात्र में रखे हुए उल्लू को मार दें तथा उसके शरीर को अलग हटाकर पात्र में जो रक्त हो उसमें अपनी अनामिका अंगुली के रक्त को मिलाकर उस मिश्रण को किसी पात्र में भर लें। आवश्यकता के समय उक्त मिश्रण का मस्तक पर तिलक लगाकर, जिस किसी के सम्मुख पहुँचा जाएगा वह वशीभूत हो जाएगा।

शत्रु-गृह शून्य कारक

उल्लू के सिर को सुखाकर, चूर्ण करके रख लें। इस चूर्ण को शत्रु के घर में डालने पर, उसका घर सूना हो जाता है।

शत्रु-नाशक प्रयोग

उल्लू का सिर, हरताल और मैनशिल इन तीनों को लेकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण की एक चुटकी शत्रु के सिर पर डाल देने से वह शनैः शनैः समाप्त हो जाता है।

निधि दीपिका

उल्लू का कपाल, मनुष्य का रक्त, श्रोतांजन और अन्तर्धूम इन सबको पीस लें। फिर उसको अपनी आँखों में लगाएँ तो धरती के भीतर गढ़ी हुई सारी निधियां दिखाई देने लगती हैं।

विद्वेषण एवं उच्चाटन

उल्लू की जीभ को धतूरे के रस में पीस कर जिस किसी को खिला दिया जाए, वह उच्चाटन को प्राप्त होता है।

अदृश्य गुटिका

उल्लू की जीभ तथा वरांग का चूर्ण मालती के पुष्प के चूर्ण में गोरोचन के साथ मिलाकर गुटिका तैयार करें। उस गुटिका को ताबीज में भरकर मुँह में रखने से अदृश्यीकरण हो जाता है।

उल्लू की नाभि, हृदय, कलेजा और फेफड़ा इन चारों में गोरोचन मिलाकर गुटिका तैयार करें, फिर उसे निम्नलिखित मन्त्र द्वारा ११०८ बार अभिमन्त्रित करें।

'ॐ नमो भगवते रुद्राय'।

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र का सवा लाख जप करें—

'ॐ नमो कालरात्रि त्रिशूल हस्त धारिणी महिष वाहिनी नर कपाल माल शिरे आगच्छ आगच्छ भगवती अन्तरिक्ष कारिणीम् मम सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा'।

इस मन्त्र का सवा लाख बार जप करके पूर्वोक्त गुटिका को आँखों में आँजने वाला व्यक्ति अनेक रूपधारी विद्याधरों में को भी देख सकने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।

पाताल-दर्शन

रविवार के दिन उल्लू की जीभ को काली गाय के शुद्ध घी में पकाकर तथा ताबीज में भरकर, उस को अपने कंठ में बाँधने से पाताल-दर्शन करने की सामर्थ्य प्राप्त होती है।

स्तम्भन प्रयोग

अगर उक्त जिह्वा को ताबीज में भरकर रविवार की रात्रि में ताबीज को अपनी कमर में बाँधकर रमण करें तो सफल स्तम्भन होता है।

अदृश्यीकरण

उल्लू के नेत्रों को सुखाकर चूर्ण करें, फिर उस चूर्ण को अपनी आँखों में आंजें तो व्यक्ति अदृश्य होता है।

पूर्वजन्म-स्मृति

उल्लू के नेत्र को श्रोतांजन में मिलाकर पुष्य नक्षत्र वाले दिन नीचे लिखे मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके आँखों में आंजें तो पूर्वजन्म की स्मृति आती है।

'ॐ नमो भगवते रुद्राय'।

वशीकरण

उल्लू के दोनों कान तथा एरण्ड को मिलाकर काली गाय के दूध में पीसकर चूर्ण बनाएँ। इस चूर्ण को जिसे भी खिलाया जाएगा वह वशीभूत हो जाएगा।

इसके लिए चूर्ण को पहले अभिमन्त्रित कर लेना आवश्यक है।

दिव्य-दृष्टि अंजन

उल्लू की आँख, गुदा, केशर और देशी कपूर इन सब को लेकर शुद्ध मधु में पीसकर आँखों में आंजने से दिव्यदृष्टि मिलती है। इसके लिए निम्न मन्त्र का पहले २१०८ बार जप करना चाहिए। बाद में प्रयोग के समय ५१ बार जप करना चाहिए।

'ॐ नमो भगवते रुद्राय। ॐ लमेह हुलु हुलु बिहुलं बिहुलं हरं हरं यक्ष रक्ष पूजिते यं कुमार्यो तु लोचने स्वाहा।'

शतयोजन-गमन

केवल रविवार के दिन उल्लू की चोंच तथा नख को घिसकर अपने शरीर पर लेप करने वाला व्यक्ति दूर तक पैदल चलने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। परन्तु लेप करने से पूर्व निम्न मन्त्र जप करते रहना आवश्यक है।

मन्त्र—'ॐ नमो कालरात्रि'।

नजर उतारने के लिए

प्रयोग-१

शुक्रवार के दिन किसी बरगद के वृक्ष पर निवास करने वाले उल्लू के तीन पंख लेकर आएँ। इसके पश्चात् तीनों पंखों को धोकर सुखा लें। इसके पश्चात् तीनों पंखों पर सफेद रंग का कच्चा रेशम बाँध लें। इन पंखों को सम्बन्धित व्यक्ति अथवा बच्चे के सिरहाने रात्रि भर के लिए रख दें।

प्रात:काल पंखों को गुग्गल की धूनी दें तथा एक पंख को काले रंग के रेशम से बाँधकर बच्चे के वस्त्रों में रख दें। दूसरे पंख को लाल रंग के रेशम से बाँधकर घर के आँगन में गाड़ दें तथा तीसरे पंख को पीले रेशम से बाँधकर घर के बाहर मुख्य द्वार में गाड़ दें। इस प्रकार करने से नजर उतर जाती है।

प्रयोग-२

शनिवार की रात्रि को किसी आम के वृक्ष पर रहने वाले उल्लू के सात पंख लेकर आएँ। पंखों को लाल वस्त्र में लपेटकर सम्बन्धित व्यक्ति अथवा बच्चे के सिरहाने रख दें। प्रात:काल पंखों को धोकर छाया में सुखा लें। इसके पश्चात् सात हाथ लम्बे सफेद सूत को सात भागों में विभक्त करें।

इसके पश्चात् सूत को सात रंगों में रंग लें किन्तु काले और सफेद रंग का प्रयोग न करें। फिर सातों पंखों को एक साथ सातों रंग के धागे से बाँध लें तथा बच्चे के ऊपर से तीन बार उतारकर चारपाई के नीचे रख दें।

रात्रि के समय पंखों को पुन: बच्चे के ऊपर से सात बार उतारकर उसी वृक्ष के नीचे फेंक आएँ। इस प्रकार करने से बच्चे की नजर उतर जाती है तथा बच्चा पूर्णत: स्वस्थ हो जाता है।

प्रयोग-३

रविवार के दिन जंगल से किसी बरगद के वृक्ष पर निवास करनेवाले उल्लू के पाँच पंख ले आएँ।

पंखों को रात्रि के समय लाल वस्त्र में रखकर बच्चे के बिछाने के वस्त्रों

में रख दें। प्रातःकाल एक पंख को निकालकर सात बार बच्चे के ऊपर से उतारकर चारपाई के नीचे रख दें। सायंकाल के समय दूसरे पंख को निकालकर तथा तीन बार बच्चे के ऊपर से उतारकर पहले पंख के साथ रख दें।

इसके पश्चात् एक पंख को रात्रि के समय बच्चे के ऊपर से सात बार उतारकर दोनों पंखों के साथ रख दें। चौथे पंख को रात्रि १२ बजे बच्चे के ऊपर से उतारकर तीनों पंखों के साथ चारपाई के नीचे रख दें। तथा प्रातःकाल पाँचवें पंख को तीन बार बच्चे के ऊपर से उतारकर चारपाई के नीचे रख दें। इसके पश्चात् पाँचों पंखों को सायंकाल के समय चूल्हे में जला दें तो बच्चे की नजर उतर जाती है।

परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए

प्रयोग-१

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो, उस दिन बरगद के वृक्ष पर निवास करने वाले उल्लू के पाँच पंख लेकर आएँ।

पंखों को पाँच रंग के रेशम से बाँधकर अपने शयन कक्ष में बिछाने के वस्त्रों में रख दें। प्रातःकाल शीघ्र उठकर स्नान आदि करें तथा इसके पश्चात् पंखों को लोबान की धूनी दें तथा धागों को निकालकर अपने बाएँ हाथ में बाँध लें। इसके पश्चात् पंखों में पुनः पाँच रंग का रेशम बाँध दें तथा पंखों को पुनः अपने सिरहाने रखकर सोएँ। प्रातःकाल शीघ्र उठकर तथा नित्यकर्मों से निवृत्त होकर पंखों को पुनः लोबान की धूनी दें तथा पहले रेशम को खोलकर अपने बाएँ हाथ में बाँध लें तथा पंखों पर पुनः पाँच रंग का रेशम बाँधकर पंखों को अपने सिरहाने रखकर सो जाएँ।

इस प्रकार पाँच दिन तक यही प्रक्रिया दोहराते रहें। इसके पश्चात् परीक्षा के दिन प्रातःकाल शीघ्र उठकर स्नान आदि करें तथा धागों को लोबान की धूनी देकर अपनी बाईं भुजा में बाँध लें तथा परीक्षा में सफल होने के लिए प्रार्थना करें तो परीक्षा में सफलता अवश्य मिलती है।

प्रयोग-२

परीक्षा से ग्यारह दिन पूर्व किसी शुभ तिथि में उल्लू के सात पंख

लेकर आएँ तथा पंखों को एक हाथ लम्बे सफेद सूत में बाँध दें।

पंखों को अपने शयन कक्ष में अपने सिरहाने रख दें। इस बात का ध्यान रखें कि कोई अन्य पंखों को स्पर्श न करें। रात्रि के समय पंखों को लोबान तथा गुग्गल की धूनी दें तथा सिन्दूर से पूजन करें तथा पंखों को पुनः सिरहाने रखकर सो जाएँ।

दूसरे दिन पुनः पंखों को लोबान तथा गुग्गल की धूनी दें तथा सिन्दूर से पूजन करें तथा इसके पश्चात् पंखों को सिरहाने रखकर सो जाएँ।

एक सप्ताह तक पंखों को इसी प्रकार लोबान तथा गुग्गल की धूनी देते रहें तथा पुनः सिरहाने रख दें। इसके पश्चात् रात्रि के समय पाँच पंखों को ले जाकर गुप्त रीति से परीक्षा कक्ष से बाहर भूमि में दबा दें। यह कार्य पूर्णतः गुप्त रीति से करें। परीक्षा से एक दिन पूर्व पंखों को पुनः रात्रि के समय लोबान तथा गुग्गल की धूनी देकर सिन्दूर से पूजा करें।

परीक्षा के दिन प्रातः उठकर स्नान करें तथा श्वेत वस्त्र पहनें तथा एक पंख को अपनी दाईं जेब में रखकर परीक्षा के लिए जाएँ तो सफलता अवश्य मिलती है।

ज्वर नाश के लिए

शनिवार की रात्रि को किसी उल्लू के तीन पंख प्राप्त करें तथा पंखों को भली प्रकार धोकर छाया में सुखा लें।

इसके पश्चात् पंखों को गुग्गल की धूनी दें तथा पंखों को श्वेत वस्त्र में लपेटकर रख दें। प्रातःकाल ताँबे के पात्र में स्वच्छ पानी लें तथा उसमें पंखों को डाल दें। पानी इतना हो कि पंख पूर्णतः डूब जाएँ। पंखों को रात भर ओस के नीचे खुला छोड़ दें तथा प्रातःकाल पानी को धीमी आँच पर उबालें। पानी को तब तक उबालते रहें जब तक वह आधा न रह जाए। इसके पश्चात् पानी को लोबान की धूनी दें।

प्रयोग के समय रोगी को यह पानी पिलाएँ तथा रोगी के शरीर पर पानी के छींटे दें। इस प्रयोग से ज्वर पूर्णतः समाप्त हो जाता है तथा रोगी को आराम मिलता है।

रोग दूर करने के लिए

शुक्रवार के दिन किसी उल्लू के चार पंख लेकर आएँ तथा पंखों को धोकर सुखा लें।

इन पंखों को रोगी व्यक्ति के सिरहाने रख दें। प्रात:काल इन पंखों को गुग्गल की धूनी दें तथा लाल रंग के सूत से बाँधकर रोगी के सिरहाने रख दें। रात्रि के समय पंखों को पुन: गुग्गल की धूनी दें तथा पंखों को जलाकर चूर्ण बना लें इसके पश्चात् पानी अथवा दूध में मिलाकर यह चूर्ण रोगी को दें तो व्यक्ति का रोग दूर हो जाता है।

उल्लू के पंखों से झाड़ा

रविवार के दिन उल्लू के पंख लेकर आएँ तथा पंखों को धोकर सुखा लें। इसके पश्चात् पंखों को लाल कलावे में बाँधकर रोगी के सिरहाने रख दें। प्रात:काल पंखों से इक्कीस बार रोगी को झाड़ें तथा कलावे को रोगी के बाएँ हाथ में बाँध दें तो सभी प्रकार के रोगियों को लाभ मिलता है।

पुरुष वशीकरण के लिए

रविवार के दिन किसी उल्लू के तीन पंख प्राप्त करें तथा पंखों को सात रंग के रेशम में बाँध दें।

इसके पश्चात् पंखों को गुग्गल की धूनी दें तथा सिन्दूर से पूजन करें। तीन दिन तक इसी प्रकार पंखों को गुग्गल की धूनी दें तथा सिन्दूर से पूजन करें। ऐसा करते हुए तीन दिन के पश्चात् पंखों से रेशम को खोल लें तथा इच्छित व्यक्ति के हाथ में बाँध दें तो व्यक्ति तुरन्त वश में हो जाता है।

अधिकारी वशीकरण के लिए

शुक्रवार के दिन जब पंचमी तिथि हो तो किसी उल्लू के पाँच पंख प्राप्त करें। इसके पश्चात् पंखों को कपूर की धूनी दें। रात्रि के समय पंखों को जलाकर चूर्ण कर लें।

तत्पश्चात् तिल के तेल में इस चूर्ण को मिलाकर तिलक करके

इच्छित व्यक्ति के पास जाएँ तो व्यक्ति तुरन्त वश में हो जाता है तथा प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है।

किसी भी व्यक्ति का वशीकरण

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो तो किसी उल्लू के तीन पंख प्राप्त करें तथा पंखों को धोकर छाया में सुखा लें। पंखों को कपूर तथा गुग्गल की धूनी दें तथा पंखों को जलाकर चूर्ण बना लें। रात्रि में मिट्टी के दीपक में तिल का तेल डालकर दीपक जलाएँ तथा उसकी कालिख को किसी पात्र पर उतार लें।

प्रयोग के समय दीपक की कालिख तथा पंखों के चूर्ण को नीलगिरि के तेल में मिलाकर आँखों में लगाएँ तो तुरन्त ही प्रत्येक व्यक्ति वश में हो जाता है।

मारण प्रयोग

शनिवार के दिन किसी उल्लू के नौ पंख प्राप्त करें तथा कीकर के नौ काँटों के साथ बाँधकर काले रंग के रेशम से माला बना लें। इसके पश्चात् श्मशान की मिट्टी किसी एकान्त कक्ष में बिछाकर बैठ जाएँ। इसके बाद ब्रह्माडंडी, बच तथा कूट को कपूर की धूनी दें। पंखों की माला को सिन्दूर से पूजकर कपूर की धूनी दें तथा यह समस्त सामग्री एक काले रंग के वस्त्र में शत्रु के चित्र पर उसका नाम लिखकर उसी के साथ बाँधकर रख दें। शनिवार की रात्रि को जब कृतिका नक्षत्र हो तब यह समस्त सामग्री ले जाकर श्मशान भूमि में दो हाथ की भूमि खोदकर गाड़ दें तथा भूमि को समतल कर दें।

यह समस्त कार्य पूर्ण गुप्त रीति से करें।

शत्रु की तत्काल मृत्यु

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की रात्रि को किसी उल्लू के सात पंख लेकर आएँ। उल्लू के पंखों को काले वस्त्र में बाँधकर रख दें। दो दिन के

बाद पंखों को कपूर की धूनी देकर पुनः वस्त्र में बाँधकर रख दें। शनिवार की रात्रि को चिता की अग्नि लाकर पंखों को जलाकर चूर्ण बना लें। इसके पश्चात् चूर्ण को सिन्दूर में मिलाकर किसी पात्र में रख दें।

रविवार के दिन किसी ऐसे गधे का पेशाब लाएँ जिसका एक कान कटा हुआ हो, इसके पश्चात् गधे के पेशाब में पंखों का चूर्ण मिलाकर गोली बना लें। दो गोली बनाएँ तथा गोली को सिन्दूर से लपेटकर चाँदी के वर्क में रख लें। अमावस्या के दिन एक गोली को ले जाकर श्मशान भूमि में एक हाथ लम्बा गड्ढा खोदकर गाड़ दें। दूसरी गोली को कपूर तथा गुग्गल की धूनी देकर काले वस्त्र में बाँध लें।

इसके पश्चात् प्रयोग के समय शनिवार की रात्रि को १२ बजे गोली को कपड़े से निकालकर शत्रु के घर के बाहर मुख्य दरवाजे पर गाड़ दें। सम्पूर्ण कार्य गुप्त रीति से करें। जिस दिन भी शत्रु का पैर उस स्थान पर पड़ेगा शत्रु की तत्काल मृत्यु हो जाएगी।

शत्रु विनाश के लिए

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो तो किसी बरगद के वृक्ष से उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें तथा पिंजड़े में एक श्वेत वस्त्र बिछा दें। उल्लू को किसी एकान्त कक्ष में बिल्ली इत्यादि से बचाकर रखें तथा ऐसे स्थान पर पिंजड़े को रखें जहाँ पूर्णतः अन्धेरा हो।

प्रातःकाल उल्लू को दूध में चने भिगोकर खिलाएँ तथा पानी के स्थान पर दही दें। दोपहर के समय उल्लू को दही तथा चीनी एवं रात्रि के समय कुछ न दें। तब तीन दिन उल्लू को समय पर इसी प्रकार भोजन देते रहें, चौथे दिन उल्लू को उसी वृक्ष के नीचे ले जाकर मार दें तथा उसके पंख तथा अस्थियों को वृक्ष की जड़ में दबा दें। उल्लू के रक्त को मिट्टी के पात्र में भरकर घर ले आएँ किन्तु इस बात का स्मरण रखें कि रक्त भूमि पर न गिरे।

इसके पश्चात् पिंजड़े में बिछे वस्त्र को उल्लू के रक्त में भिगोकर

छाया में सुखा लें। वस्त्र सूखने के पश्चात् वस्त्र को कपूर की धूनी दें तथा वस्त्र को किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें।

शनिवार की रात्रि को गेहूं के आटे से एक पुतला बनाएँ तथा पुतले को भी छाया में सुखा लें। सूखने तक प्रतिदिन पुतले को गन्धक तथा कपूर की धूनी देते रहें तथा पुतले को छुपाकर रखें।

अमावस्या की रात्रि को तीन आँखड़े के पुष्प, तीन चमेली के पुष्प, मिष्ठान तथा मिट्टी का दीपक लें। इसके पश्चात् उल्लू के रक्त में भिगोया हुआ वस्त्र पुतले को ओढ़ा दें तथा सिन्दूर से पूजन करें। आधी रात्रि के समय पुतले को शत्रु के खेत अथवा गुप्त रूप से मुख्य द्वार पर गाड़ दें तथा शत्रु की मृत्यु एक सप्ताह के भीतर हो जाती है।

यदि शत्रु के परिवार में किसी की मृत्यु चाहें तो सफेद के स्थान पर काले वस्त्र का प्रयोग करें तथा पुतले के गले में एक कील गाड़ दें। पुतले को एक कोरी हांडी में रखकर तथा रक्त में भीगा हुआ वस्त्र लपेटकर शत्रु के आंगन में किसी प्रकार गाड़ दें। इस प्रयोग को करने से शत्रु के परिवार में किसी की मृत्यु तीन दिन के भीतर हो जाती है।

चेतावनी—किसी भी प्रकार के मारण प्रयोग, विनाश प्रयोग, मृत्यु प्रयोग की अनुमति तन्त्र नहीं देता, प्रयोग कर्ता स्वयं समझकर कदम बढ़ाएँ। किसी भी प्रकार की स्वयं की हानि भी सम्भव है। अतः इसके लिए लेखक, प्रकाशक या मुद्रक उत्तरदायी नहीं है।

शत्रु के कार्य बिगाड़ने के लिए

शुक्रवार के दिन जब पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो तो जंगल जाकर बरगद के वृक्ष पर निवास करने वाले नर उल्लू को पकड़कर लाएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें तथा उसे किसी अन्धेरे स्थान पर रख दें।

प्रातःकाल उल्लू को बाजरे की रोटी तथा दही दें तथा दोपहर को उसे कुछ न दें। रात्रि के समय उल्लू को दही तथा शक्कर का मिश्रण दें। दूसरे दिन उल्लू को सायंकाल तक कुछ न दें तथा रात्रि के समय उसे दही तथा चावल खाने को दें तथा पानी में भी शक्कर घोल दें।

रात्रि के समय उल्लू को मारकर उसके रक्त को पात्र में भर लें तथा

उल्लू को काले वस्त्र में बाँधकर उसी वृक्ष के नीचे दबा दें। इसके पश्चात् श्मशान की मिट्टी लाकर उल्लू के रक्त में भिगोकर तीन गोले बना लें। गोलों को छाया में सुखा लें तथा उन पर सिन्दूर का लेप करें और तब गोलों को गुग्गल की धूनी देकर लाल वस्त्र में लपेटकर रख दें।

तीन दिन तक गोलों को अपने कक्ष में रखें तथा इसके पश्चात् गोलों को पुनः गुग्गल की धूनी दें।

शनिवार की रात्रि को एक गोले को शत्रु के मुख्य द्वार पर गाड़ दें, दूसरे गोले को शत्रु के आने-जाने के रास्ते में गाड़ दें तथा तीसरे गोले को गुप्त रीति से शत्रु की छत पर रख दें।

इस प्रयोग के करने से निश्चित रूप से शत्रु के बनते कार्य बिगड़ने लगते हैं। किंतु अकारण ही किसी को कष्ट न दें। अत्यधिक आवश्यकता पड़ने पर ही इस प्रयोग को करें।

शत्रु की बुद्धि विनाश के लिए

रविवार के दिन जब पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र हो तो जंगल से किसी उल्लू को पकड़कर लाएँ। उल्लू को किसी पिंजड़े में बन्द कर किसी गुप्त एवं अन्धेरे स्थान पर रख दें। यह कार्य पूर्णतः गुप्त रूप से करें। उल्लू को तीन दिन तक एक समय मीठा भोजन तथा दूसरे समय नमकयुक्त भोजन दें। चौथे दिन उल्लू को मारकर उसके रक्त को किसी मिट्टी की कोरी हंडिया में भर लें तथा उल्लू को उसी वृक्ष के नीचे दबा दें।

इसके पश्चात् रक्त को गुग्गल एवं लोबान की धूनी दें तथा रक्त में चार खेतों की मिट्टी डालकर उसे शत्रु के मुख्य द्वार के आगे एक हाथ भूमि खोदकर दबा दें तो शत्रु की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

आय में वृद्धि के लिए

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में जब भरणी नक्षत्र आए तो जंगल से किसी घने वृक्ष पर निवास करनेवाले उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को काले थैले में बन्द कर दें तथा थैले को बिल्ली इत्यादि से बचाकर किसी

अन्धेरे कक्ष में रख दें। आधी रात्रि के समय उल्लू को थैले से निकालकर मार दें तथा उल्लू के रक्त को किसी मिट्टी के पात्र में भर दें। इसके पश्चात् उल्लू को उसी वृक्ष के नीचे दबा दें जहाँ से उसे पकड़कर लाए थे।

अब आँगन की मिट्टी लेकर तथा उल्लू के रक्त को मिलाकर छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें। गोलियों को छाया में सुख लें तथा गोलियों को सूखने तक किसी लकड़ी की डिब्बी में बन्द करके रखें। सूखने के पश्चात् गोलियों को सिन्दूर से पूजकर चाँदी के वर्क में लपेट लें तथा गोलियों को गुग्गल की धूनी दें। तीन दिन तक इसी प्रकार गोलियों को गुग्गल की धूनी देते रहें तथा सिंदूर से पूजते रहें। चौथे दिन रात्रि के समय गोलियों को चार भागों में विभक्त कर लें तथा घर के चारों कोनों पर गोलियों को एक-एक फुट गहरा गड्ढा खोदकर दबा दें। यह प्रयोग करने से व्यापारी की आय में अकस्मात ही अभूतपूर्व वृद्धि होने लगती है।

पदोन्नति के लिए

शुक्रवार की रात्रि को जब पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो तो जंगल से बरगद के वृक्ष पर निवास करने वाले उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को लाल रंग के थैले में बन्द कर किसी अन्धेरे तथा एकान्त कक्ष में रख दें। सायंकाल को स्नान कर काले वस्त्र पहनें तथा उल्लू को थैले से बाहर निकालकर मार दें। मारकर उल्लू के रक्त को किसी ताँबे के पात्र में भर लें तथा इस बात का ध्यान रखें कि रक्त भूमि पर न गिरे। उल्लू को लाल थैले में बाँधकर उसी वृक्ष के नीचे दबा दें तथा चुपचाप घर लौट आएँ। घर आकर रक्त के पात्र में एक ताँबे का सिक्का, एक चमेली का फूल, थोड़े सफेद तिल आदि डाल दें। इसके पश्चात् पात्र को घर के आँगन में बीचोंबीच गाड़ दें तो निश्चित रूप से पदोन्नति हो जाती है।

बिक्री बढ़ाने के लिए

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो, उस दिन रात्रि के समय किसी पीपल के वृक्ष से उल्लू को पकड़कर लाएँ। घर लाकर उल्लू को किसी श्वेत

वस्त्र में बाँधकर किसी अन्धेरे स्थान पर रख दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को मारकर उसका रक्त किसी मिट्टी के पात्र में भर लें। जिस वस्त्र में उल्लू को बाँधा था उसी वस्त्र में उल्लू के शरीर को बाँधकर उसी वृक्ष के नीचे दबा दें।

इसके पश्चात् दुकान की मिट्टी लाकर उस रक्त में डाल दें तथा पात्र को रात्रि के समय दुकान से एक मीटर की दूरी पर एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर दबा दें। इस प्रयोग से बिक्री में आशातीत वृद्धि होगी।

व्यवसाय में सफलता के लिए

रविवार के दिन जब पंचमी तिथि हो तो रात्रि के दूसरे पहर में बरगद के वृक्ष पर निवास करने वाले उल्लू को पकड़ लाएँ। उल्लू को किसी लाल रंग के थैले में बन्द कर किसी एकान्त तथा अन्धेरे कक्ष में ऊँचे स्थान पर रख दें। रात्रि के चौथे पहर में उल्लू को मारकर उसके रक्त को किसी पीतल के पात्र में भर लें। इस बात का ध्यान रखें कि रक्त की एक बूँद भी भूमि पर न गिरे। इसके पश्चात् जिस थैले में उल्लू को बन्द किया था उसी थैले में उल्लू को बन्द कर उसी वृक्ष के नीचे दबा दें। तत्पश्चात् श्मशान भूमि की मिट्टी तथा उल्लू के रक्त को मिलाकर एक पात्र बनाएँ तथा पात्र को छाया में सुखा लें। सूखने पर पात्र के अन्दर एक चाँदी का सिक्का रखकर पात्र व्यवसाय द्वार पर गाड़ दें तो उस कार्य में सफलता मिलती है।

बिक्री बढ़ाने का उपाय

रविवार की सप्तमी तिथि को एक उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ तथा रात्रि के दूसरे पहर में उल्लू को मारकर उसका रक्त निकाल दें। इसके बाद सात हाथ लम्बे सफेद सूत को उल्लू के रक्त में रंगकर उसमें हल्दी की सात गाँठ बाँधें तथा इसके पश्चात् सूत को दुकान के द्वार पर लटका दें तो निश्चित रूप से बिक्री बढ़ जाती है।

उच्चपद की प्राप्ति के लिए

रविवार को जब पंचमी तिथि हो तो रात्रि के दूसरे पहर में किसी घने वृक्ष से उल्लू को पकड़कर लाएँ। घर लाकर उल्लू को काले थैले में बन्द कर अपने सिरहाने रखकर सो जाएँ।

प्रात:काल उल्लू को थैले से निकालकर उसकी चोंच खोलकर उसमें थोड़ा पारा डाल दें तथा उल्लू को पुनः थैले में बन्द कर दें। रात्रि के दूसरे पहर में उल्लू को मारकर उसका रक्त निकाल लें तथा उल्लू को पुनः उसी वृक्ष की जड़ में दबा दें। घर आकर उल्लू के रक्त को किसी काँच की बोतल इत्यादि में भरकर भली प्रकार बन्द कर दें ताकि रक्त में वायु प्रवेश न कर सके। तीन दिन तक रक्त को अपने शयन कक्ष में रखें तथा समय-समय पर बोतल को हिलाते रहें।

तत्पश्चात् रविवार को नवमी के दिन रात्रि के दूसरे पहर में उसी वृक्ष की जड़ खोद लाएँ जिस वृक्ष के नीचे उल्लू को दबाया था। जड़ को घर लाकर भली प्रकार पानी से धोकर साफ कर लें तथा जड़ को लाल वस्त्र में लपेट कर रख दें। प्रात:काल किसी कुम्हार से एक बिना पका हुआ कच्चा घड़ा लेकर आएँ तथा घड़े को लाल रंग से रंग लें।

रात्रि के समय रक्त को बोलत से निकालकर घड़े में डाल दें तथा ऊपर से घड़े में जड़ को डाल दें। तब घड़े को सुरक्षित रूप से घर के आँगन में एक हाथ की भूमि खोदकर गाड़ दें।

एक सप्ताह तक घड़े को इसी प्रकार आँगन में गड़ा रहने दें तथा

तथा बबूल के पत्तों की धूनी दें तथा घड़े के मुख पर लाल वस्त्र बाँधकर रख दें। दूसरे दिन रात्रि के समय उसी वृक्ष के नीचे से थोड़ी मिट्टी खोदकर लाएँ तथा घड़े में डाल दें। घड़े का मुख उसी प्रकार वस्त्र से बाँधकर घड़े को किसी गुप्त एवं सुरक्षित स्थान पर रख दें। तीसरे दिन किसी घोड़े के पाँव के नीचे की मिट्टी लेकर आएँ तथा मिट्टी को घड़े में डाल दें।

अब मंगलवार की रात्रि के तीसरे पहर घड़े को नीम, बबूल तथा कपूर की धूनी देकर उसी वृक्ष के नीचे दो हाथ भूमि खोदकर गाड़ दें तो शीघ्र ही उच्चपद की प्राप्ति होती है।

नौकरी में तरक्की पाने के लिए

शनिवार के दिन जब पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो तो रात्रि के समय किसी उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को किसी काले वस्त्र में बाँधकर अपने सिरहाने रख दें तथा सो जाएँ। प्रातःकाल उल्लू को वस्त्र से निकालकर उसकी चोंच में थोड़ा कपूर डाल दें तथा उल्लू को पुनः वस्त्र में बाँधकर रख दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को मारकर उसका रक्त निकाल लें तथा उल्लू को एक कोरी हांडी में बन्द कर उसी वृक्ष के नीचे गाड़ दें।

तीन दिन के पश्चात् उल्लू के रक्त वाले पात्र में थोड़ा सा कपूर डाल दें तथा पात्र को हिलाकर पुनः उसी स्थान पर रख दें।

रविवार की रात्रि के वृक्ष के नीचे से रात्रि के समय हांडी को निकाल कर घर ले आएँ। इस समय तक उल्लू का शरीर मिट्टी में परिवर्तित हो गया होगा। इस मिट्टी को निकाल किसी कोरी हांडी में लाल वस्त्र बिछाकर उसमें रख दें। तथा ऊपर से बरगद के तीन पत्ते रख दें तथा हांडी के मुख को लाल वस्त्र से बन्द कर दें। दूसरे दिन रात्रि के दूसरे पहर में हांडी को गुग्गल तथा लोबान की धूनी देकर उसी वृक्ष के नीचे गाड़ दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था तथा उन्नति के लिए प्रार्थना करें।

यह प्रयोग पन्द्रह दिन के भीतर अपना प्रभाव दिखाता है।

यात्रा में थकान न हो

कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के दिन किसी उल्लू को पकड़क लाएँ।

घर लाकर उल्लू को एक सफेद थैले में बन्द कर अपने शयनकक्ष में चारपाई के नीचे रख दें। प्रातःकाल उल्लू की चोंच खोलकर उसके मुँह में थोड़ा पारा डाल दें तथा पुनः उल्लू को थैले में बन्द कर दें। रात्रि के समय उल्लू को मारकर उसका मांस निकाल लें तथा पंख एवं अस्थियों को वृक्ष के नीचे दबा दें। इसके पश्चात् मांस को एक पात्र में शहद तथा दो बूँद चमेली का इत्र डालकर रख दें। पात्र को भली प्रकार ढक दें तथा रात भर मांस को शहद में भीगा रहने दें।

प्रातःकाल गुलाब का एक ताजा पुष्प तोड़कर लाएँ तथा उसकी पत्तियों को मांस के-पात्र में डाल दें। थोड़ा सा कपूर तथा एक जामुन का पत्ता भी पात्र में डाल दें तथा पात्र को गुग्गल की धूनी दें। रात्रि के समय समस्त सामग्री को मिट्टी के पात्र में डालकर महीन पीस लें। पीसकर समस्त सामग्री को महीन लेई जैसा बना लें तथा मिश्रण में चार बूँद गुलाब जल डालकर पुनः पीसें।

इसके पश्चात् मिश्रण से छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें तथा गोलियों को छाया में सुखा लें। सूखने के पश्चात् गोलियों पर चाँदी का वर्क लपेट लें तथा गोलियों को एक लकड़ी की डिब्बी में बन्द करके रख दें।

प्रयोग के समय गोलियों को कपूर की धूनी देकर यात्रा के समय अपने मुँह में रख लें तो यात्रा में थकान नहीं होती तथा यात्रा आराम से पूर्ण होती है।

यात्रा में उल्टी-चक्कर न आएँ

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में जब भरणी नक्षत्र आए तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को किसी गुप्त एवं अन्धेरे स्थान पर रख दें तथा रत्रि में सो जाएँ। प्रातःकाल उल्लू को थोड़ा सा पारा खिला दें तथा उसकी चोंच पर काला धागा बाँध दें। रात्रि के समय उल्लू को

एक हाथ भूमि खोदकर दबा दें।

इसके पश्चात् कुम्हार से एक कच्ची हंडिया लेकर आएँ तथा मांस को हंडिया में डालकर उसके मुख को लाल वस्त्र से बन्द कर दें। प्रातःकाल हंडिया का मुख खोलकर उसमें दो बूँद केसर, दो बूँद गुलाब जल तथा गुलाब की कुछ पंखुड़ियाँ डाल दें तथा ऊपर से शक्कर की एक पर्त बिछा दें। इसके पश्चात् हंडिया के मुख को पुनः बन्द कर दें तथा हंडिया को भूमि में दो हाथ गहरा गड्ढा खोदकर दबा दें। तीन दिन हंडिया को भूमि में दबा रहने दें तथा रात्रि के समय हंडिया को भूमि से निकाल लें। इसके पश्चात् मांस तथा समस्त सामग्री को खरल में डालकर महीन पीस लें तथा इस मिश्रण को गुग्गल की धूनी दें।

तत्पश्चात् मिश्रण को चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर ऊपर से शहद डाल दें तथा इस मिश्रण को धीमी आँच पर पका लें। मिश्रण को ठण्डाकर किसी पात्र में भर लें तथा पात्र को कपूर की धूनी दें।

प्रयोग के समय पात्र को अपने पास रखें तथा चक्कर या उल्टी आने पर थोड़ा सा मुँह में डाल दें।

इस प्रकार करने से जिन व्यक्तियों को चक्कर या उल्टी आदि की शिकायत रहती है वे लम्बे से लम्बी यात्रा का पूर्ण आनन्द उठा सकते हैं।

•

धन-धान्य की वृद्धि हेतु

भाद्रपद के कृष्ण पक्ष में जिस दिन भरणी नक्षत्र हो तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर लाएँ। इस उल्लू को पिंजड़े में बन्द करके किसी गुप्त तथा एकान्त कक्ष में ऊँचे स्थान पर लटका दें। सायंकाल तक उल्लू को पिंजड़े में बन्द रहने दें तथा रात्रि के समय उल्लू की चोंच में थोड़ा पारा डाल दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को मारकर उसका मांस निकाल लें तथा उल्लू के पंख इत्यादि को एक काले वस्त्र में बाँधकर उसी स्थान पर दबा दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था।

इसके पश्चात् उल्लू के मांस को एक कोरी हंडिया में रखकर ऊपर से थोड़ा सा सिरका डाल दें तथा हंडिया का मुख बन्द करके हंडिया को आँगन

में एक हाथ भूमि खोदकर दबा दें। तीन दिन तक हंडिया को भूमि में दबा रहने दें। तब हंडिया को भूमि से बाहर निकाल लें। इसके पश्चात् हंडिया में श्मशान की मिट्टी तथा साबुत नमक भरकर हंडिया को नीम की धूनी दें। हंडिया को रात भर के लिए एक खाली कक्ष में रख दें तथा बाहर से कक्ष का द्वार बन्द कर दें। प्रातःकाल हंडिया को निकालकर तथा लोबान की धूनी देकर आँगन में उसी स्थान पर दबा दें जहाँ पहले हंडिया को दबा रखा था।

इस प्रयोग को करने से धन धान्य की वृद्धि होती है तथा घर में धनागम होता है।

धन की सुरक्षा के लिए

किसी भी शुभ तिथि को रात्रि के समय किसी बरगद के वृक्ष से एक उल्लू को पकड़ लाएँ। रात्रि के तीसरे पहर में उल्ले को मारकर उसका मांस अलग कर लें तथा अस्थियों एवं पंखों को उसी स्थान पर दबा दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था। इसके पश्चात् चार घड़ों को जल से भरकर किसी खाली कक्ष में रात भर के लिए रख दें। प्रातःकाल जो घड़ा ओछा दिखाई दे उसमें मांस, सिरका, आँखड़े के पुष्प तथा एक चाँदी का सिक्का रखें।

इसके पश्चात् पूर्णिमा की रात्रि को इस घड़े को उस कक्ष में एक हाथ भूमि खोदकर दबा दें जिसमें धन आदि रखा जाता हो।

सुख-शान्ति के लिए

किसी शुभ दिन तथा शुभ तिथि को रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ। सायंकाल तक उल्लू को एक पिंजड़े में बन्द करके किसी अन्धेरे स्थान पर रख दें। रात्रि के दूसरे पहर में उल्लू को मारकर उसका मांस निकाल लें तथा पंख इत्यादि को किसी वस्त्र में बाँधकर उल्लू के निवास पर भूमि में दबा दें। इसके पश्चात् मांस को धोकर उसका रक्त इत्यादि साफ कर लें तथा मांस को रात भर पानी में भिगो दें।

प्रातःकाल मांस को पानी से निकाल कर भली प्रकार निचोड़ लें तथा मांस को रुई में लपेटकर धूप में सूखने के लिए रख दें। सूखने पर मांस को

चमेली के इत्र में रात भर के लिए भिगो दें तथा इसके पश्चात् मांस को इत्र से निकालकर तथा निचोड़कर पुनः सुखा लें। जिस पानी में पहले मांस को भिगोया था वह पानी तथा चमेली का इत्र किसी पात्र में अलग-अलग भरकर रख दें। सूखने पर मांस को कपूर की धूनी दें तथा सिंदूर से पूजकर मांस को किसी लाल वस्त्र में लपेट कर रख दें।

इसके पश्चात् कुम्हार से अपने सामने एक हंडिया बनवाकर लाएँ तथा कुम्हार के पैर के नीचे की मिट्टी तथा जहाँ कुम्हार घड़ों इत्यादि को आग में पकाता है वहाँ की मिट्टी भी ले आएँ। हंडिया में मांस को रख दें तथा हंडिया में कुछ मात्रा में साबुत नमक भर दें। इसके पश्चात् मांस के पानी तथा चमेली के इत्र को धीमी आंच पर किसी ताँबे के पात्र में पका लें। मिश्रण को तब तक पकाएँ जब तक वह आधा न रह जाए। इसके पश्चात् मिश्रण को ठण्डा कर लें। मिश्रण को मिट्टी में मिलाकर एक रोटी सी बना लें तथा इसे छाया में सुखा लें। इस बात का ध्यान रखें कि यह टूटने अथवा चटखने न पाए। बहुत सावधानी से इसे सुखाएँ। सूखने के पश्चात् मिट्टी पर सिन्दूर का एक टीका लगाएँ तथा उसे मांस की हंडिया में रख दें।

तत्पश्चात् हंडिया पर लाल वस्त्र बाँधकर हंडिया को रात्रि के समय मुख्य द्वार पर गाड़ दें तो परिवार की सुख शान्ति बरकरार रहती है।

वशीकरण के लिए

रविवार के दिन जब सप्तमी तिथि हो तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर लाएँ।

घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द करके किसी ऊँचे स्थान पर लटका दें तथा उल्लू की गर्दन में एक हाथ लम्बा सफेद रंग का सूत बाँध दें। रात्रि के दूसरे पहर में उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें जहाँ से उसे पकड़ा था। तत्पश्चात् उल्लू का मांस निकाल लें तथा शेष अस्थियों इत्यादि को उसी स्थान पर भूमि खोदकर दबा दें। घर आकर मांस को भली प्रकार पानी से धोकर स्वच्छ कर लें तथा अपने वस्त्र बदल लें।

प्रातःकाल मांस को किसी पात्र में डालकर उस पर कुछ बूँदे गुलाब

जल, मोगरे का इत्र तथा एक गुलाब का पुष्प डालकर पात्र को रात्रि भर रखा रहने दें। अगले दिन समस्त सामग्री को मांस के साथ महीन लेई जैसा पीस लें। पीसने के पश्चात् इस मिश्रण में दो बूँद केसर डाल दें तथा मिश्रण को रात्रि भर ओस में रख दें।

प्रातःकाल इस मिश्रण की छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें तथा उन गोलियों को सिन्दूर में लपेटकर छाया में सुखा लें। सूखने पर गोलियों को कपूर की धूनी देकर चाँदी के वर्क में लपेट कर रख लें।

फिर किसी शुभ दिन तथा शुभ समय एक गोली को निकालकर तथा गुग्गल की धूनी देकर अपने आँगन में गाड़ दें। दूसरे दिन दूसरी गोली को अपने मुख्य द्वार पर रात्रि के समय गाड़ दें।

मिश्रण की कम-से-कम छह गोली बनाना अति आवश्यक है। गोलियों की संख्या कम नहीं होनी चाहिए। तीसरी गोली को अपने आने-जाने के रास्ते पर गुप्त ढंग से एक हाथ भूमि खोदकर दबा दें। चौथी गोली को इच्छित व्यक्ति के आने-जाने वाले रास्ते में गाड़ दें तथा अगले दिन पाँचवीं गोली को इच्छित व्यक्ति के मुख्य द्वार पर गाड़ दें।

छठी गोली को डिब्बी में बन्द कर अपने पास रखें। यह सब कार्य गुप्त रूप से करें तो निश्चित ही इच्छित व्यक्ति को वश में किया जा सकता है। यह प्रबल वशीकरण प्रयोग है।

सम्मोहन के लिए

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो तो किसी बरगद के वृक्ष से उल्लू को पकड़कर लाएँ। घर लाकर उल्लू को किसी वस्त्र में बाँधकर अपने सिरहाने रखकर सो जाएँ।

प्रातःकाल उल्लू को निकालकर उसकी चोंच में थोड़ा सा पारा भर दें तथा पुनः उल्लू को वस्त्र में बाँध दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें जहाँ से उसे पकड़ा था। फिर उल्लू का मांस निकाल लें तथा पंखों एवं अस्थियों को वहीं दबा दें तथा अपने घर लौट आएँ। मांस को भली प्रकार धोकर मिट्टी के पात्र में डाल दें तथा पात्र को

रात भर के लिए ओस में खुला रख दें।

प्रात:काल मांस को निचोड़कर उसमें तिल का तेल भर दें। तेल इतना हो कि मांस पूर्णतया डूब जाए। तीन दिन मांस को इस तेल में पड़ा रहने दें, तब तेल को धीमी आँच पर पकाएँ। तेल को तब तक पकाते रहें जब तक वह एक चौथाई भाग न रह जाए। तब तेल को ठण्डा कर लें। ठंडा होने पर तेल को मिट्टी के कोरे पात्र में भर लें तथा तेल को गुग्गल की धूनी दें।

इसके पश्चात् तेल का दीपक जलाकर उसकी कालिख को किसी कोरी ठीकरी पर उतार लें। इस कालिख को किसी पात्र में भर लें तथा उसमें दीपक का तेल मिलाकर काजल बना लें।

प्रयोग के समय इस काजल को गुग्गल की धूनी दें तथा प्रथम अपने दाएँ नेत्र में लगाएँ तथा इसके पश्चात् बाएँ नेत्र में लगाएँ। काजल लगातार किसी सभा इत्यादि में जाएँ अथवा जनसमूह के समक्ष जाएँ तो देखते ही प्रत्येक व्यक्ति सम्मोहित हो जाता है।

समाज सम्मोहन तिलक

उल्लू के मांस को धोकर रात भर के लिए ओस में खुला छोड़ दें तथा प्रात:काल मांस को निचोड़कर उसमें चार बूँद गोरोचन मिला लें। इसके पश्चात् मांस को महीन पीस लें तथा मिश्रण में चमेली का दो बूँद इत्र डालें। प्रयोग के समय इस मिश्रण का माथे पर तिलक करें तो प्रत्येक व्यक्ति सम्मोहित हो जाता है।

शत्रु घर छोड़कर भाग जाए

शनिवार के दिन जब पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र हो तो रात्रि के समय किसी उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को किसी एकान्त तथा अँधेरे स्थान पर बिल्ली इत्यादि से बचाकर रख दें। रविवार के दिन उल्लू की चोंच में कपूर भर दें तथा पुनः उल्लू को उसी स्थान पर रख दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें तथा उल्लू की अस्थियाँ निकाल लें। इसके पश्चात् उल्लू के पंख एवं अस्थियों को किसी

काले वस्त्र में बाँधकर उसी स्थान पर दबा दें तथा प्रातः से पूर्व घर लौट आएँ तथा स्नान करें।

स्नान करके अस्थियों को पानी में धोकर भली प्रकार साफ कर लें तथा अस्थियों को कपूर की धूनी दें। रात्रि के समय श्मशान जाकर वहाँ से थोड़ी मिट्टी लेकर आएँ तथा पीछे मुड़कर देखे बिना घर लौट आएँ। अगले दिन कुम्हार के पास जाएँ तथा उससे अपने सामने एक घड़ा अथवा हंडिया बनवाएँ तथा हंडिया बनाने के लिए प्रयुक्त होने वाली मिट्टी में श्मशान की मिट्टी मिला दें। इस हंडिया को सब पात्रों से अलग पकवाएँ तथा तैयार हो जाने पर हंडिया को घर ले आएँ।

इसके पश्चात् किसी गधे का पेशाब लेकर आएँ तथा उसमें सिन्दूर घोलकर हंडिया पर शत्रु का नाम लिखें।

तत्पश्चात् हंडिया में अस्थियों को लाल रंग के रेशम में बाँधकर रख दें तथा अस्थियों के ऊपर एक चुटकी सिन्दुर, एक चमेली का पुष्प तथा नमक की तीन साबुत डलियाँ रख दें।

अब हंडिया का मुख लाल वस्त्र में बन्द कर उसे शत्रु के मुख्य द्वार पर एक हाथ की भूमि खोदकर दबा दें। तीन दिन में शत्रु घर छोड़कर भाग जाएगा।

शत्रु उच्चाटन प्रयोग

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो तो रात्रि के समय किसी घने वृक्ष से एक उल्लू को पकड़कर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को काले रंग के थैले में बन्द कर किसी अँधेरे स्थान पर रख दें।

रात्रि के समय उल्लू को मार दें तथा उल्लू को किसी कोरी हंडिया में रखकर उस पर थोड़ा नमक अथवा सिरका डाल दें तथा हंडिया को उसी स्थान पर दबा दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था। एक सप्ताह तक प्रतिदिन आंखड़े का एक पुष्प सायंकाल के समय तोड़कर लाएँ। एक सप्ताह के पश्चात् रात्रि के समय हंडिया को जहाँ दबाया था वहाँ से निकालकर घर ले आएँ। हंडिया काम मुँह खोलें तथा हंडिया में से उल्लू की अस्थियों को चुन

लें तथा हंडिया को पुनः उसी स्थान पर दबा दें। अस्थियों को धोकर छाया में सुखा लें तथा अस्थियों पर सात हाथ लम्बा काले रंग का रेशम लपेटकर कपूर की धूनी देकर रख दें।

इसके पश्चात् किसी कुम्हार से कोरी हंडिया लेकर आएँ तथा उसमें गधे का पेशाब भर लें। तत्पश्चात् हंडिया में अस्थियों को रख दें तथा हंडिया में साबुत नमक की सात डलिया रख दें तथा हंडिया को लोबान की धूनी देकर शत्रु के मुख्य द्वार पर किसी प्रकार से गाड़ दें। यह कार्य गुप्त रूप से तथा रात्रि के समय करें। उच्चाटन का प्रबलतम प्रयोग है।

दुश्मन की कोई चाल सफल न हो

अमावस्या के दिन रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर लाएँ तथा उल्लू को रात्रि के समय मारकर किसी मिट्टी के पात्र में रखकर उसे आँगन में दबा दें। एक सप्ताह के पश्चात् उल्लू के पात्र को भूमि से बाहर निकाल लें तथा उसमें से अस्थियों को अलग कर लें। पात्र को उल्लू के निवास स्थान पर भूमि में दबा दें तथा अस्थियों को पानी से भली भाँति धोकर साफ कर लें।

इसके पश्चात् अस्थियों को लोबान की धूनी देकर किसी लाल वस्त्र में बाँध लें तथा ऊपर से सात हाथ लम्बा काला रेशम लपेट लें। शनिवार की रात्रि को अस्थियों को शत्रु के मुख्य द्वार पर एक हाथ की भूमि खोदकर दबा दें। शत्रु कोई भी प्रयोग करे वह सफलता नहीं पा सकेगा।

जुए में जीतने के लिए

रविवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द करके किसी अँधेरे स्थान पर रख दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को मारकर उसकी अस्थियाँ निकाल लें तथा पंख एवं अस्थियों को उसी स्थान पर दबा दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था। घर लाकर अस्थियों को भली प्रकार धोकर साफ कर लें तथा छाया में अस्थियों को सुखा लें। सूखने के पश्चात् अस्थियों को किसी श्वेत

वस्त्र में बाँधकर अँधेरे स्थान पर रख दें, इससे पूर्व अस्थियों को गुग्गल तथा लोबान की धूनी दें।

मंगलवार के दिन गधे का ऐसा पेशाब लाएँ जो भूमि पर न गिरा हो। अस्थियों को गधे के पेशाब में भिगो दें। अस्थियों को तीन दिन इसी प्रकार भीगा रहने दें। तीन दिन के पश्चात् अस्थियों को पेशाब से निकालकर धो लें तथा पुनः छाया में सुखा लें। सूखने पर अस्थियों को कपूर की धूनी दें तथा किसी लाल रंग के वस्त्र में लपेट लें। वस्त्र में रखने से पूर्व वस्त्र में कोई इत्र लगा लें अन्यथा अस्थियों से दुर्गन्ध आएगी। इसके पश्चात् अस्थियों को किसी कोरे घड़े में रखकर घड़े को बन्द करें तथा इसके पश्चात् घड़े को श्मशान भूमि में ऐसे स्थान पर गाड़ आएँ जहाँ कोई चिता जली हो।

घड़े को गाड़ने के पश्चात् उस स्थान पर कोई चिह्न अंकित कर दें ताकि स्थान ढूँढ़ने में कठिनाई न हो। तीन दिन के पश्चात् घड़े को भूमि से बाहर निकालकर घर ले आएँ।

अस्थियों को घड़े से बाहर निकाल लें तथा घड़े को पुनः उसी श्मशान भूमि में गाड़ आएँ। फिर अस्थियों के गुग्गल की धूनी देकर अस्थियों में सात रंग का रेशम बाँध दें।

प्रयोग के समय अस्थियों को पुनः गुग्गल की धूनी देकर अस्थियों को अपनी दाहिनी भुजा में बाँधें तथा जुआ खेलने जाएँ।

इस प्रयोग को करने से अवश्य ही जुए में विजय होती है।

शत्रु को रोगग्रस्त करने के लिए

अमावस्या की रात्रि को किसी बरगद के वृक्ष पर निवास करने वाले उल्लू को पकड़कर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें तथा पिंजड़े को किसी अँधेरे ऊँचे स्थान पर टाँग दें। रात्रि के तीसरे पहर में उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें तथा उसकी अस्थियाँ निकाल लें। उल्लू के पंख तथा अस्थियों को उसी स्थान पर दबा दें जहाँ से उसे पकड़ा था। अस्थियों को घर ले आएँ तथा पानी से भली प्रकार धो लें तथा इसके पश्चात् छाया में सुखा लें। सात हाथ लम्बे सूत को लाल रंग से रंगकर उसमें

अस्थियों को बाँध दें तथा अस्थियों को कपूर की धूनी दें। शनिवार की रात्रि को अस्थियों को श्मशान भूमि में ले जाकर गाड़ दें। तीन दिन के पश्चात् अस्थियों को श्मशान भूमि से निकाल लाएँ तथा एक श्वेत वस्त्र में बाँध लें।

तत्पश्चात् अस्थियों को लोबान की धूनी देकर रात्रि के समय शत्रु के घर में अथवा मुख्य द्वार पर दो हाथ भूमि खोदकर दबा दें तो शत्रु बीमार हो जाता है।

शत्रु का कष्ट बढ़े

रविवार के दिन जब पंचमी तिथि हो तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर ले आएँ। दूसरे दिन रात्रि के समय उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें जहाँ से उसे पकड़ा था। मारने के पश्चात् उल्लू की अस्थियाँ निकाल लें तथा पंखों एवम् अस्थियों को उसी स्थान पर दबा दें। इसके पश्चात् अस्थियों को घर लाकर पानी से धो लें तथा छाया में सुखा लें। सूखने के पश्चात् अस्थियों को लाल रंग के रेशम में बाँधकर किसी घड़े में रख दें।

इसके पश्चात् घड़े में चिता की राख, श्मशान भूमि की मिट्टी तथा बरगद के तीन पत्ते रखकर घड़े को शत्रु के मुख्य द्वार पर गाड़ दें।

इस प्रयोग को करने से निश्चित रूप से शत्रु पर कष्ट का प्रकोप बढ़ जाता है।

विद्वेषण के लिए

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी की रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़कर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द करके किसी अँधेरे एवं गुप्त स्थान पर रख दें। प्रात:काल उल्लू की चोंच खोलकर उसके मुँह में मोम भर दें तथा सायंकाल तक उल्लू को पिंजड़े में बन्द रहने दें। रात्रि के दूसरे पहर में उल्लू को मारकर उसकी अस्थियों को निकाल लें तथा पंख इत्यादि को उसी स्थान पर दबा दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था। इसके पश्चात् अस्थियों को लेकर घर आ जाएँ तथा अस्थियों को भली प्रकार पानी से धो लें।

एक कच्चे घड़े में अस्थियों को रखकर शनिवार की रात्रि को किसी तिराहे पर गाड़ दें।

तीन दिन के पश्चात् रात्रि के समय ही घड़े को निकाल लाएँ तथा अस्थियों को गुग्गल की धूनी देकर पुनः घड़े में रख दें। फिर किसी कुँवारी कन्या से चार हाथ लम्बा सूत लेकर आएँ तथा सूत को सिन्दूर में रंग लें। अस्थियों को घड़े से निकालकर दो भागों में विभक्त कर दें तथा इस सूत से अलग-अलग बाँध दें। घड़े में तीन आंखड़े के पुष्प, तीन घोड़े के बाल तथा बिल्ली के सिर के बाल डालकर घड़े को तिराहे पर उसी स्थान पर गाड़ दें जहाँ पहले गाड़ा था।

शनिवार की रात्रि को अस्थियों को लोबान की धूनी दें तथा इच्छित व्यक्तियों के घर के मुख्य द्वार अथवा खेत पर गाड़ दें तो दोनों व्यक्ति परस्पर शत्रु बन जाते हैं।

यह कार्य पूर्णतः गुप्त रूप से करें। इस बात का ध्यान रखें कि अस्थियाँ गाड़ते समय कोई व्यक्ति देख न ले अन्यथा प्रयोग निष्फल हो जाता है।

दो पक्षों में वैर कराने के लिए

शनिवार की रात्रि को उल्लू को मारकर उसकी अस्थियाँ निकाल लें तथा अस्थियों को धोकर सुखा लें। इसके पश्चात् घोड़े की पूँछ के छह बाल लेकर अस्थियों में बाँध दें तथा अस्थियों को दो भागों में विभक्त कर इच्छित व्यक्तियों के घर के द्वार पर गाड़ दें।

उल्लू द्वारा मारण प्रयोग

अमावस्या की रात्रि को जंगल से किसी बरगद के वृक्ष से उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें तथा उल्लू को गर्दन में काले रंग का एक हाथ लम्बा धागा बाँध दें। अगले दिन सायंकाल को उल्लू की चोंच खोलकर उसके मुँह में थोड़ा पारा भर दें। रात्रि के समय उल्लू को जहाँ से पकड़ा था उसी वृक्ष के नीचे एक हंडिया में मारकर दबा

दें। दबाने से पूर्व हंडिया में सरसों का तेल डाल दें तथा हंडिया के मुख पर लाल वस्त्र बाँध दें। मारने से पूर्व उल्लू की गर्दन में बँधा हुआ धागा खोलकर अपने पास रख लें।

एक सप्ताह के पश्चात् हंडिया को रात्रि के समय जाकर निकाल लाएँ तथा उसमें से अस्थियाँ निकाल लें। हंडिया को उसी प्रकार लाल वस्त्र से मुँह बाँधकर उसी वृक्ष के नीचे दबा दें। घर लाकर अस्थियों को पानी से भली प्रकार धोकर पानी से साफ कर लें।

शनिवार के दिन कुम्हार से एक कोरी हंडिया लेकर आएँ तथा हंडिया में गधे का ऐसा पेशाब भर लें जो भूमि पर न गिरा हो। फिर हंडिया में कुछ मुट्ठी उड़द, एक मुट्ठी पीली सरसों तथा अस्थियों को रखकर श्मशान भूमि में गाड़ दें तथा उस स्थान पर कोई चिह्न अंकित कर दें। एक सप्ताह के पश्चात् हंडिया को रात्रि के समय श्मशान भूमि से निकाल कर ले आएँ। शनिवार के दिन हंडिया में से अस्थियों को निकालकर उस पर उल्लू की गर्दन वाला धागा बाँध दें जो खोलकर रखा हुआ था।

इसके पश्चात् अस्थियों को तीन भागों में विभक्त करें तथा सात रंग के रेशम से अलग-अलग बाँध लें। रात्रि के समय एक भाग को शत्रु के खेत पर गाड़ दें तथा दूसरे भाग को किसी तिराहे पर गाड़ दें। तीसरे भाग को शत्रु के मुख्य द्वार पर एक हाथ की भूमि खोदकर दबा दें। यह कार्य पूर्णतः गुप्त रीति से करें। इस प्रयोग को करने से एक सप्ताह के भीतर इच्छित व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। किसी अति दुष्ट आदमी पर प्रयोग करें अन्यथा प्रभाव अपने पर आ सकता है।

नोट—ऐसे प्रयोग करने से पूर्व व्यक्ति अपना भला-बुरा भी स्वयं सोच ले।

वशीकरण के लिए

कार्तिक मास की पूर्णिमा की रात्रि को किसी उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को काले रंग के थैले में बन्द करके किसी अँधेरे स्थान पर रख दें। प्रातःकाल उल्लू की चोंच में कपूर तथा पारा भर दें तथा उल्लू को पुनः थैले में बन्द कर उसी स्थान पर रख दें। रात्रि के दूसरे पहर

में उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें जहाँ से उसे पकड़ा था। मारने के पश्चात् उल्लू का दिल सावधानी पूर्वक निकाल लें तथा पंख और अस्थियों को उसी स्थान पर दबा दें। उल्लू के दिल को लेकर घर आ जाएँ तथा दिल को पानी से भली प्रकार धोकर साफ कर लें।

इसे एक ताँबे के पात्र में रख लें तथा पात्र में चमेली का इत्र भर दें। प्रातःकाल इत्र को निकाल कर भली भाँति निचोड़ लें तथा दिल को छाया में सुखा लें। रात्रि के समय दिल को पुनः एक मिट्टी के पात्र में रखकर पात्र में चुटकी भर सिन्दूर डालकर रात भर के लिए ओस में खुला छोड़ दें।

प्रातःकाल दिल को पात्र में से निकालकर छाया में सुखा लें। तत्पश्चात् प्रातःकाल किसी उद्यान में से ऐसे गुलाब के पुष्प को तोड़कर लाएँ जो पूर्ण विकसित न हों। फिर गुलाब की पत्तियों को एक लकड़ी की डिब्बी में बिछा दें तथा उसमें उल्लू के दिल को रखकर ऊपर से पुनः पत्तियाँ बिछा दें।

रात्रि के समय गुप्त रूप से यह डिब्बी इच्छित व्यक्ति, स्त्री अथवा पुरुष के आने-जाने के रास्ते में गाड़ दें। जिस दिन भी व्यक्ति का पैर उस स्थान पर पड़ेगा वह तुरन्त वशीभूत हो जाएगा।

घर कीलने के लिए

कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन रात्रि के समय किसी बरगद के वृक्ष से एक उल्लू को पकड़कर लाएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें तथा उसकी गर्दन में एक हाथ लम्बा काला धागा बाँध दें।

प्रातःकाल उल्लू का मुख खोलकर उसके मुख में शहद की दो बूँदे डाल दें तथा पुनः उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें। रात्रि के समय उल्लू को जिस वृक्ष के नीचे से पकड़ा था उसी वृक्ष के नीचे ले जाकर मार दें। उल्लू के दिल को सावधानीपूर्वक निकाल लें तथा अस्थियों एवं पंखों को उसी वृक्ष की जड़ में गाड़ दें। सूर्योदय से पूर्व दिल को लेकर घर आ जाएँ तथा पानी से भली प्रकार धोकर साफ कर लें। उल्लू को मारने से पूर्व उसकी गर्दन में बँधा धागा निकाल लें तथा धागे को अपने पास रख लें। रात्रि के समय

श्मशान भूमि जाकर वहाँ से थोड़ी मिट्टी खोद लाएँ।

प्रात:काल कुम्हार के पास जाकर उससे एक हंडिया बनवाएँ तथा हंडिया की मिट्टी में श्मशान की मिट्टी मिला लें।

इस हंडिया को सब पात्रों से अलग पकवाएँ तथा जिस स्थान पर बर्तन पकाए जाते हैं उस स्थान की राख ले आएँ। हंडिया में किसी तालाब का पानी तथा आंवे की राख डालकर ढक कर रख दें।

इसके पश्चात् किसी मिट्टी के पात्र में चमेली का इत्र भर कर दिल को उसमें भिगो दें। तीन दिन तक इसी प्रकार दिल को चमेली के इत्र में भीगा रहने दें तथा चौथी रात को दिल को ओस में खुला छोड़ दें। तत्पश्चात् हंडिया में दिल तथा इत्र आदि को डालकर श्मशान भूमि में दबा दें।

दबाने के पश्चात् उस स्थान पर कोई चिह्न अंकित कर दें ताकि स्थान को पहचानने में कठिनाई न हो। एक सप्ताह के पश्चात् हंडिया को श्मशान भूमि से निकाल लाएँ तथा उसमें थोड़ा कपूर डाल दें।

हंडिया के ऊपर लाल वस्त्र बाँधकर उसी धागे को हंडिया के चारों ओर लपेट दें जो उल्लू की गर्दन में बँधा था। इसके पश्चात् इस हंडिया को इच्छित घर के मुख्य द्वार पर गाड़ दें।

शत्रु का हार्ट फेल हो

शुक्रवार के दिन जब पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को पिंजड़े में बन्द कर दें तथा पिंजड़े को किसी अँधेरे स्थान पर रख दें। दो दिन पश्चात् उल्लू को उसी स्थान पर ले जाकर मार दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था। मारने के पश्चात् उल्लू का दिल सावधानीपूर्वक निकाल लें तथा पंख एवं अस्थियों को उसी स्थान पर दबा दें। घर आकर उल्लू के दिल को पानी से धोकर साफ कर लें तथा उसे किसी पात्र में रखकर रात भर ओस में खुला छोड़ दें। प्रात:काल स्नान आदि करके उल्लू के दिल को पात्र से निकाल कर निचोड़ लें।

इसके पश्चात् पात्र में दिल को डालकर उसमें थोड़ा सा पानी डाल दें

तथा पात्र में कपूर डाल दें। कपूर को पानी में भली प्रकार घुलने दें। इसके पश्चात् पुनः पात्र को रात भर ओस में खुला छोड़ दें। प्रात:काल दिल को पात्र से निकालकर भली प्रकार निचोड़ लें तथा दिल को लोबान की धूनी दें। फिर दिल को लाल वस्त्र में लपेटकर छाया में सुखा लें तथा सूखने पर लाल वस्त्र से निकाल लें। तब मिट्टी की कोरी हंडिया में चार बूँद चमेली का तेल, दो बूँद केवड़ा तथा दो बूँद केसर डाल दें। इस हंडिया में दिल को डालकर हंडिया के मुख पर लाल वस्त्र बाँध दें। हंडिया को रात्रि के समय ले जाकर उसी स्थान पर दबा दें जहाँ उल्लू के पंख तथा अस्थियों को दबाया था। एक रात्रि हंडिया को उसी स्थान पर गड़ा रहने दें तथा दूसरे दिन रात्रि के समय हंडिया को निकाल लाएँ। तत्पश्चात् श्मशान भूमि की मिट्टी तथा गधे के पाँव की मिट्टी लेकर आएँ तथा पात्र में डाल दें। फिर किसी लोहार से एक लोहे की सात इंच की कील बनवाकर लाएँ।

प्रयोग के समय शत्रु का नाम लेकर तथा दिल को हंडिया से निकालकर दिल में लोहे की कील ठोंक दें। इस प्रकार शत्रु का दिल कार्य करना बन्द कर देता है तथा उसकी मृत्यु हो जाती है।

विशेष—ऐसा प्रयोग केवल उन्हीं पर करें जो समाज के लिए घातक व मानवता पर कलंक हों अन्यथा कर्ता का स्वयं का विनाश हो जाया करता है।

शत्रु के घर में कलह कराने के लिए

शनिवर की रात्रि को किसी बरगद के वृक्ष से उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ। घर लाकर उल्लू को किसी पिंजड़े में बन्द कर दें तथा उल्लू की गर्दन में सात हाथ लम्बा काला रेशम बाँध दें। दूसरे दिन रात्रि के समय उल्लू को मारकर उसके पंजे पैरों की अस्थियों के साथ अलग कर दें। पंजों को अलग करके उल्लू के शरीर को किसी वस्त्र में बाँधकर उसी वृक्ष के नीचे दबा दें जहाँ से उल्लू को पकड़ा था। घर लाकर पंजों को भली प्रकार पानी से साफ कर लें तथा किसी मिट्टी के पात्र में बन्द कर लें।

अगले दिन प्रात:काल कुम्हार से कोरी हंडिया लेकर आएँ तथा उसमें काले तिल का तेल तथा थोड़ा सिरका डालकर रात भर ओस में खुला छोड़

दें। प्रात:काल पंजों को हंडिया में डाल दें तथा हंडिया के मुख पर लाल वस्त्र बाँध कर हंडिया को श्मशान भूमि में गाड़ दें। एक सप्ताह के पश्चात् हंडिया को श्मशान भूमि से निकालकर घर ले आएँ तथा पंजों को निकाल लें। इसके बाद पंजों को पानी से भली प्रकार धोकर सुखा लें तथा पंजों को लोबान की धूनी दें। शनिवार के दिन लाल रंग का एक हाथ वस्त्र लेकर आएँ तथा वस्त्र में तीन नमक की डलियाँ, तीन कीकर के काँटे तथा तीन घोड़े की पूँछ के बाल रख दें।

इसके पश्चात् वस्त्र में उल्लू के पंजों को भी रख दें तथा वस्त्र को काले रेशम से तीन गाँठ देकर बाँध दें। रात्रि के समय वस्त्र को शत्रु के मुख्य द्वार पर अथवा खेत इत्यादि में दो हाथ की भूमि खोदकर गाड़ दें तो उसके घर में क्लेश रहने लगेगा।

शत्रु के घर में सर्प दिखाई दें

रविवार के दिन जब पंचमी तिथि हो तो रात्रि के समय किसी घने वृक्ष से उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को किसी पिंजड़े में बन्द करके अँधेरे एवं गुप्त स्थान पर रख दें। दूसरे दिन रात्रि के समय उल्लू को मारकर एक कोरी हंडिया में बन्द करें तथा हंडिया के मुख पर काला वस्त्र बाँध दें। इसके पश्चात् हंडिया को उल्लू के निवास स्थान पर वृक्ष की जड़ में एक हाथ भूमि खोदकर दबाएँ। मंगलवार की रात्रि को जंगल जाकर किसी सर्प की पूंछ की अस्थि लेकर आएँ।

एक सप्ताह के पश्चात् हंडिया को वृक्ष के नीचे से ले आएँ तथा हंडिया में से उल्लू की अस्थियों को निकाल लें। हंडिया को पुनः बरगद के वृक्ष की जड़ में दबा दें तथा दबाने से पूर्व हंडिया में थोड़ा गंगा जल डाल दें। इसके पश्चात् पंजों को धो लें तथा लोबान एवं गंधक की धूनी देकर रुई में लपेटकर रख लें। शनिवार की रात्रि को चिता की राख तथा चिता के जलते हुए कोयले लेकर आएँ। फिर चिता के कोयले से अग्नि जलाएँ तथा साँप की पूंछ की अस्थि एवं पंजों का चूर्ण बना लें।

तत्पश्चात् रविवार की रात्रि को चिता की राख तथा अस्थियों के

मिश्रण को शत्रु के घर में डाल दें तो उसे घर के चारों ओर साँप ही साँप दीखते हैं।

शत्रु का अन्न खराब करने के लिए

शुक्रवार के दिन जब पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र हो तो रात्रि के समय एक उल्लू को पकड़ लाएँ। घर लाकर उल्लू को किसी थैले में बन्द कर अपने सिरहाने रखकर सो जाएँ।

प्रात:काल उल्लू के मुख में थोड़ी गन्धक डाल दें तथा पुनः उल्लू को बन्द कर दें।

रात्रि के समय उल्लू को मारकर उसके पंजे अलग कर लें तथा पंख इत्यादि को वृक्ष के नीचे दबा दें। इसके पश्चात् किसी कुंवारी कन्या से एक हाथ लम्बा सूत कतवा कर लाएँ तथा पंजों को बाँधकर शत्रु के भण्डार गृह में गाड़ दें तो शत्रु का समस्त अन्न खराब हो जाता है।

प्रेत बाधा निवारण के लिए

शनिवार की रात्रि को तीसरे पहर में किसी उल्लू को पकड़कर घर ले आएँ।

दूसरे दिन रात्रि के समय जाकर उल्लू के घोंसले को वृक्ष से उतार लाएँ तथा उल्लू को किसी अन्य वृक्ष पर छोड़ आएँ। इसके पश्चात् घोंसले को नीम तथा गुग्गल की धूनी दें तथा घोंसले को जलाकर उसका चूर्ण बना लें। तत्पश्चात् सम्बन्धित व्यक्ति के सिर पर यह चूर्ण डाल दें तो प्रेम व्यक्ति को छोड़कर भाग जाता है।

घर पर कोई संकट न आए

रविवार की पंचमी तिथि को किसी वृक्ष से उल्लू की अनुपस्थिति में घोंसला उतार लाएँ।

घर आकर घोंसले को गुग्गल, लोबान तथा गन्धक की धूनी देकर किसी पात्र में बन्द कर श्मशान भूमि में गाड़ आएँ। एक सप्ताह के पश्चात्

घोंसले को पात्र से निकालकर घर ले आएँ तथा घोंसले को नीम की धूनी दें। तत्पश्चात् चिता के कोयले लाकर उन्हें किसी कोरी हंडिया में डाल दें तथा हंडिया में कपूर तथा गन्धक डालकर तीन बार सम्बन्धित व्यक्ति के सिर के चारों ओर से उतारें। फिर हंडिया में घोंसला डालकर जलाकर चूर्ण बना लें तथा हंडिया को बन्द करके रख दें। दूसरे दिन रात्रि के समय स्नान कर श्वेत वस्त्र पहनें तथा मृग चर्म के आसन पर बैठकर सरसों के तेल का दीपक जला लें।

प्रेतग्रस्त व्यक्ति को भी यदि सम्भव हो तो स्नान कराने के पश्चात् अपने सम्मुख बैठा लें तथा व्यक्ति के सिर पर इस राख को डाल दें। इस प्रयोग को करने से व्यक्ति प्रेतमुक्त हो जाता है तथा यदि हंडिया को घर में ही रखें तो घर पर कोई संकट नहीं आता।

कुछ अन्य प्रयोग

- उल्लू को निम्न मन्त्र द्वारा ७१०८ बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर के दरवाजे पर फेंक दिया जाएगा, उसका घर वीरान हो जाएगा।
  ***मन्त्र*—'ॐ नमो कालरात्रि'।**
- इसकी आँख को कस्तूरी में रगड़कर जिसके ऊपर डाल दिया जाए वह मित्र बन जाएगा।
- इसकी हड्डी को जलाकर जिसके सिर में वह राख डाल दी जाए वह आवारा फिरता रहेगा।
- इसका मांस सुखाकर जिसको खिलाया जाए वह परेशान रहेगा।
- इसकी जिह्वा को दूध में थोड़ी सी केसर के साथ मिलाकर जिस किसी को पिला दिया जाए तो वह व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त करेगा।
- इसके पैरों की राख जिसको खिला दी जाए वह सदा चिन्तातुर रहेगा।
- इसकी विष्ठा सुपारी के साथ किसी को खिला दी जाए तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाएगी।
- इसकी दोनों आँखों को पानी में डाल दें। जो सीधी रहे वह सोने वाली और जो उल्टी पड़ी रहे वह जागने वाली आँख है। यदि सीधी आँख

को किसी के सिराहने रख दें तो उसका उठने का मन न चाहे और उल्टी आँख को अँगूठी में जड़ाकर पास में रखें तो जो पहने उसको नींद नहीं आएगी।
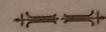
आप सबकी जानकारी बढ़ाने और तन्त्र के विस्तार को विस्तृत रूप से समझने के लिए अब मैं कौवा तन्त्र नामक अगले अध्याय की ओर बढ़ता हूँ। आप इस ग्रन्थ में बताए सभी प्रयोग शत-प्रतिशत सफल पाएँगें क्योंकि ये सब मेरे अनुभव किए हुए और प्रयोग किए जा चुके हैं। आपको केवल निष्ठावान होकर विधि-विधान अनुसार प्रयोग करना है। यदि सफलता न मिले तो भी निराश न हों क्योंकि साधना में दोष अपना होता है अतः दुबारा प्रयास करें—ईश्वर सच्चे को सफलता देने वाला है।

—लेखक

कौवा तन्त्र

कौवा नामक पक्षी, जिसे 'काक', 'कागा', 'कौवा' आदि नामों से भी पुकारा जाता है, न केवल भारतवर्ष में अपितु संसार के प्रायः सभी देशों में पाया जाता है।

कौवे आमतौर पर तीन प्रकार के होते हैं—

१. छोटे कद के, जिनका रंग काला होता है, परन्तु गर्दन कुछ सफेदी लिए होती है अर्थात् गर्दन वाला स्थान हल्के काले रंग का होता है।

२. छोटे कद के, जिनका सम्पूर्ण शरीर काले रंग का होता है।

३. बड़े कद के, जो आमतौर पर गहरे काले रंग के ही पाए जाते हैं। इन्हें 'डोडर कौवा' अथवा 'पहाड़ी कौवा' भी कहा जाता है।

आमतौर पर कौवे का कद १५ इंच लम्बा होता है और ऊँचाई ६ इंच होती है। इसकी पूंछ के पंखों की लम्बाई ९ इंच के लगभग होती है। कौवे की चोंच की लम्बाई २ इंच होती है और वह अत्यन्त काली होती है।

कौवे के पंख काले होते हुए भी चमकीले होते हैं। इसकी दो टाँगें होती हैं तथा पंख चार भागों में विभक्त होते हैं। यों, देखने में तो कौवे लम्बे होते हैं, अन्य पक्षियों की भाँति इसकी उम्र की कोई सीमा नहीं आँकी जा सकती। कहते हैं कि यदि कौवा दुर्घटना का शिकार न हो तो वह हजारों वर्ष तक जीवित रहता है अर्थात् एक प्रकार से यह पक्षी अमर है। स्वाभाविक मृत्यु से नहीं मरता। कोई-न-कोई दुर्घटना इसके प्राणों की ग्राहक बनती है। इस सम्बन्ध में एक कहानी प्रचलित है, जिसे नीचे दिया जाता है—

कौवे की कहानी

कहा जाता है कि अत्यन्त प्राचीन काल अर्थात् सतयुग में कौवे के शरीर का रंग सफेद होता था। एक बार किसी ऋषि ने एक कौवे से कहा कि तुम जाकर अमृत के स्रोत का पता लगा लाओ। साथ ही यह चेतावनी भी कर दी कि जब तुम्हें अमृत के स्रोत का पता चल जाए, तब तुम सीधे मेरे पास चले आना, उस अमृत का पान स्वयं मत करना।

ऋषि की आज्ञा शिरोधार्य कर, वह कौवा अमृत के स्रोत की खोज में उड़ चला। निरन्तर एक वर्ष तक स्थान-स्थान पर भ्रमण करने के उपरान्त एक दिन वह अमृत के स्रोत के समीप जा पहुँचा। अपने परिश्रम को सफल हुआ देखकर कौवे को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उस समय वह अत्यन्त थका हुआ था और उसे प्यास भी जोर की लग रही थी। अतः अमृत के स्रोत को देखते ही, वह अपने ऊपर नियन्त्रण न रख सका और उसने ऋषि के निषेध की परवाह न करते हुए अमृत के कुछ घूँट पी लिए।

इसके पश्चात् वह कौवा लौटकर ऋषि के समीप पहुँचा और उन्हें बताया कि मैं अमृत के स्रोत का पता लगा आया हूँ, वह अमुक स्थान पर है। साथ ही यह भी कह दिया कि प्यास से विवश एवं गन्ध से आकर्षित हो जाने के कारण मैंने आपके निषेध के बावजूद भी उस अमृत से कुछ घूंट पी लिए हैं।

कौवे की बात सुनकर ऋषि ने कहा, 'हे कौवे तूने अमृत के स्रोत का पता लगा लिया, यह तो ठीक रहा, परन्तु मेरे निषेध के बावजूद भी तूने उसे अपनी चोंच से अपवित्र कर दिया, यह अच्छा नहीं किया। ऐसी स्थिति में मैं तुझे श्राप देता हूँ कि आज से तू प्राणीमात्र के लिए घृणा एवं अविश्वास का पात्र बन जाएगा। तेरी अन्य सजातियों की भी यही दशा होगी। संसार का कोई भी प्राणी तुझसे प्रेम नहीं करेगा, यहाँ तक कि अन्य नभचर पक्षी भी तुझसे दूर ही रहा करेंगे। तू अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करेगा, अतः सब लोग तेरी निन्दा करेंगे। चूँकि तूने अमृत का पान कर लिया है, अतः तेरी स्वाभाविक मृत्यु नहीं होगी और तू जरा-व्याधि से भी मुक्त रहेगा, परन्तु मृत्यु का कारण दुर्घटनाएँ हुआ करेंगी।

यह कहकर ऋषि ने उस गौर वर्ण कौवे को अपने हाथ में पकड़ कर,

समीप स्थित एक लोटे में, जिसमें किसी अन्य कार्य के लिए काले रंग का द्रव्य भरा हुआ था, डुबा दिया। उस काले रंग के द्रव्य में डुबकी लगाने के कारण श्वेत वर्ण कौवे के शरीर का रंग काला हो गया। गर्दन तथा पेट के जिस भाग को मुनि ने अपने हाथ से पकड़ रखा था, उस भाग पर काले रंग के पानी का प्रभाव अधिक नहीं पड़ा, इसीलिए उतना हिस्सा कुछ-कुछ सफेदी लिए हुए हल्के काले रंग का रहा तथा शेष भाग पूर्णरूपेण काला हो गया। उसी दिन से सम्पूर्ण कौवा जाति का रंग श्वेत से बदलकर काला हो गया और तभी से वह जरा-व्याधि से वंचित रहकर केवल दुर्घटना का शिकार होकर ही मृत्यु को प्राप्त होता है। उसी समय से कौवा जाति अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण करती है और संसार के सभी प्राणी उसे घृणा एवं तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं।

कहा जाता है कि उस ऋषि के शाप के कारण ही मनुष्य इसके मांस को भी घृणित एवं अभक्ष्य मानकर उसका सेवन नहीं करते। केवल मनुष्य ही क्यों, अन्य कोई पशु-पक्षी भी जीवित अथवा मृत कौवे के मांस का भक्षण नहीं करता है।

कौवों में जातीय एकता अन्य पशु-पक्षियों की तुलना में बहुत अधिक पाई जाती है। यदि किसी एक कौवे पर संकट आ जाए अथवा कोई कौवा किसी दुर्घटना का शिकार हो जाए तो पलभर में ही सैकड़ों-हजारों कौवे उसके समीप घिर कर जोर-जोर से कांव-कांव करना आरम्भ कर देते हैं।

यद्यपि देखने में कौवे की दो आँखें मालूम होती हैं, परन्तु यथार्थ में उन दोनों आँखों की पुतली एक ही होती है, जिसे वह अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक इस आँख से उस आँख के गोलक में घुमा लेता है। इसी कारण कुछ लोग कौवे को 'काना पक्षी' भी कहते हैं।'

इसकी आवाज अत्यन्त कर्कश होती है और इसकी बोली 'कांव-कांव' की ध्वनि उत्पन्न करती है। यह लगातार बहुत देर तक अपनी 'कांव-कांव' की आवाज में चिल्लाता रहता है। यह पक्षी बहुत तेज उड़ान भरता है। अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण करता है तथा अत्यन्त चालाक होता है। इसीलिए इसे 'नीच' अथवा 'शूद्र' पक्षी की कोटि में रखा जाता है।

कौवे से सम्बन्धित अनेक प्रकार की कहावतें और मुहावरे समाज में प्रचलित हैं, जैसे चालाक मनुष्य को कौवे की ही उपमा दी जाती है। इस पक्षी की चालाकी का एक उदाहरण यह भी पाया जाता है कि मादा कौवा जब अण्डा देने को होती है, तब वह अपने अण्डे कोयल के घोंसले में रख आती है। कोयल और कौवे के अण्डे शक्ल-सूरत में एक जैसे होते हैं अतः बेचारी मादा कोयल कौवों के अण्डों को अपना अण्डा समझकर सेती रहती है। जब अण्डे फूट कर बच्चे निकलते हैं तो वे भी शक्ल-सूरत और आकार-प्रकार में कोयल के बच्चों जैसे ही होते हैं। बेचारी कोयल उन बच्चों को स्वयं दाना खिलाकर पालती है, परन्तु जब उन बच्चों के पंख निकल आते हैं और वे उड़ने लायक हो जाते हैं, तब वे कोयल के घोंसले से निकलकर अपनी बिरादरी में जा मिलते हैं और तब बेचारी कोयल अपनी भूल पर पछताती हुई रह जाती है।

कौवे की मृत्यु दुर्घटना से ही होती है। जैसे ओले अथवा बिजली के गिरने से कहीं दब जाने अथवा कट जाने से, बिजली के तार से करंट का स्पर्श हो जाने आदि कारणों के द्वारा। किसी रोग अथवा वृद्धावस्था के कारण कौवे को मरते हुए किसी ने नहीं देखा।

कौवे का उपयोग

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि कौवे को केवल मनुष्य ही नहीं, अपितु अन्य पशु-पक्षी भी घृणित एवं निन्दित प्राणी समझ कर, उसके मांस तक का सेवन भी नहीं करते। संक्षेप में, जो लोग नहीं जानते वे कौवे को सृष्टि का अभागा और व्यर्थ का प्राणी अनुभव करते हैं। परन्तु जैसी कि कहावत है कि ईश्वर ने संसार में किसी भी प्राणी को अनुपयोगी बनाकर उत्पन्न नहीं किया, यह बात दूसरी है कि हम इसके यथार्थ उपयोग के विषय में अनभिज्ञ हों, उसी प्रकार कौवा भी वास्तव में अनुपयोगी अथवा व्यर्थ का प्राणी नहीं है।

विद्वानों ने बहुत कुछ अनुसंधान एवं अनुभवों के बाद जो निष्कर्ष निकाले हैं, उनमें कौवे की भी उपयोगिता प्रमाणित हुई है। उदाहरण के लिए

अच्छे-बुरे शकुन, भविष्य-ज्ञान, तान्त्रिक प्रयोग एवं चिकित्सा कार्यों में कौवे का महत्त्व प्रतिपादित हुआ है। इस पुस्तक में कौवे के महत्त्व से सम्बन्धित विभिन्न विषयों को संकलित किया गया है। जिज्ञासुओं को इन संकलित प्रयोगों के सम्बन्ध में अनुभव प्राप्त करके लाभ उठाने की आवश्यकता है।

कौवे की बोली

सामान्य रूप में कौवे के बोलने पर हमें 'कांव-कांव' की ध्वनि ही आती हुई प्रतीत होती है, परन्तु जो लोग पशु-पक्षियों की बोलियों का अध्ययन करने वाले हैं, उनका कहना है कि इस 'कांव-कांव' की ध्वनि में एक सम्पूर्ण भाषा का समावेश रहता है, जिसके द्वारा कौवा अपने मन की भावनाओं को अपने सजातियों तथा अन्य प्राणियों पर प्रकट करने का प्रयत्न करता है। जो मनुष्य उसकी बोली के रहस्य को समझ सकते हैं, वे उसके यथार्थ अर्थ को जान लेते हैं।

कहा जाता है कि नील नदी में जब बादशाह फरऊन का लश्कर डूबा था, उसकी भविष्यवाणी एक कौवे ने बहुत पहले ही कर दी थी। कोई तान्त्रिक, जो कौवे की बोली समझता था, एक दिन कौवे पर किसी तान्त्रिक प्रयोग को कर रहा था, उसी समय कौवे ने उसे यह बताया कि अमुक दिन शाह फरऊन का लश्कर नील नदी में डूब जाएगा। तान्त्रिक ने यह बात बादशाह के लोगों को बताई परन्तु उन्होंने उसे हँसी में उड़ा दिया। परन्तु ज़ब कुछ दिनों बाद यथार्थ में वैसी ही घटना घटी, तो लोगों को विश्वास करना पड़ा।

इसी प्रकार दास वंश के प्रथम बादशाह को बादशाहत मिलने की भविष्यवाणी भी एक कौवे ने ही की थी, ऐसा सुना जाता है। इस प्रकार यह पक्षी भविष्यवाणी करने वाला प्रसिद्ध है। कहते हैं कि इस पक्षी को भविष्य में घटने वाली घटनाओं का वर्षों पहले से ज्ञान हो जाता है।

भारतवर्ष में आमतौर पर यह विश्वास प्रचलित है कि यदि किसी दिन घर की मुंडेर पर बैठा हुआ कोई कौवा जोर-जोर से कांव-कांव शब्द करे, तो उस दिन या तो घर में किसी अतिथि का आगमन होता है अथवा किसी अन्य प्रकार से खर्च में वृद्धि होती है। इससे भी स्पष्ट है कि कौवा आने वाले

भविष्य के विषय में गृह स्वामी को सचेत कर जाता है।

कहते हैं कि यदि कौवे को बचपन से ही पाला-पोसा जाए और उसे उचित अहार देकर तोते की भाँति मनुष्य की बोली बोलना सिखा दिया जाए तो उस स्थिति में वह कौवा ऐसी-ऐसी भविष्यवाणियाँ करता है, जिन्हें सुनकर कोई भी मनुष्य आश्चर्यचकित हो सकता है।

ईराक निवासियों के विषय में कहा जाता है कि वे लोग कौवे द्वारा भविष्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे पकड़ कर किसी ताँबे के तार वाले पिंजड़े में बन्द कर देते हैं तथा दिन में दाना खिलाकर रात्रि के समय दूध और घी के साथ एक विशेष प्रकार का पौष्टिक आहार खिलाते हैं। सूखे अंगूर के दाने खिलाने की बात भी सुनी जाती है। इस प्रकार दो-तीन मास में वे कौवे को हिला लेते हैं। तदुपरान्त किसी एक रात को वे उसे अंगूरी शराब पिला देते हैं, जिसके नशे में आकर वह एक विचित्र प्रकार का नृत्य करता है तथा अनेक प्रकार की बोलियाँ बोलता है। उसी समय वह अपने हृदय के भीतर छिपे हुए रहस्यों को उगलना आरम्भ कर देता है तब पक्षियों की बोली समझने के विशेषज्ञ लोग, उसकी भाषा का मर्म समझ कर उसके द्वारा की हुई भविष्यवाणियों को नोट कर लेते हैं। समय आने पर जब उनका परीक्षण किया जाता है, तब वे शत प्रतिशत सत्य सिद्ध होती हैं।

कौवे को विभिन्न अवस्थाओं में लाने की विधियाँ

कौवे को विचित्र अवस्थाओं में लाकर, उस स्थिति में उसकी बोली द्वारा भविष्य ज्ञान प्राप्त करने की कुछ विधियाँ आगे लिखे अनुसार बताई जाती हैं—

१. किसी कौवे को पकड़कर तीन दिन और तीन रात तक पिंजड़े में बन्द रखें। इस बीच उसे खाने के लिए उबले हुए चावल, गेहूँ और पानी दें। चौथे दिन प्याज के छह माशे, अर्क में चार रत्ती कश्मीरी केशर, एक रत्ती कस्तूरी तथा छह माशे शहद मिलाकर इन सब वस्तुओं को शुद्ध पानी में घोलकर पिला दें। इस मिश्रण के पिलाने पर कौवा एक प्रकार के नशे में आ जाता है और

अपने मुँह से अनेक प्रकार की बोलियाँ बोलता है, जिनमें भविष्यवाणियाँ भी होती हैं।

२. गेहूँ के आटे की रोटी में गाय का शुद्ध घी तथा चीनी मिलाकर कौवे को भरपेट खिला दी जाए, तो वह खाने के एक घण्टे बाद प्रसन्नतापूर्वक उड़ता हुआ आबादी से बाहर किसी वृक्ष पर जा बैठता है और कुछ-कुछ तोते जैसी बोली में आधा घण्टे तक भविष्यवाणियाँ करता रहता है। तदुपरान्त वह मूर्च्छित हो जाता है। फिर एक घण्टे तक नींद में बेहोश सा रहने के बाद अपनी स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त होकर अन्यत्र उड़ जाता है।

३. कीकर का गोंद एक माशा, कपूर आधा माशा और चीनी का बूरा छह माशा—इन सब वस्तुओं को पीसकर एक तोले पानी में मिलाकर शर्बत सा बना लें। फिर उस शर्बत में खमीरी रोटी के टुकड़े भिगोकर कौवे को खिला दें तो वह बुल-बुल जैसी मीठी आवाज में बहुत देर तक बोलता रहता है, जिसमें अनेक प्रकार की भविष्यवाणियाँ भी होती हैं।

४. जायफल चार माशा, हल्दी दो रत्ती और कस्तूरी चार रत्ती—इन सबको वेदमुश्क के अर्क में पीसकर उसमें एक छटांक चीनी मिलाकर शर्बत बना लें। फिर उसमें गेहूँ के आटे की रोटियों के टुकड़े डालकर भीग जाने पर उन्हें इस तरह मसल दें कि हलुआ सा हो जाए। फिर वह हलुवा सायंकाल के समय कौवे को खिलाकर, उसे पिंजड़े में बन्द कर दें। दो घण्टे बाद कौवे को पिंजड़े में से निकालकर एक ऐसे बन्द कमरे में छोड़ दें, जिसमें हल्का-हल्का प्रकाश हो। स्वयं किसी शीशे की खिड़की में से कमरे के भीतर का दृश्य देखें अथवा कमरे के भीतर ही बिछी हुई किसी चारपाई पर लेटकर देखें तो ज्ञात होगा कि कुछ समय तक चकित सा रहने के उपरान्त वह कमरे में रखी हुई किसी वस्तु अथवा आले (ताख) आदि में बैठ गया है और मस्ती में आकर कुछ गुनगुना रहा है। साथ ही वह विचित्र प्रकार से नृत्य

भी करता रहेगा। कुछ देर और बीत जाने पर वह उतार-चढ़ाव के साथ विभिन्न प्रकार की बोलियाँ बोलने लगेगा, जिसमें अनेक रहस्यों का उद्घाटन भी होगा।

५. भंग की पत्तियों को पानी के साथ घोंटकर छान लें। फिर उस पानी में चने के बेसन को गूँदकर, उस बेसन की तिल के तेल में पकौड़ियाँ तल लें। उन पकौड़ियों को कौवे को खिला दें। कुछ देर बाद कौवा झूमता हुआ उड़कर किसी वृक्ष पर बैठेगा और कोयल जैसी बोली में गाता हुआ अनेक प्रकार की भविष्यवाणियाँ करना आरम्भ कर देगा।

६. धनिये का छिलका उतारकर उसके मगज को भैंस के दूध में खीर की भाँति गाढ़ा पकाकर बर्फी की तरह जमा दें फिर उसके टुकड़े काटकर कौवे को खिला दें। यदि धनिये को दूध में उबलते समय, पीला रंग लाने के लिए थोड़ी सी पीसी हुई हल्दी भी डाल दी जाए तो अधिक अच्छा होगा। दूध में चीनी डालना भी आवश्यक है। इन टुकड़ों को कौवे को खिला दें तो वह कुछ देर बाद ही चिड़िया की भाँति फुदक-फुदक कर नाचना तथा बोलना आरम्भ कर देगा। उस समय उसके द्वारा भविष्यवाणियाँ भी कर दी जाएँगी।

कौवे से अन्य प्रकार की बोलियाँ बुलवाना

कौवे की स्वाभाविक आवाज के अतिरिक्त यदि उससे अन्य प्रकार की बोलियाँ सुनने की इच्छा हो तो निम्नलिखित प्रयोगों को काम में लाना चाहिए—

१. मक्की के दानों को थूहर के दूध में चौबीस घण्टे तक भिगोकर, छाया में सुखा लें फिर उन्हें कौवे को खिला दें तो वह पागलों की भाँति इधर-उधर चक्कर काटता हुआ मेंढक जैसी बोली बोलना आरम्भ कर देगा।

२. भेड़ के सूखे हुए रक्त को गेहूँ के आटे में मिलाकर उसकी रोटी

बनाकर कौवे को खिला दें तो खाने के आधा घण्टे बाद ही वह कौवा भेड़ जैसी आवाज में बोलने लगेगा।

३. किसी कौवे को जायफल का पानी पिला दिया जाए तो वह थोड़ी देर बाद मुर्गे की तरह अन्य कौवों से लड़ना और एक विचित्र प्रकार की आवाज में गुर्राना प्रारम्भ कर देगा। वह मीलों तक अन्य कौवों का पीछा करता चला जाएगा और थक जाने पर किसी वृक्ष पर जा बैठेगा। इस समय उसमें घण्टों तक उड़ने की शक्ति नहीं रहेगी।

४. यदि किसी कौवे को बाज के पोते का पानी पिला दिया जाए तो वह थोड़ी देर बाद बाज की तरह कठोर स्वर में बोलना तथा उसी तरह उड़कर अन्य छोटे-मोटे पक्षियों पर झपट्टा मारना आरम्भ कर देगा परन्तु उन पक्षियों को पकड़ लेने के बाद छोड़ दिया करेगा और स्वयं तेजी से आगे की ओर उड़ता चला जाएगा। जब बहुत थक जाएगा तब वह मूर्च्छित होकर किसी स्थान पर गिर जाएगा और एक घण्टे बाद ही उठ सकेगा।

५. बरगद के रस में मंजीठ की जड़ को घिसकर, उसमें चील के मांस का कीमा मिला दें। उस कीमे को किसी कौवे को खिला दें तो वह चील के समान बोलना तथा चील के घोंसलों में घुसना आरम्भ कर देगा। लगभग दो घण्टे तक इसकी यही अवस्था बनी रहेगी।

६. ईसबगोल की भूसी को भेड़ के दूध में डालकर खीर पकाएँ उसमें शक्कर के स्थान पर शहद मिलाकर थोड़ा सा गुलाब जल डाल दें फिर सिंघाड़े के आटे की रोटी बनाकर उस रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े करें तथा उन टुकड़ों को उक्त खीर में डालकर किसी कौवे को खिला दें। टुकड़ों को खाते ही वह कौवा कबूतर जैसी चाल चलता हुआ उसी तरह की बोली बोलने लगेगा तथा रात्रि में शयन करने के लिए किसी कबूतर के घोंसले में ही जा पहुँचेगा यदि वहाँ किसी कबूतर को देखेगा तो उससे लड़ने

लगेगा फिर वहाँ से लड़कर किसी दूसरे कबूतर के घोंसले में चला जाएगा। तात्पर्य यह कि रात भर इसी प्रकार करता रहेगा और कहीं ठहर नहीं पाएगा। अन्त में जब पूर्वोक्त खाद्य का प्रभाव दूर हो जाएगा तब वह अपने ठिकाने की ओर उड़ जाएगा।

७. काले साँप के कच्चे मांस को नारियल के तेल में तलकर कौवे को खिला देने से कौवा अन्धा हो जाएगा। उस समय उसकी बोली छिपकली जैसी होगी उसी स्थिति में यदि उसे लहसुन का अर्क पिला दिया जाए तो आँखें ज्यों की त्यों ठीक हो जाएगी और अपनी स्वाभाविक आवाज में कांव-कांव करता हुआ उड़ जाएगा, मरेगा नहीं।

८. शीशम के पत्तों का एक तोला रस निकालकर उसमें दो माशे भीमसेनी कपूर तथा छह माशे नींबू का रस मिलाकर दही में डाल दें वह दही किसी कौवे को खिला दें तो वह मनुष्य की तरह छींकना आरम्भ कर देगा तथा उसकी आवाज ऊँट जैसी हो जाएगी।

कौवे की विभिन्न बोलियों से भविष्य ज्ञान

सामान्यतः कौवे की बोली का कांव-कांव शब्द ही सुनाई देता है परन्तु यदि ध्यानपूर्वक सुना जाए तो उस कांव-कांव ध्वनि में भी स्पष्ट अन्तर जान पड़ता है। उस अन्तर के अनुसार कोवे की बोलियों से भविष्य का ज्ञान नीचे लिखे अनुसार बताया जाता है—

१. यदि कौवा 'क्' शब्द का उच्चारण करे तो विशेष लाभ होने की सम्भावना समझनी चाहिए।
२. यदि कौवा 'क्रेन-क्रेन' शब्द बोले तो किसी सुन्दर स्त्री से संयोग होने की सम्भावना होती है।
३. यदि कौवा 'कोल-कोल' शब्द का उच्चारण करे तो कहीं से अन्न के भण्डार की प्राप्ति होती है।
४. यदि कौवा 'क्रोन-क्रोन' शब्द बोले तो किसी मृतात्मा के स्वप्न

में दर्शन होते हैं।

५. यदि कौवा 'क्रोलन-क्रोलन' शब्द बोले तो सुख होने की आशा की जा सकती है।
६. यदि कौवा 'क्लेतन-क्लेतन' शब्द का उच्चारण करे तो शीघ्र वर्षा होने की सम्भावना रहती है।
७. यदि कौवा 'क्रोतन-क्रोतन' शब्द बोले तो किसी स्थान की लड़ाई का भेद ज्ञात होता है।
८. यदि कौवा 'कीं-कीं' शब्द का उच्चारण करे तो सभी सुखों का नाश समझना चाहिए।
९. यदि कौवा 'क्लीन-क्लीन' शब्द बोले तो किसी आदमी की मृत्यु का समाचार मिलता है।
१०. यदि कौवा 'कोइन-कोइन' शब्द का उच्चारण करे तो किसी राजा की मृत्यु का समाचार मिलता है।
११. यदि कौवा 'कुइन-कुइन' बोले तो धन के नष्ट होने का समाचार सुनने के कारण हार्ट फेल हो जाने की सम्भावना रहती है।

कौवे का विभिन्न घड़ियों में बोलने का फल

'काक चरित्र' के अनुसार एक समय शेषनाग ने धनुर्धर अर्जुन से प्रश्न किया कि किस समय कौवा किस बोली में बोले उसका क्या फल होता है, यह आप मुझे बताने की कृपा करें। उस समय अर्जुन ने दिन के घड़ी प्रमाणानुसार कौवे की बोली के शुभाशुभ फल का जो वर्णन किया, उसे आगे दिया जा रहा है—

पहली घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि प्रातःकाल की पहली घड़ी में कौवा 'अय-अय' शब्द का उच्चारण करे तो सुनने वाले को यह समझ लेना चाहिए कि उसका वह दिन सुख पूर्वक व्यतीत होने की बात कह रहा है।

दूसरी घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि दो घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा अग्नि कोण की ओर 'अय-अय'

शब्द का उच्चारण करे तो इस प्रकार समझना चाहिए।

यदि ऊपर की ओर मुँह करके बोल रहा है तो शोक का कोई कारण उपस्थित होगा और दूर देश से शोक समाचार प्राप्त होगा। परन्तु यदि नीचे की ओर मुँह करके बोल रहा हो तो पुत्र शोक होता है।

तीसरी घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि तीन घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा दक्षिण दिशा में मुँह करके 'मुय-मुय' शब्द का उच्चारण करे तो जिस मकान पर बैठकर वह बोल रहा होगा, यह समझना चाहिए कि वह गृहस्वामी को अकस्मात ही धन की प्राप्ति होने की बात कह रहा है।

चौथी घड़ी में कौवे का बोलने का फल

यदि चार घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा नैऋत्यकोण में मुँह करके 'मुय-मुय' शब्द का उच्चारण करे तो चोर अथवा अग्नि का भय होता है। यदि ऊपर की ओर मुँह करके बोल रहा हो तो राज भय होता है और यदि नीचे की ओर मुँह करके बोल रहा हो तो अन्य प्रकार का भय होता है।

पाँचवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि पाँच घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पश्चिम की ओर मुँह करके 'अहा-अहा' शब्द का उच्चारण करे तो उस दिन धन की प्राप्ति होती है।

छटवीं घड़ी में कौवे का बोलने का फल

यदि छह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पश्चिम दिशा में मुँह करके 'कहा-कहा' शब्द का उच्चारण करे तो उस दिन सभी इच्छित कार्य सिद्ध होते हैं।

सातवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि सात घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा 'अहे-अहे' शब्द का उच्चारण करे तो किसी रोग से मृत्यु होती है और यदि 'जा-जा' शब्द करे तो कोई दूसरी ही बात सुनने को मिलती है।

आठवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि आठ घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा ईशान कोण से 'हा-हा' शब्द करे तो कहीं से मृत्यु की सूचना प्राप्त होती है।

नवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि नौ घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा मस्तक के ऊपर उड़ता हुआ 'हा-हा' शब्द करे तो उस दिन प्रार्थना की बात सुनने में आती है।

दसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि दस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा 'आवा-आवा' ध्वनि का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि कोई शुभ सन्देश प्राप्त होगा।

ग्यारहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि ग्यारह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा अग्नि कोण में 'भज-भज' ध्वनि का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि वह पुत्र उत्पन्न होने की सूचना दे रहा है।

बारहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि बारह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा वायु कोण में 'जय-जय' ध्वनि का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि वह कोई शोक की बात कह रहा है।

तेरहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि तेरह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा नैऋत्य कोण में 'का-का' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह किसी बड़े दुःख की बात कह रहा है।

चौदहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि चौदह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा उत्तर दिशा में 'कोवा-कोवा' ध्वनि करे तो यह समझना चाहिए कि वह शत्रु से भय प्राप्त होने की बात कह रहा है।

पन्द्रहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि पन्द्रह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा ईशान कोण में 'जा-जा' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह महान् दुःख प्राप्त होने की बात कह रहा है।

सोलहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि सोलह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पूर्व दिशा में 'कौवा-कौवा' ध्वनि करे तो यह समझना चाहिए कि वह मित्र से भेंट होने की बात कह रहा है।

सत्रहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का मन्त्र

यदि सत्रह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा दक्षिण दिशा में 'आय-आय' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह बड़े दुःख की बात कह रहा है।

अठारहवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि अठारह घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा वायु में 'खाबा-खाबा' ध्वनि करे तो यह समझना चाहिए कि वह किसी बड़े काम को पूरा होने की बात कह रहा है।

उन्नीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि उन्नीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पूर्व दिशा में 'महा-महा' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह विदेश गमन की बात कह रहा है।

बीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि बीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा उत्तर दिशा की ओर मुँह करके 'अय-अय' ध्वनि का उच्चारण करे तो धन-लाभ होने की बात कह रहा है।

इक्कीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि इक्कीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा सिर के ऊपर मंडराता हुआ 'सा-सा' ध्वनि करे तो यह समझना चाहिए कि उस मनुष्य को पृथ्वी का लाभ होगा।

बाईसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि बाईस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पूर्व दिशा की ओर 'आका-आका' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह किसी अपूर्व वस्तु के लाभ की बात कह रहा है।

तेईसवी घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि तेईस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा अग्नि कोण में 'अद्वय-अद्वय' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह आनन्द प्राप्त होने की बात कर रहा है।

चौबीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि चौबीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा दक्षिण दिशा 'ओंवा-ओंवा' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि कौवा अकाल पड़ने की बात कह रहा

है।

पच्चीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि पच्चीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा नैऋत्य कोण में 'खाये-खाये' शब्द का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि वह सर्प से भय प्राप्त होने की बात कह रहा है।

छब्बीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि छब्बीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पश्चिम दिशा में 'आहा-आहा' ध्वनि का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि वह सब ओर से लाभ होने की बात कह रहा है।

सत्ताईसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि सत्ताईस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा उत्तर दिशा के कौने से 'आका-आका' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह उत्पन्न सुख प्राप्त होने की बात कह रहा है।

अट्ठाईसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि अट्ठाईस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा ईशान कोण में 'सा-सा' ध्वनि का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि वह मनोकामना सिद्ध होने की बात कह रहा है।

उन्तीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि उन्तीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा मस्तक के ऊपर मंडराता हुआ 'आँखा-आँखा' शब्द करे तो यह समझना चाहिए कि वह सुख प्राप्त होने की बात कह रहा है।

तीसवीं घड़ी में कौवे के बोलने का फल

यदि तीस घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पृथ्वी पर बैठकर 'आवा-आवा' ध्वनि का उच्चारण करे तो यह समझना चाहिए कि वह दुःख प्राप्त होने की बात कह रहा है।

पहर के अनुसार कौवे के शब्द का फलाफल

एक दिन के चार पहर होते हैं। उनमें से किसी भी पहर में किसी भी

दिशा में बैठकर कौवे के बोलने का फलाफल अलग-अलग होता है। उसे नीचे लिखे अनुसार बताया गया है।

पहले पहर में कौवे के बोलने का फल

दिन के पहले पहर में कौवा यदि पूर्व अथवा पश्चिम दिशा में बैठकर बोले तो उसके फलस्वरूप मित्रों से भेंट, खोई हुई वस्तु की प्राप्ति, शुभ सूचना की प्राप्ति अथवा शत्रु की पराजय होती है।

यदि उत्तर दिशा अथवा उत्तर-पूर्व दिशा के कोण में बोले तो आग लगती है अथवा कोई अन्य दुर्घटना होती है।

यदि उत्तर और पश्चिम दिशा के कोण में बोले तो लाभ होता है तथा कार्य में सफलता मिलती है।

यदि दक्षिण दिशा की ओर बोले तो कोई अशुभ समाचार प्राप्त होता है।

यदि पश्चिम और दक्षिण के कोण में बोले तो मित्र से भेंट होती है।

यदि पूर्व और दक्षिण के कोण में बोले तो बीमारी आती है।

दूसरे पहर में कौवे के बोलने का फल

दिन के दूसरे पहर में कौवा यदि पूर्व दिशा में बोले तो घर में किसी अतिथि का आगमन होता है अथवा चोरी होती है।

यदि पूर्व और दक्षिण दिशा के कोण में बोले तो झगड़ा होता है।

यदि दक्षिण दिशा में बोले तो मित्र से भेंट होती है।

यदि दक्षिण और पश्चिम दिशा के कोण में बोले तो आरोग्य लाभ होता है अथवा मित्र या किसी स्त्री से भेंट होती है अथवा स्वादिष्ट भोजन मिलता है।

यदि उत्तर दिशा में बोले तो धन मिलता है एवं शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।

यदि पूर्व और उत्तर के कोण में बोले तो चोरी का भय होता है।

तीसरे पहर में कौवे के बोलने का फल

दिन के तीसरे पहर में कौवा यदि पूर्व दिशा में बोले तो वर्षा होती है। चोर का भय होता है अथवा शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।

पूर्व और दक्षिण के कोण में बोले तो झगड़ा होता है अथवा कोई अशुभ सूचना मिलती है अथवा अप्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

यदि दक्षिण दिशा में बीले तो झगड़ा होता है अथवा अशुभ समाचार मिलता है।

यदि पश्चिम और दक्षिण के कोण में बोले तो बीमारी होती है अथवा वर्षा होती है।

यदि पश्चिम दिशा में बोले तो शुभ सूचना अथवा मिष्ठान्न की प्राप्ति होती है। शत्रु से छुटकारा मिलता है, नया नौकर मिलता है अथवा मनोभिलाषित कार्य पूरा होता है।

यदि पश्चिम और उत्तर के कोण में बोले तो वर्षा और आँधी आती है अथवा अशुभ समाचार मिलता है।

यदि उत्तर दिशा में बोले तो शुभ सूचना प्राप्त होती है।

यदि उत्तर और पश्चिम की ओर बोले तो रोग से छुटकारा मिलता है।

यदि ऊपर मंडराता हुआ बोले तो भोजन की प्राप्ति होती है।

चौथे पहर में कौवे के बोलने का फल

दिन के चौथे पहर में कौवा यदि पूर्व दिशा में बोले तो धन तथा उच्च पद की प्राप्ति होती है।

यदि पूर्व और दक्षिण के कोण में बोले तो शुभ सूचना मिलती है, मित्रों से भेंट होती है अथवा बीमारी होती है।

यदि दक्षिण दिशा में बोले तो शत्रु का भय अथवा बीमारी होती है।

यदि दक्षिण-पश्चिम के कोण में बोले तो मित्र से भेंट होती है अथवा कहीं से भय प्राप्त होता है अथवा चोरों से झगड़ा होता है।

यदि पश्चिम दिशा में बोले तो मित्र से भेंट अथवा कोई अन्य लाभ होता है।

यदि पश्चिम और उत्तर के कोण में बोले तो किसी स्त्री से भेंट अथवा यात्रा में सुख की प्राप्ति होती है अथवा वर्षा होती है।

यदि उत्तर दिशा में बोले तो किसी सुन्दर स्त्री से भेंट होती है अथवा यात्रा करनी पड़ती है।

यदि उत्तर और पूर्व के कोण में बोले तो मित्रों से भेंट होती है अथवा किसी श्रेष्ठ वस्तु की प्राप्ति होती है।

यदि कहीं जाते समय कौवा बोले तो बीमारी होती है, यहाँ तक कि मृत्यु भी हो सकती है।

यदि लकड़ी पर बैठकर कौवा बोले तो शत्रुओं तथा बीमारी से छुटकारा मिलता है।

यदि ऊपर मंडराता हुआ बोले तो लाभदायक है तथा कोई शत्रु समाचार मिलता है।

विभिन्न अवसरों पर कौवे की बोली का फल

विभिन्न समयों तथा अवसरों पर कौवे की बोली का फलाफल भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है। विद्वानों ने उसे नीचे लिखे अनुसार बताया है—

१. प्रातःकाल पूर्व दिशा की ओर कौवा बोले तो स्त्री तथा हीरे-मोती आदि का लाभ होता है एवं मन की चिन्ताएँ दूर होती हैं।
२. प्रातःकाल पूर्व और दक्षिण के कोण में कौवा बोले तो शत्रु का नाश होता है।
३. प्रातःकाल दक्षिण दिशा की ओर कौवा बोले तो कष्ट प्राप्त होता है।
४. प्रातःकाल पश्चिम तथा दक्षिण के कोण में कौवा बोले तो राज दण्ड प्राप्त होता है।
५. प्रातःकाल पश्चिम दिशा की ओर कौवा बोले तो किसी स्त्री द्वारा लाभ होता है। अन्न तथा वस्त्र की प्राप्ति होती है अथवा किसी के आगमन का समाचार मिलता है।
६. प्रातःकाल पूर्व और उत्तर के कोण में कौवा बोले तो दुःख प्राप्त होता है अथवा किसी दूसरे की अचल सम्पत्ति मिलती है।
७. तीर्थ यात्रा के लिए जाते समय यदि कौवा बोले तो यात्रा में सब प्रकार का सुख प्राप्त होता है।
८. यात्रा के लिए प्रस्थान करते समय यदि कौवा यात्री के घर की

ओर मुँह उठाकर अच्छे स्वरों में बोले तो यह समझना चाहिए कि मार्ग में ही किसी ऐसे मेहमान से भेंट होगी, जो यात्री के घर आ रहा होगा।

९. यदि यात्रा के समय कौवा पागल कुत्ते की भाँति बुरी तरह चिल्लाना आरम्भ करे तो उसे अत्यन्त अशुभ समझना चाहिए। उस स्थिति में यात्री को रोग एवं मृत्यु का भय बना रहता है।

१०. राजदरबार में अथवा किसी राज्याधिकारी से भेंट करने के लिए जाते समय घर से बाहर निकलते ही पूर्व दिशा की ओर कोई कौवा बोल उठे अथवा बोलता हुआ उड़ जाए अथवा पश्चिम की ओर उड़ जाए तो उस व्यक्ति को अपने कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

११. उपर्युक्त समय यदि कौवा पश्चिम की ओर उड़ता हुआ उत्तर की ओर मुड़ जाए तो काम होगा तो अवश्य, परन्तु विलम्ब से होगा।

१२. उपर्युक्त समय यदि कौवा दक्षिण की ओर उड़ जाए तो सफलता नहीं मिलेगी।

१३. उपर्युक्त अवसर पर यदि पश्चिम दिशा की ओर कोई कौवा बोल उठे अथवा बोलता हुआ उड़ जाए तो जिस कार्य के लिए वह व्यक्ति जा रहा होगा, वह काम उसके पहुँचने से पहले ही पूरा होगा ऐसा समझ लेना चाहिए।

१४. उपर्युक्त स्थिति में यदि कौवा पश्चिम से उड़कर उत्तर की ओर चला जाए तो वह काम किसी अन्य व्यक्ति के पक्ष में सम्पन्न हो चुका होगा, फिर भी अधिकारी उस व्यक्ति को भी सन्तुष्ट तथा सम्मानित करने का प्रयत्न अवश्य करेगा।

१५. उपर्युक्त स्थिति में यदि कौवा उत्तर दिशा में बैठा हुआ बोले अथवा उत्तर दिशा की ओर उड़ जाए तो भी कार्य में सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

१६. उपर्युक्त स्थिति में यदि कौवा दक्षिण दिशा में बोले तो काम का

होना कठिन अथवा असम्भव रहेगा।

१७. उपर्युक्त स्थिति में यदि कौवा दक्षिण से पूर्व दिशा की ओर चला जाए तो काम होगा तो अवश्य परन्तु वह कुछ समय बाद ही हो पाएगा।

१८. यदि प्रातःकाल के समय कौवा आकाश की ओर मुँह उठाकर जोर-जोर से बोले तो यह समझना चाहिए कि उस वर्ष में बीमारियाँ कम होंगी तथा साग-सब्जी एवं फल-फूलों की अधिकता रहेगी।

१९. यदि मध्याह्न काल में कौवा आकाश की ओर मुँह उठाकर जोर-जोर से बोले और उस समय धूप अधिक तेज न हो तो यह समझना चाहिए कि इस वर्ष वर्षा ठीक नहीं होगी, इस कारण अन्न, तेल तथा दूध की मात्रा में कमी तथा मूल्य में वृद्धि होगी अलबत्ता लाल रंग की वस्तुएँ कुछ सस्ती हो जाएँगी।

२०. यदि सायंकाल में सूर्यास्त के समय जबकि धूप का जो बिल्कुल भी न हो, कोई कौवा आकाश की ओर सिर उठाकर जोर-जोर से बोले तो यह समझ लेना चाहिए कि इस वर्ष वर्षा बहुत अधिक होगी। अन्न, वस्त्र, दूध, दही, घी आदि का उत्पादन खूब होगा तथा ये सभी वस्तुएँ सस्ती भी रहेंगी। कहीं-कहीं हैजा, ज्वर तथा आमाशय के रोगों का प्रकोप होगा, परन्तु कुल मिलाकर प्रजा सुखी रहेगी।

कौवे की छाया से शुभाशुभ का ज्ञान

दिन में जिस समय कोई कौवा बोल रहा हो, उस समय एक सात अंगुल लम्बे तिनके के टुकड़े को लेकर, उसकी छाया को नाप लें। जो भी नाप हो उसको दूना कर लें। उस दूने नाप में सात की संख्या का भाग दें। जो शेष बचे उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

१. यदि एक शेष बचे तो श्रेष्ठ भोजन की प्राप्ति होगी।

२. यदि दो बचे तो गाँव में किसी के घर में बालक का जन्म होगा।

३. यदि तीन बचे तो घर में किसी की मृत्यु होगी।
४. यदि चार बचे तो अग्नि का भय होगा अथवा कोई अन्य झंझट खड़ा हो जाएगा।
५. यदि पाँच बचे तो कहीं से किसी शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।
६. यदि छह बचे तो अथवा शून्य बचे तो यह समझ लेना चाहिए कि कोई शुभाशुभ नहीं होगा। कौवा वैसे ही बोल रहा है।

कौवे के स्पर्श का फल

यदि कौवे का शरीर के किसी अंग से स्पर्श हो जाए तो उसका फलाफल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

१. यदि कौवा मस्तक का स्पर्श करे तो धन की हानि होती है अथवा मृत्यु होती है।
२. यदि कौवा कमर अथवा कन्धे का स्पर्श करे तो रोग अथवा किसी अन्य अशुभ फल की प्राप्ति होती है।
३. यदि कौवा किसी सुहागिन स्त्री के मस्तक अथवा कन्धे पर बैठ जाए तो उसके पति अथवा पुत्र की मृत्यु हो जाती है।
४. यदि कौवा किसी युवा पुरुष के मस्तक का स्पर्श करे तो यह समझना चाहिए कि या तो उसे कोई भयानक बीमारी होगी अथवा सुख सौभाग्य नष्ट होगा।
५. यदि कौवा किसी क्वारी कन्या के मस्तक, सिर अथवा कन्धे का स्पर्श कर ले तो यह समझना चाहिए कि उस लड़की का विवाह तो शीघ्र हो जाएगा। परन्तु विवाह के पश्चात् उसका सुख सौभाग्य नष्ट हो जाएगा और पति के साथ निर्वाह होना कठिन रहेगा।
६. यदि मार्ग में चलते हुए कौवा कन्धे पर आकर बैठ जाए तो उस व्यक्ति को यह समझ लेना चाहिए कि शत्रु उस पर विजय प्राप्त करके रहेगा।
७. यदि कौवा पाँवों पर आकर गिर पड़े तो यह समझना चाहिए कि शत्रु या तो नष्ट हो जाएगा अथवा हार मान लेगा।

८. यदि कौवा किसी वस्तु को हाथ में से छीनने के लिए झपटे और वह छीनने में सफल भी हो जाए तो उस स्थिति में वह व्यक्ति यदि कोई मुकद्दमा लड़ रहा होगा, तो उसमें उसकी हार हो जाएगी। परन्तु छीनने में सफल न रहे तो विजय होने की बात समझनी चाहिए।
९. सूर्योदय से पूर्व मार्ग में चलते हुए यदि अचानक ही कोई कौवा आकर पाँवों पर गिर पड़े तो यह समझना चाहिए कि कोई बड़ी उपाधि, पदवी, नौकरी अथवा अन्य प्रकार की उन्नति प्राप्त होगी।

कौवे के शकुन और अशुकनों का वर्णन

कौवे के बैठने, बोलने, मंडराने, गिरने, देखने आदि कारणों से जो शकुन और अशकुन होते हैं, उन्हें नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

अतिथि के आगमन का शकुन

घर की दीवार अथवा मुंडेर पर एक या अधिक कौवे बैठकर जोर-जोर से कांव-कांव करे तो यह समझना चाहिए कि घर में अतिथियों का आगमन होने वाला है।

धन-धान्य की वृद्धि का शकुन

घर के किसी पानी भरे हुए बर्तन में प्रातःकाल के समय कौवे को उछालते हुए अथवा स्नान करते हुए दिखाई दें, तो यह समझ लेना चाहिए कि उस घर में लक्ष्मी की अत्यन्त कृपा होने वाली है अर्थात् वहाँ धन धान्य आदि किसी भी वस्तु की कमी नहीं रहेगी।

लक्ष्मी वृद्धि एवं सुख प्राप्ति का शकुन

जिस घर में कौवे प्रतिदिन आकर दाना पानी खाते पीते हों और प्रसन्न होकर जाते हों, वहाँ किसी प्रकार की कमी नहीं रहती। उस घर में धन-धान्य की वृद्धि होती है तथा सब लोग स्वस्थ बने रहते हैं।

संकटों के दूर होने का शकुन

यदि किसी घर में रखे हुए तेल के बर्तन में कौवा चोंच मारे तो यह

समझ लेना चाहिए कि उस घर से रोग, दु:ख, दरिद्रता आदि समस्त संकट दूर होने वाले हैं तथा सब प्रकार के सुखों का आगमन होने वाला है।

सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का शकुन

यदि किसी उड़ते हुए कौवे के मुँह से कोई श्वेत अथवा पीले रंग की मिठाई शरीर के ऊपर आ गिरे तो उस व्यक्ति को सुन्दर स्त्री की प्राप्ति होती है।

सफलता प्राप्ति का शकुन

यदि किसी व्यक्ति को मार्ग में चलते हुए ऐसा कौवा उड़ता दिखाई दे जो अपनी चोंच में किसी मीठे फल अथवा मिठाई को दबाए हुए पूर्व से पश्चिम, दक्षिण से उत्तर अथवा पश्चिम से पूर्व की ओर जा रहा हो तो उस व्यक्ति का काम बहुत जल्दी सफल होगा। परन्तु यदि कौवा अपनी चोंच में फल या मिठाई दबाए हुए उत्तर से दक्षिण की ओर जा रहा होगा तो सफलता देर से और परिश्रम से प्राप्त होगी।

सम्बन्ध पक्का होने का शकुन

यदि कौवा किसी मीठे फलदार वृक्ष के ऊपर बैठा हो और उसी वृक्ष के नीचे से उसी समय किसी लड़के अथवा लड़की का रिश्ता पक्का करने के लिए जाने वाला व्यक्ति गुजरे और कौवा बैठा रहे तो यह निश्चित समझना चाहिए कि वह रिश्ता अवश्य पक्का हो जाएगा। यदि कौवा उल्टी ओर को उड़ जाए तो उस स्थिति में उस व्यक्ति को तुरन्त ही अपने घर लौट जाना चाहिए और वहाँ जाकर थोड़े से भुने हुए चने लेकर, उन्हें अपने सिर से तीस बार उतारकर, पक्षियों को डाल देने चाहिए। इससे कौवे के उल्टी ओर उड़ने का दुष्प्रभाव दूर हो जाएगा। यह क्रिया करने के बाद फिर दूसरे दिन जाने पर रिश्ता पक्का हो जाता है।

रोगी का रोग दूर होने का शकुन

जिस घर में कोई व्यक्ति रोगी हो, उसी घर का कोई अन्य व्यक्ति यदि किसी नदी, नहर अथवा तालाब में किसी कौवे को पानी पीता हुआ देखे तो उसे चाहिए कि वह उसी स्थान के पानी में से थोड़ा सा पानी घर लाकर, उसकी कुछ बूँदें रोगी के ऊपर छिड़क दे तथा भिखारियों को कुछ पैसे बाँट

दे। यदि पैसे न हों तो थोड़े से चावल उबाल कर (भात बनाकर) उसमें थोड़ी सी खांड मिलकर किसी भिखारी को खिला दे तो रोगी का रोग शीघ्र दूर हो जाता है।

रोजगार प्राप्ति का शकुन

कोई व्यक्ति नौकरी अथवा व्यापार की तलाश में घर से बाहर निकले और उसे रास्ते में किसी स्थान पर गन्दगी (मल) के ऊपर बैठा हुआ ऐसा कौवा दिखाई दे जाए जो उस गन्दगी को खा रहा हो तो वह बहुत अच्छा शकुन होता है और उसे देखने वाले को नौकरी अथवा रोजगार की प्राप्ति शीघ्र हो जाती है।

सन्तान प्राप्ति का शकुन

विवाह-शादी के अवसर पर बाँटी जाने वाली मिठाई में से यदि कोई कौवा मिठाई का दाना लेकर उड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि उस नव-विवाहित दम्पत्ति को शीघ्र ही स्वस्थ, सुन्दर और दीर्घायु पुत्र की प्राप्ति होगी। यदि नमकीन वस्तु ले जाए तो पहले लड़की होगी।

पुत्र प्राप्ति का शकुन

यदि सन्ध्या के समय कौवा किसी विवाहित युवक अथवा युवती के मस्तक के ऊपर मंडराए तो यह समझ लेना चाहिए कि उसे शीघ्र ही पुत्र की प्राप्ति होगी।

विवाह होने का शकुन

प्रात:काल के समय कौवा किसी क्वारी कन्या अथवा क्वारे युवक के मस्तक के ऊपर से उड़ता हुआ निकल जाए तो यह समझ लेना चहिए कि उसका विवाह शीघ्र हो जाएगा।

धन प्राप्ति का शकुन

यदि शनिवार के दिन प्रात:काल सबसे पहले मकान के ऊपर अकेला कौवा बारम्बार 'कांव-कांव' बोलता हुआ दिखाई दे और रोकने से भी न रुके तथा उड़ा देने पर फिर वापिस आ जाए और पुन: बोलने लगे तो उसे अत्यन्त शुभ लक्षण समझना चाहिए। ऐसे घर के स्वामी को चाहिए कि वह उस कौवे को हाथ जोड़कर करे तथा उसे खाने के लिए मिठाई डाले। यदि

कौवा मिठाई खा लेगा तो उससे और अधिक लाभ की सम्भावना बढ़ जाएगी। इस शकुन के फलस्वरूप गृहस्वामी को नौकरी में तरक्की, व्यापार में लाभ, सट्टा, लाटरी, रेस आदि में विशेष धन की प्राप्ति होती है।

मृत्यु सूचक अशकुन

यदि किसी के घर की छत के ऊपर मरा हुआ कौवा मिले तो यह समझना चाहिए कि उस घर का या तो धन नष्ट हो जाएगा अथवा किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाएगी।

बरबादी सूचक अशकुन

यदि किसी बन्द मकान में कौवों ने डेरा डाल दिया हो और वहाँ पर वे अपनी बीठ तथा पंखों को बिखेरते और कांव-कांव करते रहते हों तो यह समझ लेना चाहिए कि उस मकान के मालिक की बरबादी होने वाली है और वह मकान भी बहुत शीघ्र खंडहर के रूप में बदल जाएगा।

दरिद्रता सूचक अशकुन

यदि कौवा किसी के घर से सोने अथवा चाँदी का जेवर उठाकर ले जाए तो यह समझ लेना चाहिए कि अब उस घर के रहने वालों का दुर्भाग्य आरम्भ हो गया है और वहाँ दरिद्रता का निवास हो जाएगा।

घोर दरिद्रता सूचक अशकुन

यदि कोई व्यक्ति दही लेकर आ रहा हो अथवा दही को सामने रखे बैठा हो, उस समय कोई कौवा आकर उस दही में चोंच मार दे और चोंच में दही भरकर ले जाए तो यह समझना चाहिए कि वह व्यक्ति बहुत जल्दी कंगाल हो जाएगा। उसके घर में एक पैसा भी नहीं बचेगा।

अप्रतिष्ठा सूचक अशकुन

यदि कौवा किसी का रेशमी वस्त्र लेकर उड़ जाए तो उसका मान-सम्मान नष्ट हो जाता है। यदि सफेद कपड़ा लेकर उड़ जाए तो उसकी अपने ही भाई बन्धुओं में अप्रतिष्ठा होती है। इसके विपरीत यदि कौवा मैला कपड़ा लेकर उड़ जाए तो उस व्यक्ति को राजदरबार तथा अन्यत्र सब जगह सम्मान की प्राप्ति होती है।

कठिन रोग सूचक अशकुन

रात्रि के समय के अतिरिक्त यदि किसी अन्य समय में कोई व्यक्ति कौवा-कौवी को सम्भोग करते हुए देखे तो वह शीघ्र ही किसी भयानक रोग का शिकार बन जाता है।

अशुभ सूचक अशकुन

यदि किसी वृक्ष के नीचे दही अथवा अन्य भोजन पदार्थ रखे हों और उन्हें आकर कोई कौवा छू जाए तो उसे अशुभ एवं दरिद्रकारक समझना चाहिए।

हानि सूचक अशकुन

यदि कोई मनुष्य किसी कार्यवश घर से बाहर जा रहा हो उस समय यदि उसे अपने सामने आकाश से, वृक्ष से अथवा किसी मकान से कौवा पृथ्वी पर उतरता हुआ स्पष्ट दिखाई दे तो उसका वह काम बन नहीं पाता है। यदि उस कौवे की चोंच में मांस का टुकड़ा भी हो तो हानि होने के साथ-साथ किसी से लड़ाई-झगड़ा हो जाने का भय भी बना रहेगा। ऐसे दिखाई देने पर यात्री को चाहिए कि वह अपनी यात्रा को स्थगित करके घर लौट जाए। यदि जाना बहुत ही आवश्यक हो तो उस स्थिति में थोड़ी सी मिठाई लेकर उसी कौवे अथवा किसी अन्य कौवे को खिला दे तथा थोड़ी सी मिठाई स्वयं भी खाकर पानी पी ले तथा कुछ देर बैठने अथवा लेटने के बाद पुनः यात्रा करें तो अपशकुन का प्रभाव दूर हो जाता है।

असफलता सूचक अशकुन

पूर्वोक्त प्रकार की यात्रा के समय यदि कौवा ऊँचाई से उड़कर नीचे आता हो और उसके मुँह में हड्डी का टुकड़ा हो तो उस स्थिति में यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए। अन्यथा काम में असफलता मिलती है। यदि जाना आवश्यक ही हो तो कौवे को शक्कर युक्त रोटी खिलाने तथा थोड़ी सी रोटी अग्नि में डालकर, स्वयं शर्बत अथवा मीठा दूध आदि पीने के बाद ही जाना चाहिए अन्यथा काम में रुकावटें ही पड़ती चली जाएँगी।

रोगी का अशुभ सूचक अशकुन

रोगी मनुष्य के बिस्तर के समीप कौवा यदि किसी लाल रंग के कपड़े

का टुकड़ा लाकर डाल दे तो उसे बहुत बड़ा अशकुन समझना चाहिए। ऐसा रोगी जल्ल्दी स्वस्थ तो होता ही नहीं, उसके प्राणों पर भी संकट बन आता है। यदि चिकित्सा द्वारा स्वस्थ हो भी जाए, तो भी कुछ दिनों बाद फिर बीमार पड़ जाता है और बार-बार बीमार पड़ता रहता है। इस अशकुन को टालने के लिए उबले हुए चावलों में केशर मिलाकर उन्हें फकीरों भिखारियों को बँटवा देना चाहिए तथा उनसे कह देना चाहिए कि वे चावलों को खाते समय सीधे हाथ का प्रयोग करें। बाँटने से पूर्व उबले हुए चावलों को रानी के दाएँ हाथ का स्पर्श अवश्य करा देना चाहिए। अपने घर के बच्चों को भी ये चावल नहीं खिलाने चाहिए। कौवे द्वारा रोगी के समीप लाई गई वस्तु को बस्ती से बाहर एक गड्ढा खोदकर दबा देना चाहिए।

पराजय सूचक अशकुन

यदि कोई व्यक्ति जुआ, सट्ठा या रेस खेलने के लिए जा रहा हो अथवा अपने साथ किसी पशु-पक्षी का मुकाबला कराने के लिए ले जा रहा हो, उस मार्ग में उसके सिर के ऊपर कांव-कांव करता हुआ कौवा मंडराने लगे तो उसे यह समझ लेना चाहिए कि उसकी अथवा उसके पशु-पक्षी की हार होगी। ऐसी स्थिति में उसे अपनी यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए। यदि किसी कारणवश जाना अत्यन्त आवश्यक ही हो तो उसे वापिस घर लौटकर कुछ देर आराम करना चाहिए, तदुपरान्त मुहल्ले के बच्चों को कुछ पैसे अथवा मिठाई बाँटकर दुबारा प्रस्थान करना चाहिए। ऐसा करने से अशकुन का प्रभाव दूर हो जाता है।

परिवार नाश सूचक अशकुन

यदि किसी मकान की छत पर सुबह के समय बहुत से कौवे इकट्ठे होकर कांव-कांव करते हुए परस्पर लड़े-झगड़ें तो उसे अत्यन्त अशकुन मानकर यह समझ लेना चाहिए कि यह उस परिवार की बरबादी का चिह्न है तथा उस मकान में रहने वालों को धन की हानि का सामना करना पड़ेगा। ऐसी स्थिति में उचित है कि छत पर जाकर कौवों को तुरन्त उड़ा दें तथा वहाँ परस्पर शरीर की रगड़ होने के कारण कौवों के जितने भी पंख पड़े हुए मिलें उन सबको झाड़ू से किसी स्थान पर एकत्र कर किसी अन्य आदमी से

उठवाकर बस्ती से कहीं बाहर दूर ले जाकर, एक गहरा गड्ढा खुदवाकर, उसमें पंखों को दबवा दें, पंखों को झाड़ने, उठाने, ले जाने, गड्ढा खोदने अथवा गाढ़ने किसी भी कार्य में अपना हाथ नहीं लगाना चाहिए। घर के बाहर के किसी आदमी से ही ये काम करानें चाहिए।

पंखों को दबवा देने के उपरान्त घर की छत के ऊपर लोबान, कपूर, चन्दन का चूरा तथा धूप को जलाना चाहिए तथा अपने घर में तीन दिन तक कथा-कीर्तन आदि मांगलिक कार्य करवाने चाहिए। तत्पश्चात् निर्धन, भिखारियों तथा बच्चों को भोजन, मिठाई, धन आदि देकर प्रसन्न करना चाहिए। इससे अपशकुन का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

वैधव्य सूचक अशकुन

यदि प्रात:काल के समय कोई विवाहित स्त्री अपने मकान की छत के ऊपर किसी कौवे को मरा हुआ देखे तो यह समझना चाहिए कि वह शीघ्र ही विधवा हो जाएगी। यदि मृत कौवे के समीप रक्त की कुछ बूँदे भी पड़ी हुई हों तो यह समझना चाहिए कि उस स्त्री के पति की हत्या कर दी जाएगी।

इसी प्रकार यदि कोई विवाहित पुरुष प्रात:काल के समय अपने मकान की छत के ऊपर मरे हुए कौवे को देखें तो उसे समझ लेना चाहिए कि उसकी पत्नी की मृत्यु शीघ्र ही होगी। यदि मृत कौवे के शरीर के पास रक्त की कुछ बूँदें भी दिखाई दें तो यह समझना चाहिए कि उसकी पत्नी की हत्या कर दी जाएगी।

यदि कभी ऐसा अवसर उपस्थित हो तो उस समय अन्य किसी से कोई चर्चा किए बिना मृत कौवे को चिमटे अथवा किसी अन्य वस्तु से बाहर ले जाकर किसी एकान्त स्थान में गड्ढा खोदकर गाढ़ देना चाहिए।

ऐसा अवसर उपस्थित होने पर घुड़सवार को चाहिए कि वह तुरन्त ही घोड़े से नीचे उतर पड़े और पंख के दो टुकड़े करके, उसे अपने सिर के ऊपर के हाथ ले जाते हुए पीछे की ओर फेंक दे। पंख को सिर के ऊपर से फेंकते समय जिधर से जा रहा हो, उस ओर को मुँह तथा जिधर से आ रहा हो, उस ओर को पीठ रखनी चाहिए। इसके बाद घोड़े को कुछ देर के लिए किसी वृक्ष से बाँधकर उसकी जीन या काठी खोल दे तथा स्वयं भी कुछ देर के

लिए समीप ही लेट जाए। तत्पश्चात् यात्रा आरम्भ करने पर उसे मार्ग में जहाँ भी जल दिखाई दे, वहाँ पहले दो-चार घूँट पानी पीकर घोड़े को भी थोड़ा पानी पिलाना चाहिए। फिर कुछ देर विश्राम करने के उपरान्त यात्रा आरम्भ करनी चाहिए। इस प्रकार अपशकुन का प्रभाव नष्ट हो जाएगा।

उपद्रव सूचक अशकुन

यदि किसी मकान की दीवार अथवा मुँडेर पर बैठकर कुछ कौवे परस्पर झगड़ना एवं जोर-जोर से कांव-कांव करना आरम्भ करें तो यह समझना चाहिए कि उस मकान में थोड़े ही दिनों के भीतर उपद्रवों का सूत्रपात आरम्भ होने वाला है और उस घर के निवासी परस्पर एक-दूसरे से लड़-झगड़ कर अलग-अलग हो जाएँगे।

ऐसा अवसर उपस्थित होने पर कौवों को डरा-धमका कर, भगा देना चाहिए अथवा उनके सामने खाने की कोई वस्तु डाल देनी चाहिए। जिसके कारण वे शान्त होकर लड़ना-झगड़ना बन्द कर दें। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वे उड़कर किसी पड़ोस की छत पर न जा बैठें अन्यथा पड़ोसी से लड़ाई हो जाएगी। जब वे खूब दूर उड़ कर चले जाएँ तब कोई मीठी चीज बनाकर घर के सब लोगों को खिला देनी चाहिए। इससे अपशकुन का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

झगड़ा एवं हानि सूचक अशकुन

नौकरी पर अथवा व्यापारादि के लिए जाते समय यदि किसी स्थान पर कौवे परस्पर लड़ते-झगड़ते दिखाई दें तो यह चाहिए कि पहले उन कौवों को उड़ा दिया जाए तत्पश्चात् भगवन्नाम का स्मरण करते हुए कुछ देर रुकने के बाद आगे चला जाए। गन्तव्य स्थान पर पहुँचने के बाद भी दिन भर मन ही मन भगवान् का स्मरण करते रहना चाहिए तथा घर लौटकर बच्चों को मिठाई बाँटनी चाहिए। ऐसा न करने पर यदि वह व्यक्ति सीधा ही अपने दफ्तर अथवा दुकान पर चला जाएगा तो उस दिन वहाँ किसी से उसका झगड़ा हो जाएगा और पूरा दिन खराब बीतेगा। सम्भव है कि किसी शारीरिक चोट का भी शिकार बनना पड़े। अत: अपशकुन के प्रभाव को नष्ट करने का पूर्वोक्त उपाय अवश्य करना चाहिए।

कौवे द्वारा अन्य शुभाशुभ का ज्ञान

कौवे द्वारा अन्य शुभ-अशुभ भविष्य का ज्ञान नीचे लिखे अनुसार समझा जाता है—

१. यदि कौवा किसी विवाहित पुरुष की पगड़ी अथवा टोपी के ऊपर बीट कर दे तो उसके घर में जल्दी ही सन्तान का जन्म होता है। यदि उसकी पत्नी गर्भवती न हो तो शीघ्र ही गर्भवती हो जाती है।

२. यदि कौवा किसी विवाहित स्त्री के वस्त्र पर बीट कर दे तो वह शीघ्र ही सन्तान को जन्म देती है। यदि प्रात:काल बीट की जाए तो लड़का होता है और मध्याह्न काल में बीट की जाए तो लड़की होती है।

प्रात:काल बीट करने पर सन्तान सुन्दर होती है। सन्ध्याकाल में बीट करने पर सन्तान कुरूप होती है। चाँदनी रात्रि में बीट करने पर सन्तान सुलक्षण एवं सुन्दर होती है। अँधेरी रात्रि में बीट करने पर सन्तान कुलक्षण एवं असुन्दर होती है।

३. यदि रविवार के दिन कोई कौवा कुएँ में गिरकर मर जाए तो उस वर्ष वर्षा बहुत कम होगी, गर्मी खूब पड़ेगी, बाढ़ आदि का प्रकोप होगा तथा वस्तुओं के दाम महँगे हो जाएँगे ऐसा समझना चाहिए।

४. यदि रविवार के दिन कोई कौवा किसी तालाब या नदी में गिरकर मर जाए तो उस तालाब अथवा नदी का जितना बड़ा पाट होगा, उतनी ही अधिक मात्रा में वर्षा कम होगी तथा अकाल अधिक पड़ेगा ऐसा समझना चाहिए। ऐसी स्थिति में कथा-कीर्तन आदि धार्मिक कृत्य करना उचित है।

५. कभी जोर की वर्षा के साथ ओले गिरें और कौवे वर्षा का ख्याल न करके, अपने घोंसलों से निकलकर ओलों को अपनी चोंच से उठाकर घोंसलों की ओर भागे तो यह समझना चाहिए कि उस वर्ष श्वेत रंग के अन्न तथा श्वेत रंग की अन्य वस्तुएँ काफी

महँगी हो जाएँगी। श्वेत रंग के अन्न के खेत नष्ट हो जाएँगे तथा देश भर में श्वेत रंग की वस्तुओं का अकाल पड़ जाएगा।

६. यदि दोपहर के समय कोई कौवा किसी ऐसे युवक अथवा युवती के सिर पर मंडराता हुआ दीखे जिसका सगाई सम्बन्ध तो हो चुका हो परन्तु विवाह न हुआ हो तो यह समझ लेना चाहिए कि उस युवक अथवा युवती का वह सम्बन्ध किसी झगड़े, मृत्यु अथवा अन्य कारण से टूट जाएगा।

७. यदि किसी समय ऐसा दिखाई दे कि आकाश पर प्रत्येक दिशा में कौवों के झुंड कांव-कांव करते हुए उड़ते चले जा रहे हैं और उनकी उड़ान अपने घोंसलों में जाकर की समाप्त होती है तो यह समझ लेना चाहिए कि आधा घण्टे के भीतर ही बहुत जोर की आँधी आने वाली है।

८. यदि किसी समय ऐसा दिखाई दे कि आकाश पर प्रत्येक दिशा में कौवों का झुण्ड खामोशी के साथ नीची उड़ान भरते हुए चले जा रहे हैं और उनकी उड़ान अपने घोंसलों में जाकर ही समाप्त होती है तो यह समझ लेना चाहिए कि आधा घण्टे के भीतर ही मूसलाधार वर्षा होगी।

कौवे के सम्बन्ध में स्वप्न विचार

जिस प्रकार मनुष्य को स्वप्न में अन्य अनेक प्रकार की वस्तुएँ दिखाई देती हैं, उसी प्रकार यदि कभी स्वप्न में कौवा दिखाई दे तो उसके शुभाशुभ के फल को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

१. यदि किसी मंगलवार की रात्रि को स्वप्न में कौवों का ऐसा झुण्ड दिखाई दे, जो परस्पर मिलकर मिष्ठान आदि खा रहा हो और उनमें से कोई कौवा मिष्ठान का टुकड़ा स्वप्न देखने वाले की ओर भी फेंक दे तो यह समझना चाहिए कि यदि उस व्यक्ति का विवाह नहीं हुआ है तो शीघ्र हो जाएगा, यदि सन्तान नहीं है तो शीघ्र हो जाएगी, यदि बेरोजगारी है तो शीघ्र दूर होगी। यदि कोई

मुकद्दमा चल रहा है तो उसमें विजय प्राप्त होगी। तात्पर्य यह कि जो भी मनोभिलाषा पूर्ण नहीं हुई है, वह शीघ्र पूरी हो जाएगी।

ऐसा स्वप्न देखने पर प्रात:काल उठकर भगवन्नाम का जप करते हुए ईश्वर से अपनी मनोभिलाषा पूर्ण करने की प्रार्थना करनी चाहिए तथा स्नानादि निवृत्त होकर बालकों एवं भिखारियों को मिठाई बाँटनी चाहिए, इससे कार्य की सिद्धि शीघ्र हो जाती है।

२. यदि स्वप्न में कौवा पीले, लाल अथवा श्वेत रंग की मिठाई खाता हुआ दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि कहीं से आकस्मिक धन प्राप्त होने वाला है अथवा स्वप्न देखने वाला व्यक्ति किसी की सम्पत्ति का वारिस बनने वाला है।

३. यदि स्वप्न में कौवा पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर जाता हुआ दिखाई दे तो उस स्थिति में निम्नानुसार फल होता है—

स्वप्न देखने वाला रोगी पुरुष रोग से शीघ्र छुटकारा पा जाता है। निर्धन व्यक्ति को धन प्राप्त होता है। व्यापारी व्यक्ति को व्यापार में बहुत लाभ होता है। बदमाश और बदनाम व्यक्ति ईश्वर की कृपा प्राप्त कर सज्जन और धर्मात्मा बन जाता है तथा लोग उसकी प्रशंसा करने लगते हैं।

४. यदि स्वप्न में कौवा घर की मुँडेर पर बैठा हुआ कांव-कांव करता दिखाई दे तो उसका फल अत्यन्त शुभ होता है। अविवाहित व्यक्ति का विवाह शीघ्र हो जाता है। अन्य व्यक्ति के घर में कोई मांगलिक आयोजन होता है।

५. यदि स्वप्न में किसी स्थान पर दावत (भोज या ज्योनार) होती हुई दिखाई दे और वहीं पर कोई कौवा भी बार-बार बोलता दिखाई पड़े तो उस व्यक्ति के घर में भी शीघ्र ही किसी दावत का आयोजन होता है।

६. यदि स्वप्न में कौवा दही खाता हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने

वाले व्यक्ति को निम्नानुसार फल प्राप्त होगा—

यदि वह दरिद्री है तो धन की प्राप्ति होगी। यदि कोई मुकद्दमा लड़ रहा है, तो उसमें विजयी होगा। यदि कोई परीक्षा दे रहा है तो उसमें सफलता मिलेगी। यदि बेकार है तो उसे नौकरी अथवा व्यापार प्राप्त होगा। यदि कहीं नौकर है तो उसकी पदोन्नति होगी।

७. यदि रात्रि में दो बजे से चार बजे के बीच में स्वप्न में कौवा बैठा हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने वाले व्यक्ति को शीघ्र ही बहुत तरक्की मिलती है। उसका भाग्योदय हो जाता है अथवा थोड़े ही समय बाद धन, धान्य सम्मान आदि की प्राप्ति होने लगती है।

८. यदि स्वप्न में कौवा दूध पीता हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने वाले के घर में शीघ्र ही पुत्र अथवा पौत्र का जन्म होता है। अथवा उसके पुत्र का विवाह शीघ्र ही किसी सुन्दरी एवं गुणवती कन्या के साथ हो जाता है।

९. यदि स्वप्न में कौवा किसी अन्य व्यक्ति का आभूषण लेकर उड़ता हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने वाले को शीघ्र ही कहीं से अकस्मात् धन की प्राप्ति होती है, परन्तु वह धन का खर्च भी शीघ्र ही हो जाता है।

१०. यदि स्वप्न में कोई कौवा जाल से छूटता हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने वाले व्यक्ति को मुकद्दमें में सफलता अथवा किसी मिथ्या अभियोग से मुक्ति प्राप्त होती है।

११. यदि स्वप्न में कौवा जाल में फँसा हुआ दिखाई दे और स्वप्न वहीं समाप्त हो जाए तो स्वप्न देखने वाले व्यक्ति को बहुत समय तक मुकद्दमा लड़ने के उपरान्त किसी मित्र की सहायता से सफलता प्राप्त होती है।

१२. यदि स्वप्न में कौवा अपने घोंसले में बैठकर अपने बच्चों को दाना खिलाता हुआ दिखाई दे तो वह व्यक्ति जीवन भर ईमानदारी से द्रव्योपार्जन करते हुए अपने बाल-बच्चों का पालन-पोषण

करता है। यद्यपि यह स्वयं कठिनाइयाँ प्राप्त करता है, फिर भी ईमानदार रहने के कारण अन्त में मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग लोक को जाता है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर का भक्त, सत्यवादी तथा परिश्रमी होता है।

१३. यदि कोई दरिद्री व्यक्ति स्वप्न में कौवे को आकाश से धरती पर गिरता हुआ देखे तो उसका दरिद्र दूर हो जाता है और उसे धन सौन्दर्य तथा मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

१४. यदि कोई अन्धा व्यक्ति स्वप्न में कौवे को आकाश में उड़ता हुआ देखे तो उसकी नेत्र ज्योति वापिस आ जाती है अर्थात् उसका अन्धापन दूर हो जाता है।

१५. यदि स्वप्न में कौवे का छोटा बच्चा अपने घोंसले में से सिर बाहर निकालकर कांव-कांव करता हुआ दिखाई दे तो उस व्यक्ति को बहुत समय तक कष्ट भोगने के उपरान्त सुख की प्राप्ति होती है।

१६. यदि स्वप्न में कौवा दक्षिण दिशा से पश्चिम दिशा की ओर जाता हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने वाला व्यक्ति अपने घर वालों से लड़-झगड़ कर विदेश चला जाता है, परन्तु वहाँ जाकर उसे यश और धन की प्राप्ति होती है। अन्त में वह सम्पन्न होकर अपने घर वापिस लौट आता है और सर्वत्र उसकी प्रशन्सा होने लगती है।

१७. यदि स्वप्न में कौवा किसी जाल में फँसता हुआ दिखाई दे तो स्वप्न देखने वाले व्यक्ति को किसी मुकद्दमे में फँसना पड़ता है, जिसमें बहुत कष्ट उठाने तथा बहुत धन खर्च करने के बाद उसे सफलता प्राप्त होती है।

१८. यदि स्वप्न में ऐसा दिखाई दे कि कोई शिकारी कौवे को अपने जाल में फँसा कर लिए जा रहा है तो उस व्यक्ति को किसी मुकद्दमे में सजा भोगनी पड़ती है।

१९. यदि स्वप्न में कौवा किसी श्वेत वस्त्रधारी व्यक्ति के कपड़ों पर

बीट करता हुआ दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि उस व्यक्ति की कीर्ति को धब्बा लगेगा और सर्वत्र उसकी बदनामी फैल जाएगी।

२०. यदि किसी धनवान व्यक्ति को स्वप्न में कौवा आकाश से धरती की ओर गिरता हुआ दिखाई दे तो उसका सम्पूर्ण धन थोड़े ही दिनों में नष्ट हो जाता है और उसे दरिद्रता का महान कष्ट भोगना पड़ता है।

२१. यदि स्वप्न में कौवा अपने किसी आभूषण को लेकर उड़ जाता हुआ दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि घर से लक्ष्मी जाने वाली है और दरिद्रता का आगमन होने वाला है।

२२. यदि स्वप्न में कौवा विष्ठा खाता हुआ दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि स्वप्न देखने वाला व्यक्ति पाप के मार्ग पर शीघ्र ही अग्रसर होने वाला है और सब लोग उससे घृणा कर उठेंगे।

कौवे के सुनहरी पंख एवं बाल तथा नाखूनों के गुण

आमतौर पर प्रत्येक कौवे के पंख तथा नाखून काले रंग के होते हैं। परन्तु हजारों-लाखों में कोई एक कौवा ऐसा भी निकल आता है, जिसकी पूँछ या केवल एक पंख के बाल सुनहरी रंग के होते हैं अथवा दाएँ पंजे का केवल एक नाखून अथवा सभी नाखून गुलाबी या लाल रंग के होते हैं।

यदि सौभाग्यवश सुनहरे बालों के पंख वाला कौवा कभी दिखाई दे जाए, तो उसे सावधानी से पकड़कर, उसके सुनहरे रंग के पंख को नोंच लेना चाहिए और उस पंख को एक ऐसी डिबिया में जिसमें पहले से ही सिन्दूर तथा कपूर रखा हुआ हो, बन्द करके डिबिया को घर के भीतर किसी सुरक्षित स्थान में रख देना चाहिए। जिस घर में कौवे का सुनहरी पंख रहता है, उस घर में धन-धान्य की निरन्तर वृद्धि होती रहती है तथा उस घर के सभी प्राणी सर्वत्र यश और मान प्राप्त करते हैं।

इसी प्रकार यदि गुलाबी अथवा लाल रंग के नाखून वाला कौवा दिखाई दे जाए तो उसे सावधानी से पकड़कर कैंची द्वारा उसका नाखून काट

लेना चाहिए। उस नाखून को सोने के ताबीज में मढ़वाकर कण्ठ या भुजा में धारण करने से सब प्रकार की मनोकामनाएँ पूरी होती हैं, राज दरबार में सम्मान मिलता है। मुकद्दमे में जीत, परीक्षा में सफलता तथा इच्छित व्यापार अथवा नौकरी की प्राप्ति होती है।

कौवे की विभिन्न जातियों की विभिन्न विशेषताएँ बताई गई हैं, जो निम्नानुसार हैं—

पहाड़ी कौवे पर्वतीय रहस्यों के विशेषज्ञ होते हैं तथा मैदानी कौवे मैदानी इलाके के रहस्यों के जानकार होते हैं। जो कौवा जिस क्षेत्र का निवासी होता है, उसे अपने क्षेत्र की भूत, वर्तमान एवं भविष्य की सभी घटनाओं का ज्ञान होता है ऐसा कहा जाता है।

जंगली कौवों को पृथ्वी में गड़े हुए धन एवं रहस्यों का विशेष ज्ञान होता है। शहरी अथवा देहाती क्षेत्र के कौवे चोरी आदि की घटनाओं का रहस्य बताने में प्रवीण माने जाते हैं।

कहा जाता है कि प्रत्येक जाति का कौवा अपने तान्त्रिक को, यदि वह धैर्य पूर्वक साधना करता रहे, तो स्वयं ही योग्य बना देता है। इस पक्षी को खिला-पिलाकर जितना अधिक सन्तुष्ट रखा जाए, उतना ही वह अधिक लाभदायक सिद्ध होता है।

कौवे के तान्त्रिक प्रयोग

जिस प्रकार अन्य अनेक वस्तुओं, पशु-पक्षियों आदि के माध्यम से तान्त्रिक साधन किए जाते हैं, उसी प्रकार कौवे के माध्यम से भी अनेक प्रकार के तान्त्रिक साधनों के प्रयोगों का प्रचलन है। इन प्रयोगों के सत्यासत्य के विषय में हमारा अपना निजी कोई मत नहीं है। अस्तु, इस विषय पर उपलब्ध साहित्य-सामग्री को हम खण्ड में संकलित करते हुए साधकों से केवल यही कहना चाहते हैं कि वे इन साधनों का प्रयोग करके स्वयं अनुभव प्राप्त करें। इनमें से किसी भी साधन को अपने ही दायित्व पर करना चाहिए, क्योंकि इनके किसी भी भले-बुरे परिणाम का कोई दायित्व हमारे ऊपर न होगा। विश्वास फलदायकं की उक्ति के अनुसार विश्वासकर्ता के लिए ये

साधन शायद फलदायक भी सिद्ध हो सकेंगे।

व्यापार प्राप्ति के लिए तन्त्र

व्यापार प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

बृहस्पतिवार के दिन दोपहर के समय कहीं से एक कौवे को पकड़कर घर ले आएँ और उसे पिंजड़े में बन्द करके दाना पानी देते रहें। रविवार के दिन प्रात:काल उस दही में चीनी मिलाकर खाने को दें। मध्याह्न काल में कौवे के भोजन के प्याले में थोड़ा सा चावल का भात, दूध और चीनी मिलाकर डालें तथा सायंकाल को नारियल के पानी में तर किया हुआ बाजरा और ज्वार के दानों को उसके बर्तन में रखें।

फिर सोमवार के दिन प्रात:काल इच्छित स्थान अथवा दुकान में अपने कार्य को सिद्ध करने के लिए पहुँचे (जिस समय उस स्थान के भीतर प्रवेश करे उस समय यह ध्यान रखें) द्वार के भीतर प्रविष्ट होते समय पहला दायाँ पाँव ही आगे बढ़े। इस साधन के करने से वहाँ पहुँचते ही व्यापार में निरन्तर उन्नति होती चली जाएगी। सायंकाल घर लौट कर कौवे को मीठा हलुआ तथा दही खिलाकर पिंजड़े से बाहर निकालकर उड़ा दें।

नौकरी प्राप्ति के लिए तन्त्र

नौकरी प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

बृहस्पतिवार के दिन मध्याह्न काल में कहीं से एक कौवे को पकड़कर घर ले आएँ और उसे पिंजड़े में बन्द करके रख छोड़ें तथा दाना पानी देते रहें। रविवार के दिन प्रात:काल उसे दही में चीनी मिलाकर खिलाएँ। मध्याह्न काल में दूध और चीनी मिला हुआ भात खाने को दें तथा सायंकाल नारियल के पानी में तर किया हुआ बाजरा और ज्वार के दोनों को उसके खाने के बर्तन में रखें।

दूसरे दिन प्रात:काल सूर्योदय से पूर्व ही उसे गेहूँ की मीठी और घी से चुपड़ी हुई रोटी खिलाएँ। फिर उसकी नाभि में से रक्त (खून) की बूँद निकालकर, किसी बर्तन में रख लें। तत्पश्चात् नौकरी के लिए प्रार्थना-पत्र

लिखकर, जिस स्थान पर हस्ताक्षर करें, वहाँ पूर्वोक्त कौवे के रक्त की बूँद को स्याही में मिलाकर, कौवे के पंख की कमल बनाकर, उसे उक्त रक्त-मिश्रित स्याही में डुबाकर हस्ताक्षर कर दें। इस विधि से हस्ताक्षर करके भेजा हुआ प्रार्थना-पत्र जहाँ भी भेजा जाएगा, वहाँ से नौकरी का बुलावा अवश्य आएगा।

जब बुलावा आए, उस समय कौवे के उस पंख के बालों, जिसकी कलम बनाई गई थी, को उखाड़कर रुई के एक टुकड़े पर रखें और उसके ऊपर थोड़ी सी केशर रखकर पुड़िया बना लें। उस पुड़िया को अपनी दाईं ओर की जेब में रखकर बुलावेवाले स्थान पर जाएँ जब उस स्थान के द्वार के भीतर प्रवेश करें, उस समय यह ध्यान रखें कि पहले दायाँ पाँव ही आगे बढ़े। इस तन्त्र के प्रभाव से वहाँ प्रथम प्रवेश में ही नौकरी प्राप्त हो जाएगी और वह नौकरी स्थायी होकर निरन्तर पद वृद्धि एवं अन्य प्रकार की तरक्कियाँ कराती चली जाएगी।

नौकरी में तरक्की प्राप्त करने के लिए तन्त्र

नौकरी में तरक्की प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

प्रतिदिन प्रात:काल मीठे चावल कौवों को खाने के लिए डालें। इस नियम का एक सप्ताह तक पालन करें। प्रत्येक बार चावलों को मुट्ठी में भरकर इस प्रकार छितराएँ कि कौवे उन्हें प्राप्त करने के लिए परस्पर एक-दूसरे से रगड़ खाते रहें। इस प्रकार कौवों को बार-बार उड़ते तथा आपस में टकराते रहने के कारण उनके शरीर से छोटे-छोटे पंख रगड़ खाकर भूमि पर गिरते रहेंगे। ये पंख प्राय: कौवे की गर्दन तथा पेट के श्वेत भाग वाले स्थान के होंगे। कौवों के दाना चुगकर उड़ जाने के बाद उन पंखों को इकट्ठा करके रख दिया करें। इस प्रकार एक सप्ताह तक में बहुत से पंख इकट्ठे हो जाएँगे। आठवें दिन उन सभी कोमल पंखों को पहले शहद में भिगाएँ। फिर थोड़े से मोम को गरम करके पिघलाएँ और उन शहद में डूबे हुए पंखों द्वारा पिघले हुए मोम की सहायता से एक धागा बँट लें।

आवश्यकता के अनुरूप तरक्की के लिए प्रार्थना-पत्र लिखते समय अथवा किसी अधिकारी आदि से भेंट करते समय उस धागे को अपनी दाईं कलाई पर बाँध लें। इस विधि से लिखा गया प्रार्थना-पत्र अथवा लिखने वाला व्यक्ति स्वयं ही जब अधिकारी के पास पहुँचेगा, तब अधिकारी प्रसन्न होकर उसे तरक्की दे देगा।

परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए तन्त्र

परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

चौदहवीं के चाँद की रात को जब सूर्यास्त हो रहा हो और प्रकाश बहुत धुँधला हो, उस समय एक कौवे को पकड़कर उसकी गर्दन में सात गाँठों वाला एक लाल रंग का सूती धागा बाँध दें। गाँठें इस प्रकार की हल्की लगी होनी चाहिए कि उन्हें आवश्यकता के समय सुविधापूर्वक खोला जा सके।

पकड़ने के बाद कौवे को एक पिंजड़े में बन्द करके उसे खाने के लिए दाना तथा पीने के लिए शहद मिश्रित पानी देते रहें। तीन दिन बीत जाने पर, तीसरे दिन ठीक उसी समय जिस समय कि कौवे को पकड़ा गया था, उसी स्थान पर छोड़ आएँ, जहाँ से उसे पकड़ा गया अथवा जहाँ उसका निवास था। कौवे को छोड़ते समय उसके गले में बँधे हुए पूर्वोक्त लाल रंग के गाँठदार धागे को खोलकर घर ले आएँ।

जिस दिन परीक्षा देने के लिए जाना हो, उस दिन स्नानादि से निवृत्त हो, स्वच्छ वस्त्र धारण कर, किसी पवित्र स्थान में बैठकर, भगवान् का स्मरण करते हुए उस धागे की एक-एक गाँठ को खोलते जाएँ। जब सब गाँठें खुल जाएँ, तब उस धागे को अपनी दाईं भुजा पर बाँध लें। उसके उपरान्त परीक्षा देने के लिए जाएँ तो परीक्षा में सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

यदि परीक्षा एक से अधिक दिनों की हो तो पहले से ही उतनी संख्या में कौवे पकड़कर, उन सबके गले में अलग-अलग गाँठ पर डोरे बाँधकर रखें तथा पूर्वोक्त विधि से उन्हें छोड़ते समय सबके गले से डोरे खोलकर

रख लें। तदुपरान्त आवश्यकतानुरूप प्रतिदिन एक नए डोरे की गाँठें खोल कर उसे दाईं भुजा में बाँधकर परीक्षा देने जाया करें।

परीक्षा की समाप्ति पर घर वापिस आते समय धागे को उतारकर किसी नदी, कुएँ अथवा तालाब में फेंक देना चाहिए।

मुकद्दमे में विजय प्राप्त करने के लिए तन्त्र

मुकद्दमे में विजय प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

यदि कोई व्यक्ति किसी झूठे मुकद्दमे में फँस गया हो तो उसे चाहिए कि वह प्रत्येक मंगलवार के दिन सायं चार और पाँच बजे के बीच गेहूँ की रोटी के चूरे में गाय का शुद्ध घी तथा चीनी मिलाकर कौवों को खिलाया करें। जिस दिन मुकद्दमे की तारीख (पेशी) हो, उस दिन किसी कौवे की पीठ से एक लम्बा पंख लेकर, उसे अपनी दाईं ओर की जेब में डालकर अदालत में उपस्थित हो तो न्यायाधीश उस बयान पर विश्वास करके, उसके प्रति ठीक न्याय करेगा। जब तक मुकद्दमे का फैसला न हों, तब तक प्रत्येक मंगलवार के दिन पूर्वोक्त विधि से कौवों को खिलाना तथा पेशी की प्रत्येक तारीख को जेब में कौवे का पंख डालकर अदालत में जाना आवश्यक है।

सट्टे में लाभ प्राप्त करने के लिए तन्त्र

सट्टे में लाभ प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

बृहस्पतिवार को चाँदनी रात्रि में एक कौवे को उसके घोंसले से पकड़ लाएँ। यदि कोई अण्डा हो तो उसे भी उठा लाएँ। कौवे को घर लाकर पिंजड़े में बन्द कर दें। यदि अण्डा भी मिला हो तो उस अण्डे को तोड़कर एक खरल में डाल दें। फिर उस खरल में तीन रत्ती केशर और आधा माशा कपूर डालकर सबको भली-भाँति खरल करें। जब सब एक दिल होकर सूख जाए, तब उसकी एक गोली बना कर रख लें।

पिंजड़े में बन्द कौवे को साधारण दाना-पानी देने के साथ-साथ पाँच

दिन तक नित्य प्रति केशर और शहद मिला हुआ दही खिलाते रहें। तदुपरान्त छठे दिन केशर और शहद युक्त दही का स्वयं भी सेवन करके सट्टा करने के लिए जाएँ। यदि कौवे के अण्डे की गोली भी घर में रखी हो तो उसे अपनी दाईं ओर की जेब में डालकर ले जाएँ। गोली के साथ रहने पर लाखों रुपयों का लाभ होने की आशा रहती है। यदि गोली न हो तो भी सट्टे में बहुत लाभ होने की उम्मीद की जा सकती है।

सट्टे के स्थान से घर लौटने पर पिंजड़े में बन्द कौवे को बाहर निकालकर, उसके मस्तक पर केशर का तिलक लगाकर पूर्व दिशा की ओर छोड़ देना चाहिए।

जब भी सट्टा करना हो, तब इसी विधि के अनुसार कार्य करने से हमेशा लाभ ही होता है, नुकसान नहीं होता।

लाटरी या पहेली में लाभ प्राप्त करने के लिए तन्त्र

लाटरी अथवा पहेली में लाभ प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

किसी कौवे के अपने आप गिरे हुए पंख को कलम बनाकर, उसके ऊपर केशर के छींटे दें, फिर उस कलम के द्वारा लाटरी की टिकट को लिखें अथवा पहेली का हल भरें तो उसके फलस्वरूप लाटरी अथवा पहेली में लाभ प्राप्त होता है।

रेस में जीतने के लिए तन्त्र

रेस में जीतने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

एकादशी के दिन एक कौवे को पकड़कर उसे आधे घण्टे तक गूगल की धूनी दें। फिर उसे मीठा दही तथा अंगूरों का रस खिला-पिलाकर एक हिरन की पीठ से इस प्रकार बाँध दें, जैसे कि कौवा हिरन के ऊपर सवार हो। तदुपरान्त पीठ पर कौवा बँधे हुए हिरन को जंगल में ले जाकर पन्द्रह बीस मिनट तक खूब दौड़ाएँ। फिर हिरन की पीठ से कौवे को खोलकर घर ले आएँ और उसे रात भर एक लोहे के पिंजड़े में बंद रखें। सबेरा होने पर उसे

पुनः मीठे दही तथा अंगूरों के रस का सेवन कराएँ और बाद में गूगल की धूनी दें।

तीन दिन तक इसी प्रकर नित्य करते रहें। चौथे दिन उसे प्रातःकाल भोजनादि देकर दोपहर के समय मार डालें तथा उसके बाएँ पंजे को काटकर अलग रख लें। मृत शरीर के शेष भाग को किसी गड्ढे में दबाकर बन्द कर दें।

कौवे का कटा हुआ पंजा जब भली-भाँति सूख जाए, तब हिरन का थोड़ा सा नाखून लेकर, उसे कौवे के पंजे के साथ मिला रखें। फिर किसी सुनार से चाँदी और सीसे की मिश्रित धातु का ताबीज बनवाकर, उसके भीतर उपर्युक्त दोनों वस्तुओं को बन्द करवाकर ताबीज को मढ़वा लें। जब रेस के लिए जाना हो, उस समय इस ताबीज को अपनी दाईं जाघ में बाँधकर जाएँ। इस ताबीज को दाईं जांघ में बाँधकर रेस में घोड़ा दौड़ाने वाला व्यक्ति पहला नम्बर प्राप्त करता है।

जेब खाली न रहने का तन्त्र

जेब खाली न रहने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

पुष्य नक्षत्र में कौवे के दाएँ पाँव का नाखून लेकर, जेब में रखने से जेब कभी खाली नहीं रहती।

राज-दरबार में सम्मान प्राप्ति के लिए तन्त्र

राज-दरबार में सम्मान प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

प्रातःकाल किसी बड़े मन्दिर, मस्जिद, गिरजा अथवा गुरुद्वारे के शिखर पर बैठे हुए अथवा किसी बाग और मैदान के बड़े वृक्ष के घोंसले में बैठे हुए एक कौवे को पकड़कर लाल रंग के वस्त्र में लपेट लाएँ। लाल रंग का वस्त्र पहले से ही अपने साथ ले जाना चाहिए। घर लाकर उस कौवे को लकड़ी के किसी ऐसे पिंजड़े में बंद दें, जिसके नीचे की तह में पहले से ही एक लाल रंग का कपड़ा बिछा हुआ हो।

उस कौवे को शुद्ध गाय के घी में तली हुई पूड़ियाँ ऐसे दही के साथ खिलाएँ, जिसमें गुलाब और केवड़े का अर्क पड़ा हुआ हो। पूड़ी के प्रत्येक ग्रास के साथ थोड़ा सा शहद भी मिला लेना चाहिए। प्रत्येक ग्रास को अपने हाथ से ही खिलाना चाहिए। प्रात:काल यह भोजन कराकर दोपहर को खाने के लिए कुछ भी दिया जा सकता है। यही स्थिति रात्रि के भोजन की भी है।

रात्रि में पिंजड़े के सम्मुख अगर, कपूर, गुग्गल तथा सफेद चन्दन के बुरादे की धूनी देनी चाहिए। यह क्रिया निरन्तर पाँच दिन तक करनी आवश्यक है।

पाँचवें दिन कौवे के ऊपरी भाग का सबसे बड़ा एक पंख निकालकर, उसे अपने मस्तक के चारों ओर दाईं से बाईं ओर को तीन चक्कर लगाकर छोड़ दें। तदुपरान्त जब कभी राज-दरबार अथवा किसी अन्य बड़े आदमी के घर, सभा-सोसाइटी आदि में जाना हो, उस समय कौवे के उस पंख में थोड़ी सी केशर लगाकर, उसे अपनी पगड़ी या टोपी के अग्र भाग में अथवा दाईं ओर की जेब में रखकर जाए, तो वहाँ हर प्रकार से सम्मान की प्राप्ति होगी।

इस प्रयोग करने से राजा, मन्त्री, अधिकारी आदि साधक को अत्यन्त सम्मान देकर, उसकी हर बात को मान लेंगे।

कठिन कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए तन्त्र

कठिन कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

किसी कठिन कार्य की सिद्धि के लिए जाते समय घर से निकलने से पूर्व ही अपने हाथ में एक रोटी ले लें। मार्ग में जहाँ भी कौवा अथवा कौवे दिखाई दें, वहाँ उस रोटी के टुकड़े करके डाल दें और आगे बढ़ जाएँ। इससे कठिन कार्यों में भी सफलता प्राप्त होती है। यदि रोटी के टुकड़े खाने के बाद कौवों का झुण्ड आपके पीछे आता हुआ दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि कैसा भी कठिन कार्य क्यों न हो, उसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

पशु के दूध अधिक देने का तन्त्र

गाय, भैंस, बकरी आदि दुधारू पशुओं द्वारा अधिक दूध देने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

सोमवार को जब चाँदनी रात हो, तब किसी भी समय एक कौवे को पकड़ लाएँ और उसे पिंजड़े में रखकर स्वाभाविक भोजन देते रहें। केवल प्रात:काल और सायंकाल उसे दो तोले की मात्रा में मक्खन, खांड और तिल का तेल मिलाकर अवश्य खिलाना चाहिए। इस प्रकार चौदह दिन तक खिलाएँ।

पन्द्रहवें दिन उस कौवे को मारकर, उसके आमाशय को निकाल लें। मृत शरीर के शेष भाग को बस्ती से दूर किसी गड्ढे में ले जाकर दबा दें।

फिर गरम पानी में थोड़ा सा नमक डालकर उसमें कौवे के आमाशय को एक घण्टे तक पड़ा रहने दें। तदुपरान्त उसे निकाल भली-भाँति साफ करके, उसमें थोड़ा सा मक्खन और आधा माशे भर चाँदी का एक टुकड़ा डालकर हरे रंग के ओधे से इस प्रकार सी दें कि न तो उसमें से मक्खन बाहर निकल सके और न चाँदी का टुकड़ा ही। फिर उसके ऊपर मक्खन चुपड़ें और उसके सब ओर काले तिल इस प्रकार चिपका दें कि वह आमाशय की थैली तिलों से एक दम ढक जाए।

इसके बाद गेहूँ का आटा गूँथकर, उसकी एक थैली बनाएँ और उसके भीतर आमाशय वाली थैली को बन्द करके सुखा लें। फिर उस आमाशय की थैली युक्त आटे की थैली को एक लाल रंग के सूती वस्त्र में लपेट कर ऊपर से लाल रंग के डोरे द्वारा इस प्रकार सी दें कि वह एक गोला सा बन जाए। बस, अब यह तैयार है।

उपर्युक्त गोले को घरेलू पशु की नांद के नीचे गड्ढा खोदकर दबा दें इसके प्रभाव से वह पशु बहुत अधिक दूध देने लगेगा।

यदि कोई गौशाला, डेरी फार्म अथवा बड़ी पशुशाला हो तो उसके ठीक बीचो-बीच किसी स्थान में गड्ढा खोदकर, उपर्युक्त गोले को गाढ़ दें। तो उसके प्रभाव से उस पशुशाला में रहने वाले सभी दुधारू पशु अधिक दूध देना आरम्भ कर देंगे।

घोड़े की चाल तेज करने का तन्त्र

घोड़े की चाल को तेज करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

शबेरात के दिन दोपहर के समय एक जवान तथा निरोग कौवे को उसके घोंसले मैं से पकड़ लाएँ। दिन में दाना बगैरह खिलाकर रात्रि को पिंजड़े में बन्द कर दें। पिंजड़े के नीचे वाले हिस्से में लाल रंग का कपड़ा बिछा देना चाहिए। कौवे को पीने के लिए पानी के स्थान पर एक छटांक गुलाब जल रख देना चाहिए।

प्रात: सूर्योदय से पूर्व पाँच बजे के लगभग कीकर की लकड़ी से एक अंगीठी में अग्नि जलाएँ। जब कोयले खूब दहकने लगें और धुआँ निकलना बन्द हो जाए, तब उसके ऊपर लाल चन्दन का बुरादा और गूगल डाल दें। इन वस्तुओं को इतनी मात्रा में डालें कि एक घण्टे तक सुगन्धित धुआँ उठता रहे। जब धुएँ के कारण कमरा खूब सुगन्धित हो जाए, तब उस कमरे में कौवे का पिंजड़ा रखकर, एक छटांक गाय के दूध के दही में दो तोले शहद मिलाकर कौवे के पिंजड़े में रख दें, ताकि वह उसे खा ले और स्वयं कमरे से बाहर निकल जाएँ।

दोपहर के समय कौवे के पिंजड़े को किसी आम के वृक्ष पर लटका दें और उसमें खाने के लिए चावल भात में शक्कर मिलाकर रख दें। रात के बारह बजने पर कौवे को पिंजड़े में से निकालकर मार डालें और उसके खून को किसी शीशी में भरकर रख दें। मृत शरीर को किसी निर्जन स्थान में गड्ढा खोदकर दबा दें।

सुबह होने पर शीशी में भरे हुए रक्त को खरल में डालें, उसमें एक माशे असली कस्तूरी तथा तीन माशे कश्मीरी केशर मिलाकर तब तक घौंटते रहें, जब तक कि वह मैदा की तरह महीन और खुश्क न हो जाए। तत्पश्चात् उस चूर्ण को लाल रंग की शीशी भर कर रख लें।

उपर्युक्त शीशी में भरे हुए चूर्ण को सुरमे की भाँति घोड़े की आँखों में लगाएँ तो उस घोड़े की चाल बहुत तेज हो जाएगी। यदि किसी घोड़े को रेस की दौड़ में दौड़ाना हो तो निश्चित तिथि के चालीस दिन पहले से उसकी

आँखों में पूर्वाक्त अंजन लगाते रहें तो रेस की दौड़ में वह घोड़ा सबसे पहला स्थान प्राप्त करेगा।

यदि किसी नए घोड़े को रेस में दौड़ाना हो, जिसकी आँखों में चालीस दिन पहले से उक्त अंजन न लगाया गया हो तो रेस में दौड़ाने से एक घण्टा पूर्व उस घोड़े की आँख में इस अंजन को लगा दें तथा एक रत्ती भर चूर्ण उसकी जीभ पर और दो-दो रत्ती चूर्ण उसके चारों सुम्मों पर छिड़क दें। इस क्रिया के प्रभाव से वह नया घोड़ा भी पन्द्रह-बीस मिनट के भीतर इतना शक्ति सम्पन्न हो जाएगा कि रेस की दौड़ में वह अन्य सभी घोड़ों को पीछे छोड़ देगा।

फसल की रक्षा का तन्त्र

फसल की रक्षा के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

खेत में एक या दो स्थानों पर छोटी-छोटी लकड़ी गाढ़ दें और उन लकड़ियों पर कौवे के दो-दो चार-चार पंख बाँध दें अथवा एक या दो (जितनी लकड़ी हों) कौवों को मारकर प्रत्येक लकड़ी पर एक मरे हुए कौवे को लटका दें। इसके प्रभाव से अन्य किसी भी जाति के पक्षी उस खेत की फसल को नुकसान नहीं पहुँचा सकेंगे।

उजड़े वृक्षों को फलदार करने का तन्त्र

उजड़े वृक्ष को फलदार करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

जिस फल देने वाले वृक्षों पर कौवों के घोंसले होते हैं वे कौवों की छाया पड़ने तथा उनका मल-मूत्र गिरते रहने के कारण फल देना कम कर देते हैं। कुछ वृक्ष तो फल देना बिलकुल ही बन्द कर देते हैं और दिन-प्रतिदिन सूखते चले जाते हैं। यदि ऐसे वृक्ष दिखाई दें तो सर्वप्रथम उनमें से कौवों के घोंसलों को बिल्कुल हटा दें, तदुपरान्त कौवों के कुछ पंख लेकर उन वृक्षों की टहनियों से यत्र-तत्र बाँध दें इससे कौवे उन वृक्षों पर दुबारा अपना घोंसला नहीं बना सकेंगे।

वृक्षों पर पहले से पड़े हुए दुष्प्रभाव को नष्ट करने के लिए निम्नलिखित प्रयोग करें—

एक मादा-कौवी को पकड़कर तीन दिन तक एक लकड़ी के पिंजड़े में बन्द रखें। उसे खाने के लिए साधारण दाना-पानी के अतिरिक्त प्रतिदिन प्रात:काल तिल के तेल में भीगे हुए दाने तथा सायंकाल तिल का तेल और चीनी मिला हुआ थोड़ा सा दूध अवश्य दें। कौवी को पकड़ने का कार्य चाँदनी रात में द्वादशी तिथि को करें। पूर्णिमा की रात्रि में ठीक बारह बजे कौवी के पिंजड़े को दुष्प्रभावयुक्त वृक्षों के नीचे लाकर, कौवी को पिंजड़े में से निकाल कर मार डालें तथा उसके रक्त को उन वृक्षों की टहनियों एवं तनों के ऊपर छिड़क दें। कौवी के मृत शरीर को उन्हीं वृक्ष में से किसी एक के नीचे गड्ढा खोदकर गाढ़ दें। दूसरे दिन सुबह से उन वृक्षों को पानी देना आरम्भ करें तथा प्रतिदिन पानी देते रहें।

इस प्रयोग से दुष्प्रभावित वृक्ष दुबारा न केवल अपनी सामान्य अवस्था को प्राप्त कर लेंगे, अपितु अधिक फल देना आरम्भ कर देंगे और उनके फल पहले से अधिक मीठे तथा स्वादिष्ट भी होंगे।

खट्टे आमों को मीठा करने का तन्त्र

खट्टे आमों को मीठा करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

बैशाख की पहली तिथि को दोपहर के समय एक कौवे को पकड़कर उसके सब पंखों को नोंचकर साफ कर दें। तत्पश्चात् उसके साफ शरीर को एक कोरे मटके में डालकर पानी भर दें। उसी मटके में एक से अंगूर अथवा आधा सेर किशमिश डालकर, ऊपर ढक्कन लगा दें तथा ढक्कन के ऊपर एक कपड़ा मजबूती से बाँध दें।

इसके उपरान्त जमीन में एक गहरा गड्डा खोदकर, उसमें घड़े को रख दें। घड़े को कम-से-कम तीन फुट की गहराई में गाढ़ना चाहिए। ऊपर से मिट्टी ढककर गड्ढे को बन्द कर दें। नौ महीने तक घड़े को गड्ढे में दबा रहने दें।

उक्त अविधि के बाद जमीन को खोदकर गड्ढे में से घड़े को निकाल लें तथा पानी को धीरे-धीरे निथारकर अलग रख लें।

जब आम पर बौर आने को हो, उससे पन्द्रह-बीस दिन पहले पूर्वोक्त निथरे हुए पानी को, एक सेर की मात्रा में खट्टे आम वाले वृक्ष के तने के चारों ओर एक फुट गहरा गड्ढा खोदकर डाल दें। इस प्रकार एक सप्ताह तक पानी डालते रहें। हम क्रिया के प्रभाव से उस वर्ष उस वृक्ष में जो फल लगेंगे वे अत्यन्त मीठे तथा अधिक मात्रा में होंगे। यह क्रिया प्रतिवर्ष करनी चाहिए।

बिना ताली के ताला खोलने का तन्त्र

बिना ताली के ताला खोलने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

रविवार के दिन दोपहर के समय एक दम नंगा होकर कौवे के घोंसले के पास जाकर, उसे उतार लाए। फिर गुग्गल की धूनी देकर, श्मशान में ले जाए और वहाँ चिता की अग्नि में घोंसले को जलाकर राख कर ले। उस राख को किसी शीशी में भरकर अथवा पुड़िया में बाँधकर रख लें।

इस चुटकी भर राख को बन्द ताले के ऊपर डालने से वह बिना ताली लगाए ही खुल जाता है।

इच्छानुसार वर्षा होने का तन्त्र

इच्छानुसार वर्षा होने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय जंगल में पहुँचकर किसी ऐसे बेरी के वृक्ष को ढूँढ़े, जिस पर कौवे का घोंसला हो और उस घोंसले में मादा-कौवा रहती हो यदि ऐसा घोंसला मिल जाए तो ठीक, अन्यथा एक घण्टे बाद घर वापिस लौट आएँ। सूर्यास्त के एक घण्टे बाद खोजबीन का काम न करें। दूसरे शनिवार को फिर खोज करें। इस प्रकार खोज का कार्य केवल शनिवार के दिन पूर्वोक्त समय के भीतर करना चाहिए। जब भी मादा कौवा के बारे में जानकारी हो जाए, तब उस स्थान का भली-भाँति ध्यान कर लें।

शनिवार को जब पता लग जाए, तब उससे अगले बृहस्पतिवार के दिन सूर्यास्त के समय उस घोंसले के समीप पहुँचकर, सूर्यास्त के एक घण्टे के भीतर ही उस मादा कौवे को पकड़कर सीधे किसी नदी के तट पर जा पहुँचे। कौवे को पिंजड़े में नदी के तट पर रखकर पहले स्वयं बिलकुल नग्न होकर नदी में स्नान कराएँ। तदुपरान्त कौवे को भी नदी में स्नान कराएँ। फिर वस्त्र पहनकर, कौवे को साथ लेकर घर लौट आएँ। कौवे को पिंजड़े में बन्द रखकर साधारण आहार देते रहें। पाँच दिन तक नित्य सूर्योदय से आधा घण्टे पूर्व उसी नदी के पानी से, जो पहले से ही एक घड़े में भरकर रख लिया गया हो, स्नान करा दिया करें तथा उसे सुखाकर पिंजड़े में बन्द कर दिया करें।

इन पाँच दिनों में नित्य एक बार कौवी को गेहूँ की रोटी खिलाते रहें। पाँचवे दिन आधी रात के समय उस कौवी को मार डालें तथा उसके भीतर से यकृत, हृदय और अस्थि-पंजर को निकालकर साफ कर लें। मृत शरीर के शेष भाग को बस्ती से दूर किसी निर्जन स्थान में गड्ढा खोदकर गाढ़ दें। यकृत और हृदय को अस्थि-पंजर में उसके स्थान पर रख दें और उस सबको सुरक्षित रख छोड़ें।

जब भी किसी स्थान पर वर्षा कराना चाहें, उस समय उस यकृत और हृदय युक्त अस्थि-पंजर को किसी लोहे अथवा टीन के डिब्बे में बन्द करके उसी स्थान पर जमीन में लगभग छह इंच गहरा गड्ढा खोदकर दबा दें। फिर एक घण्टे बाद जिस स्थान पर उक्त डिब्बे को गाढ़ा गया हो, उसके ऊपर कीकर के कोयलों से अग्नि प्रज्वलित करें। जैसे ही उस ताप के कारण वह जमीन गरम होगी और उसकी उष्णता नीचे दबे हुए डिब्बे तक पहुँचेगी, वैसे ही वर्षा होनी आरम्भ हो जाएगी और जब तक आग जलती रहेगी, तब तक वर्षा होती रहेगी यह वर्षा उस स्थान के एक हजार वर्ग गज की दूरी तक ही सीमित रहेगी, यह स्मरण रखना चाहिए।

अन्य किसी समय किसी अन्य स्थान पर जब फिर वर्षा करानी हो, तब उसी डिब्बे को पहले वाले स्थान से निकालकर, दूसरे इच्छित स्थान में गाढ़कर, पूर्वोक्त क्रिया करनी चाहिए।

वर्षा बन्द करने का तन्त्र

वर्षा बन्द करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

बृहस्पतिवार को अर्द्धरात्रि के समय किसी जंगल के वृक्ष से कौवे को पकड़कर घर ले आए और पिंजड़े में बन्द करके रख छोड़े। तीन दिन तक उसे भुने हुए चने अथवा भुने हुए चनों का आटा खिलाएँ। इन भुने हुए चनों को अथवा जिन भुने हुए चनों का आटा बनाया जाए, उन्हें पहले से ही भेड़ के रक्त में भिगोकर सुखा लेना चाहिए। कौवे को पीने के लिए जो पानी दिया जाए, उसमें भी भेड़ के रक्त की दो-चार बूँदें मिला देनी चाहिए।

तीन दिन इस प्रकार बीत जाने पर चौथे दिन उस कौवे के दो-चार पंख उखाड़ कर छोड़ दें। फिर एक दिन अँधेरी रात में अर्द्धरात्रि के समय एक मिट्टी के शकोरे में कीकर की लकड़ी के अंगारे रखकर, उन पर लोबान, गुग्गल तथा हरसल डालें। साथ ही एक अन्य शकोरे में पूर्वोक्त कौवे के पंख रखकर, उसे धूनी वाले शकोरे के ऊपर इस तरह उल्टा लटका दें कि धूनी का धुँआ उठकर उन पंखों को लगाता रहे। इस प्रकार एक घण्टे तक धूनी देते रहें। तदुपरान्त उन पंखों को शकोरे में से निकालकर, सुरक्षित रख छोड़ें।

आवश्यकता के समय जब वर्षा को बन्द करना हो, तब पूर्वोक्त पंखों में से प्रत्येक पंख को अलग-अलग लाल कपड़े में लपेटकर, एक पंख को पूर्व दिशा की ओर, दूसरे को पश्चिम दिशा की ओर, तीसरे को उत्तर दिशा की ओर तथा चौथे को दक्षिण दिशा की ओर, पृथ्वी में दो-दो फुट गहरे गड्ढे खोदकर दबा दें। पंखों को दबाने के थोड़ी देर बाद ही कैसी ही तेज वर्षा क्यों न हो, रुक जाती है।

यात्रा में थकावट न आने का तन्त्र

यात्रा में थकावट न आने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

गुरुवार को रात्रि के बारह बजे किसी श्मशान अथवा कब्रिस्तान में जाकर, किसी ऐसे वृक्ष को ढूँढ़े जिस पर कौवे का घोंसला हो। वहाँ से एक नर कौवे को पकड़कर घर ले आएँ और उसे पिंजड़े में बन्द करके दाना पानी दें।

दूसरे दिन प्रातःकाल पान के पत्तों का एक तोला रस निकालकर कौवे के पीने के लिए पानी में मिला दें। यह क्रिया तीन दिन तक करते रहें।

चौथे दिन कौवे को खाने के लिए गेहूँ का दलिया दें। तत्पश्चात् पाँच तोले पान के पत्तों के रस में एक तोला पारा मिलाकर इतनी देर तक खरल करें कि रस सूख जाए और पारे का रंग सुरमे की तरह काला हो जाए। फिर एक छटांक गेहूँ के आटे में थोड़ी सी खांड में उक्त पारे को मिलाकर, उसमें गाय का शुद्ध घी और पानी डालकर आटे को गूंथ लें। तत्पश्चात् गाय के शुद्ध घी में उस आटे की एक पूड़ी बनाकर तले। उस पूड़ी का चूरमा बनाकर पाँच दिन के भीतर वह सब कौवे को खिला दें।

दसवें दिन रात्रि के समय उस कौवे को साथ लेकर श्मशान अथवा कब्रिस्तान जा पहुँचे। वहाँ तीन प्रदक्रिया लगाकर, उस स्थान के बीचोबीच पश्चिम दिशा की ओर मुँह करके बैठ जाएँ। फिर कौवे के पेट को चाकू से चीर कर, उसके आमाशय तथा आँतों को बाहर निकाल लें। आमाशय तथा आँतों को निकालते समय कौवे के आमाशय के भीतर से चाँदी की भाँति चमकदार एक गोली प्राप्त होगी। यह गोली उसी पारे की होगी, जिसे पिछले दिनों गेहूँ की पूड़ी के माध्यम से कौवे को खिलाया गया था। इस गोली को सावधानी से साफ करके अपने पास रख लें तथा कौवे के मृत शरीर आमाशय, आँतों आदि को उसी स्थान पर एक गड्ढा खोदकर गाढ़ दें और घर लौट आएँ।

घर आकर पूर्वोक्त पारे की गोली को तीन दिन के लिए गोमूत्र में डुबा कर रख दें। चौथे दिन गोली को गोमूत्र से बाहर निकालकर भली-भाँति साफ करके सुरक्षित रख लें। अब तन्त्र गुटिका तैयार है।

यात्रा के समय उस गोली को लाल रंग के किसी वस्त्र में लपेटकर कमर से बाँध लें अथवा मुँह में डाल लें। जब तक गोली मुँह में रहेगी अथवा कमर से बँधी रहेगी, तब तक चाहे कितनी ही लम्बी यात्रा क्यों न की जाए, थकान नहीं आएगी।

प्यास न लगने के तन्त्र

प्यास न लगने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताए गए हैं—

१. कौवे के हृदय को ताबीज में मढ़कर पास रखने से प्यास नहीं लगती।

२. दूसरा तन्त्र इस प्रकार है—संक्रान्ति के दिन सायं चार बजे के लगभग सिंघाड़े के एक छटांक आटे को भूनकर उसमें एक छटांक खांड मिलाकर स्वयं खा लें। फिर सायं पाँच बजे के लगभग बस्ती से दूर किसी एकान्त स्थान में जाकर एक मादा कौवी को पकड़ लाएँ। घर आकर उस कौवी को पिंजड़े में बन्द करके, दाना-पानी देना आरम्भ कर दें।

उसी दिन शीशम के एक सेर पत्ते लाकर उन्हें पीसकर रस निकाल लें। उस रस को एक बोतल में डालकर, उसी में आधा पाव अर्क केवड़ा, आधा पाव अर्क गुलाब और आधा पाव अर्क बेदमुश्क मिला दें। पानी के स्थान पर कौवे को पीने के लिए यही मिश्रण देते रहें।

इस क्रम को निरन्तर एक मास तक अर्थात् दूसरी संक्रान्ति आने तक चालू रखें। दूसरी संक्रान्ति की रात्रि को कौवे को पिंजड़े से निकालकर, बस्ती से बाहर किसी नदी के तट पर ले जाएँ और वहाँ कौवी की गर्दन पकड़कर, उसे नदी के पानी में चार-पाँच डुबकी दें। डुबकियाँ देने के बाद कौवी की चोंच वाले ऊपरी भाग में से एक रत्ती भर हिस्सा काट लें, फिर उसकी जीभ में से एक रत्ती भर हिस्सा काटें। इसी तरह कौवी के पेट के ऊपर से एक रत्ती भर पंख, चोटी की ओर से एक रत्ती भर पंख, दाएँ पांव के सिरे पर से एक रत्ती भर पंख तथा पंजे के अग्र भाग में से एक रत्ती भर हिस्सा काट लें। इन सब वस्तुओं को एक सफेद कागज में जोकि पहले से ही केशर के छींटे दिया हुआ अथवा केशरी नाग के पानी में भीगा हुआ हो, बाँध लें। कौवी यदि मर गई हो तो उसे वहीं जमीन में गड्ढा खोदकर गाढ़ दें और यदि जीवित हो तो वैसे ही छोड़कर घर लौट आएँ।

घर आकर पूर्वोक्त कागज की पुड़िया को, जिसमें सब वस्तुएँ बँधी हुई हैं, एक हरे रंग के रेशमी वस्त्र में लपेटकर, उसे एक हरे रंग के ही रेशमी

धागे से इस प्रकार सी दें कि वह गोली अथवा ताबीज की शक्ल में हो जाए।

उस गोली अथवा ताबीज को हरे रंग के रेशमी धागे में बाँधकर गले में लटकाने से प्यास नहीं लगती। गोली को गले में इस प्रकार लटकाना चाहिए कि वह हृदय स्थान का स्पर्श करती रहे। यात्रा काल में जब पानी मिलना कठिन हो, उस समय यह ताबीज प्यास के कष्ट से मुक्ति प्रदान करता है।

गहरी नींद आने का तन्त्र

गहरी नींद के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

एक कौवे को पकड़कर घर ले आएँ और उसे पिंजड़े में बन्द करके रख छोड़े। एक माशे कपूर को गेहूँ के आटे में गूँथकर, उसकी रोटी बनाकर, कौवे को खिलाते रहें, पीने के लिए सामान्य पानी दें। कौवा जो बीठ करे, उसे उठाकर छाया में सुला लें और सुरक्षित रख लें। दो-तीन दिन तक इसी प्रकार कौवे को भोजन देकर तथा उसकी बीट इकट्ठा करके छोड़ दें।

जब किसी मनुष्य अथवा पशु को गहरी नींद में सुलाना हो तो उस मनुष्य अथवा पशु के समीप निर्धूम कोयलों की अग्नि पर पूर्वोक्त बीट को इस प्रकार जलाएँ कि उसका धुआँ उस मनुष्य अथवा पशु को लगता रहे। उस धुएँ के प्रभाव से मनुष्य चार घण्टे तक और पशु पूरे चौबीस घण्टे तक अत्यन्त गहरी नींद में सोता रहेगा और इस बीच किसी भी प्रकार के शब्द से नहीं जगेगा।

चलते कुएँ को बन्द करने का तन्त्र

चलते कुएँ को बन्द करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

मृत गधे के शरीर को जिस स्थान पर गिद्ध, चील, कौवे आदि पक्षी खा रहे हों, वहाँ पहुँचकर किसी ऐसे कौवे का पीछा करें, जो उक्त मृत गधे के शरीर में चोंच मार रहा हो। पीछा करते ही वह कौवा उड़ने लगेगा। आप भी उसका पीछा करते हुए चलें। जब वह कौवा अपने घोंसले में जा छिपे, तब

उसके घोंसले को देखकर घर लौट आएँ।

फिर शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को रात्रि के ग्यारह-बारह बजे के लगभग उस घोंसले के पास जाकर, उसमें बैठे हुए कौवे को पकड़कर अपने घर ले आएँ और पिंजड़े में बन्द करके सामान्य दाना-पानी देते रहें।

फिर किसी दिन रात के समय एक ऐसी बांझ स्त्री की तलाश करें, जो सड़क पर जा रही हो। सड़क से उसके बाएँ पांव के नीचे की एक चुटकी भर धूल या मिट्टी उठा लाएँ।

कौवे को पकड़ने के दसवें दिन पूर्वोक्त मिट्टी में भेड़ के रक्त की कुछ बूँदे मिलाएँ। फिर उस रक्त मिश्रित मिट्टी को थोड़े से दही में मिलाकर, दही को ढांक कर रात भर के लिए किसी हवादार स्थान में रख दें। दूसरे दिन सुबह उस दही में थोड़ी सी पिसी हुई हल्दी मिलाकर उस पिंजड़े में बंद कौवे को खिलाएँ। यदि न खाए तो उसमें कुछ रोटी के टुकड़े मिलाकर, उन टुकड़ों को कौवों को खिला दें। फिर उसी रात में कौवे को मारकर उसकी आँतें निकाल लें। मृत शरीर के शेष भाग को बस्ती से बाहर किसी निर्जन स्थान में गड्ढा खोदकर गाढ़ दें।

कौवे की आँतों को सुखाकर सुरक्षित रख लें।

जब किसी चलते हुए कुएँ को बन्द करना हो, उस समय उसके बैलों को चलने वाली जगह पर पूर्वोक्त सूखी हुई आँत के एक छोटे से टुकड़े को फेंक दें तो उसके प्रभाव से चलते हुए बैल तुरन्त रुक जाएँगे और चाहे जितनी मार-पीट करने पर भी आगे नहीं बढ़ेंगे। जब उस टुकड़े को हटा कर दूर फेंक दिया जाएगा तो वैसे ही बैल दुबारा चलना आरम्भ कर देंगे। पुर रेहट आदि किसी भी विधि से बैल अथवा भैंसों द्वारा पानी क्यों न निकाला जा रहा हो; आँत के टुकड़े के फेंकने पर उन पशुओं का चलना रुक जाता है।

लोगों की दृष्टि से ओझल होने का तन्त्र

लोगों की दृष्टि से ओझल होने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

बृहस्पतिवार को जब अँधेरी रात हो, तब अर्द्ध रात्रि के समय एक

कौवे को उसके घोंसले में से पकड़ लें। कौवे को पकड़कर घर लौटने से पहले सात कदम उल्टे चलें फिर सीधा मुँह करके घर चले आएँ। घर आकर कौवे को एक पिंजड़े में बन्द कर दें। पिंजड़े में बन्द करने से पहले उसकी आँखों को लाल रंग के कपड़े से बाँध देना चाहिए। ताकि वह कुछ देख न सके। आँखों पर पट्टी बँधा हुआ कौवा कुछ देर तक तो बैठा रहेगा, तदुपरान्त अपने सिर को झटक कर पिंजड़े में गिर जाएगा और लेटा रहेगा।

एक या एक-दो घण्टे बाद कौवा नींद से जगकर अपनी आँखों पर बँधी पट्टी को हटाने का प्रयत्न करेगा। यदि वह अपने प्रयत्न में सफल हो गया तो फिर आपकी मेहनत बेकार चली जाएगी। यदि वह असफल रहा तो आपका साधन पूरा हो सकेगा। इसलिए पट्टी को पहले से ही इस प्रकार बाँधना चाहिए कि कौवा उसे खोल ही न सके। यदि कौवा अपनी आँखों की पट्टी को खोल ले तो उसे पिंजड़े से निकालकर छोड़ देना चाहिए तथा अगली बृहस्पति की रात्रि को दूसरा कौवा पकड़कर उसके साथ भी पूर्वोक्त क्रिया करनी चाहिए। जब तक पट्टी को खोलने में असमर्थ कौवा न मिले। तब तक बार-बार नए कौवे पकड़कर लाने तथा पूर्वोक्त क्रिया को करने का क्रम चालू रखना चाहिए। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि हर बार बृहस्पति को अँधेरी रात्रि में ही कौवा को पकड़कर लाया जाए कौवे की आँखों पर पट्टी बाँधने के अतिरिक्त उसके पंजों में पट्टी नहीं बाँधनी चाहिए, अथवा उससे तन्त्र साधना में सफलता नहीं मिलेगी। आँख पर पट्टी ही इस प्रकार से बाँधनी चाहिए कि कौवा अपने पंजों की सहायता से भी उस पट्टी को न खोल सके।

जब अपने लिए उपयुक्त कौवा मिल जाए अर्थात् जिस दूसरे दिन प्रात: उठकर आप यह देखें कि कौवे की आँखों पर रात भर पट्टी बँधी रही है उसे वह खोल नहीं पाया है तब आप यह समझ लीजिए कि अब आपका साधन सफल हो जाएगा।

प्रात:काल कौवे की आँखों पर पट्टी को स्वयं खोल दें और उसकी आँखों में दो बूँद गुलाब जल डालकर, खाने के लिए दाना दें। उसी दिन शाम को सात बजे के लगभग, जब सूर्य अस्त हो रहा हो, तब कौवे के खाने के

बर्तन में आधा तोला गाय के दूध की मलाई एवं आधा तोला नारियल का तेल मिलाकर, उससे अलग हट जाए (अन्य किसी व्यक्ति को भी कौवे के पास न जाने दें)।

आधा घण्टे के बाद जाकर देखें कि कौवे ने तेल युक्त मलाई को खा लिया है या नहीं। यदि न खाया हो तो फिर वहाँ से हटकर चले आएँ और उस समय तक प्रतीक्षा करें, जब तक कि वह उस तेल युक्त मलाई को न खा ले। जब वह मलाई को खा चुके तब उसकी आँखों पर दुबारा पूर्व रात्रि की भाँति लाल रंग के वस्त्र की पट्टी को उसी प्रकार बाँध दें कि वह उसे अपने पंजों से खोल न सके। यदि वह दूसरे दिन यही खोल दे तो उस कौवे को भी छोड़ दें तथा अन्य कौवे को पकड़कर पुन: नए सिरे से पूर्वाक्त सब क्रियाओं को आरम्भ करें।

इसी प्रकार पाँच दिनों तक दिन में पूर्वोक्त भोजन देकर रात्रि में पूर्वोक्त प्रकार से पट्टी बाँध दिया करें तथा प्रत्येक सुबह स्वयं पट्टी खोलकर उसकी आँखों में दो बूँद गुलाब जल डाल दिया करें। बीच में यदि किसी भी दिन कौवा पट्टी खोलने में समर्थ हो जाए तो उसे उसी समय छोड़ दें तथा नए कौवे को पकड़कर पूर्वोक्त क्रियाएँ करें। यह स्मरणीय है कि पाँचों दिन इस प्रकार से पट्टी बाँधी जानी चाहिए कि कौवा किसी भी रात में उसे खोलने में समर्थ न हो सके। यदि पाँचवें दिन भी कौवा पट्टी खोलने में समर्थ हो गया तो सारा अमल बेकार हो जाएगा।

जब पाँच दिन ठीक प्रकार से व्यतीत हो जाए, तब अगले पाँच दिन तक एक रत्ती तम्बाकू के पत्तों को गेहूँ के आटे में गूँथकर उसकी रोटी बनाकर कौवे को खिला दिया करें। आटा चाहे जितने परिमाण में हो, परन्तु उसमें तम्बाकू की पत्ती एक रत्ती की मात्रा में ही होनी चाहिए।

दस दिन इस प्रकार बीत जाने पर ग्यारहवें दिन कौवे को मार कर, उसकी आँख निकालकर एक सीप में सुरक्षित रख लें। तत्पश्चात् जस्त का फूला आधा माशा, सुहागा आधा रत्ती, सफेद सुरमा एक तोला, भीमसेनी कपूर आधा माशा तथा नीम के पत्तों का रस पाँच तोला इन सबको खरल में डालकर उसके साथ ही पूर्वोक्त कौवे की आँख भी मिला दें तथा घोंटना

आरम्भ करें। जब सब चीजें सुरमे की तरह खूब महीन पिस जाए, तब उन्हें खरल से निकाल कर, एक शीशी में बन्द कर, कृष्ण पक्ष के सोमवार की रात्रि को ठीक दो बजे श्मशान भूमि में जाकर, उक्त शीशी को किसी ऐसे स्थान में दो फुट गहरा गड्ढा खोदकर दबा दें, जिसके ऊपर दूसरे दिन प्रातःकाल कोई मुर्दा जलने को हो। जब तक उस स्थान पर १४ मनुष्य शव न जल जाएँ, तब तक शीशी को वहीं गढ़ा रहने देना चाहिए तथा इस सम्पूर्ण साधन के सम्बन्ध में किसी अन्य को तनिक भी पता नहीं चलने देना चाहिए।

जब उस स्थान पर १४ मुर्दे जल चुकें, तब शीशी को खोदकर निकाल लाएँ। फिर उस शीशी को डोरे में बाँधकर, एक ऐसे कुएँ में लटका दें, जिसमें पानी तो हो, परन्तु उससे कोई पानी भरता न हो। शीशी को इस प्रकार लटकाए कि वह पानी में डूबी रहे तथा डोरे के सिरे को कुएँ के भीतर ही कोई कील गाढ़कर इस प्रकार बाँध दें कि वह कुएँ के बाहर से दिखाई न दे। शीशी को बाँधने वाला डोरा काले रंग का होना चाहिए। शीशी को कुएँ के भीतर एक महीने तक लटका रहने देना चाहिए। तदुपरान्त उसे कुएँ से निकालकर घर ले आना चाहिए।

पूर्वोक्त शीशी में भरे हुए चूर्ण को आवश्यकता के समय सुरमे की भाँति अपनी दोनों आँखों में लगाने वाला व्यक्ति स्वयं तो अन्य सब प्राणियों तथा वस्तुओं को देख सकता है, परन्तु कोई अन्य प्राणी उसे नहीं देख पाता अर्थात् वह स्वयं सबकी दृष्टि से ओझल हो जाता है।

खोये हुए बच्चे का पता लगाने का तन्त्र

सन्ध्या के समय किसी ऐसे कौवे को पकड़कर घर ले आएँ, जो अपने घोंसले में भटका हुआ हो और अपने घोंसले में पहुँचने के लिए आकाश में इधर-उधर उड़ता हुआ चक्कर काट रहा हो।

घर लाकर उसे पिंजड़े में बन्द कर दें तथा उसके सामने कपूर और श्वेत चन्दन के चूरे की धूनी इस प्रकार दें कि वह धुआँ कौवे के शरीर को भी स्पर्श करे। फिर गाय के दूध में थोड़ा सा शहद और खांड मिलाकर से पीने के लिए किसी बर्तन में भर कर पिंजड़े में रख दें। यदि सूर्योदय तक वह

कौवा उस दूध को पी ले तो यह समझ लेना चाहिए कि आपका साधन सफल हो गया है। यदि दूध को न पिये तो दिन में उसे साधारण अन्न के दाने देकर, रात्रि के समय पुनः पूर्वोक्त प्रकार का दूध पिंजड़े में रखे हुए पात्र में भर दें। उस दूसरी रात्रि में वह दूध को अवश्य पी लेगा। पहली अथवा दूसरी रात्रि में जब भी वह दूध को पी ले, उसके दूसरे दिन सुबह ही कौवे को जहाँ से पकड़ा था, उसी स्थान पर ले जाकर छोड़ आएँ। जैसे ही वह कौवा अपने घोंसले में पहुँचेगा, वैसे ही खोये हुए बच्चे के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त हो जाएगी। उस स्थिति में खोया हुआ बालक कुछ समय बाद या तो स्वयं ही घर चला आएगा अथवा फिर आपको उसे लेने के लिए स्वयं जाना पड़ेगा। ऐसी स्थिति में बालक को वापिस लाने के लिए जब आप स्वयं जाएँगे, तब न तो बालक ही आपके साथ घर लौटने से इनकार करेगा और न वह व्यक्ति ही बालक को आपके साथ भेजने में कोई बाधा उपस्थित करेगा, जिसके कब्जे में उस समय वह बालक रहा होगा।

मनुष्य का कौवे की भाँति बोलने का तन्त्र

मनुष्य का कौवे की भाँति बोलने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

दशमी तिथि की रात्रि को बारह बजे के करीब किसी बहुत पुराने कब्रिस्तान में जाकर वहाँ पृथ्वी को खोदकर मनुष्य की खोपड़ी की एक हड्डी ले आएँ। उस हड्डी को खरल में डालकर साथ ही चार माशे कपूर, तीन माशे कश्मीरी केशर तथा दस तोले केवड़ा का अर्क मिलाकर घोंटना आरम्भ कर दें। जब सब वस्तुएँ खूब महीन पिसकर शुष्क हो जाएँ, तब उस चूर्ण को खरल में से निकालकर किसी शीशी में भरकर, सुरक्षित रख छोड़ें।

इसके पश्चात् बृहस्पति की रात्रि को किसी ऐसे जंगल में पहुँचे, जहाँ कीकर (बबूल) के बहुत से वृक्ष हों और उनमें से किसी पर कौवे का घोंसला भी हो। वहाँ से एक कौवा पकड़कर घर ले आएँ और उसे पिंजड़े में बन्द करके रख छोड़ें। दूसरे दिन सुबह उसे साधारण अन्न आदि खाने के लिए दें। तीसरे पहर में चावलों का महीन आटा पीसकर उसमें उचित मात्रा

में पानी डालकर लेई जैसा बना लें, साथ ही थोड़ी सी खांड भी मिला दें, ताकि वह मीठा हो जाए। इस मीठी लेई में चार रत्ती की मात्रा में पूर्वोक्त हड्डी का चूर्ण मिलाकर कौवे के खाने की प्याली में भर दें। इस प्रकार दिन भर सामान्य दाना वगैरह तथा तीसरे पहर में उपयुक्त हड्डी का चूर्ण मिश्रित मीठी लेई खाने की यह सामग्री निरन्तर इक्कीस दिन तक देते रहें। इक्कीस दिन बाद मीठी लेई आदि देने की आवश्यकता न रहेगी। फिर उसे साधारण भोजन ही देते रहें तथा जब पूर्णिमा तिथि आए, उस दिन रात्रि में ठीक बारह बजे, जिस स्थान से उस कौवे को पकड़कर लाया गया था, वहीं पहुँचकर उसके घोंसले से उत्तर की ओर बीस-पच्चीस कदम की दूरी पर ही रहकर उसे छोड़ दें। तब वह अपने घोंसले में जा पहुँचेगा।

जब कौवा घोंसले में पहुँच जाए। तब तीन दिन तक उस पर अपना ध्यान बनाए रहें। चौथे दिन रात्रि के समय उसी कौवे को उसके घोंसले से दुबारा पकड़कर रात्रि के ठीक बारह बजे के समय उसी कब्रिस्तान में जा पहुँचे, जहाँ से कि मनुष्य की खोपड़ी की हड्डी लाई गई थी। वहाँ पहुँच कर कौवे को मार डालें तथा उसकी जीभ और दिमाग को निकालकर अपने पास सम्भाल कर रख लें। उसके मृत शरीर के शेष भाग को वहीं पर एक गड्ढा खोदकर दबा दें। फिर अपने घर लौट आए।

घर आकर कौवे के दिमाग तथा जीभ को खरल में डालकर उसके साथ ही दो तोले सिंगरफ और जंगली धतूरे का रस मिलाकर घुटाई आरम्भ करें। तीन दिन तक घुटाई करने के बाद जब सब वस्तुएँ अत्यन्त महीन तथा एक दिल होकर सूखने के करीब हों, तब उनका एक गोला बना लें। उस गोले में थोड़ा सा कपूर एवं छह नग काली मिर्च लगाकर, उसे एक नीले रंग के कपड़े में रखकर नीले रंग के ही धागे से सीकर एक गेंद सी बनाकर सुरक्षित रख लें।

जिस समय किसी मनुष्य से कौवे की बोली बुलवानी हो, उस समय उस मनुष्य को पहले दो-तीन माशे भांग घोंटकर पिला दें। जब वह भांग पी चुके, तब उससे कौवे के विषय में बातें करना आरम्भ कर दें। जब उसे नशा आने लगे और वह सोने की इच्छा करे, उस समय आप उसे सोने के लिए

कह दें।

जब वह व्यक्ति खूब गहरी नींद में सो जाए, तब उसकी छाती पर पूर्वोक्त गेंद को रख दें। गेंद को रखते ही उस आदमी के ऊपर कौवा छा जाएगा और वह नींद में ही बड़बड़ाना आरम्भ कर देगा। पहले तो वह अपनी सामान्य बोली में—मैं कौवा हूँ, मेरे पंख हैं, मैं उड़ने वाला हूँ, मेरा रंग काला है आदि बातें कहेगा। फिर कुछ देर बाद वह कौवे की तरह कौवे की ही बोली में जोर-जोर से कांव-कांव जैसे शब्दों का उच्चारण आरम्भ कर देगा।

जब वह कौवे की तरह बोलना आरम्भ कर दें, उस समय उसकी चारपाई के पास से दूर हट कर खड़े हो जाना चाहिए। उस स्थिति में आकाश में उड़ने वाले अन्य कौवे, उसकी बोली को सुनकर उसकी चारपाई के पास आकर चारों ओर इकट्ठे हो जाएँगे और 'कांव-कांव' की ध्वनि में उससे वार्तालाप करेंगे। वह मनुष्य भी कौवों की बोली में ही उन्हें उत्तर देता रहेगा। अन्त में जब वह थक कर चुप हो जाएगा तब कौवे भी उसके पास से उड़कर चले जाएँगे।

जब आप उस गोले को उसकी छाती से हटाकर, उसके मुँह पर पानी के छींटे मारेंगे, तब उस आदमी की नींद खुल जाएगी और थोड़ी देर बाद वह होश में आ जाएगा। उस समय उसे शुद्ध गाय का घी मिला हुआ गरम-गरम दूध पिलाना चाहिए। इससे वह पूरी तरह होश-हबास में आ जाएगा। जब कौवे और उसे नींद के समय की घटना सुनाएँगे, तब वह आश्चर्य चकित होगा तथा इस घटना को देखने वाले लोग भी आश्चर्य में पड़ जाएँगे।

पूर्वोक्त गोले को ताँबे की डिब्बी में सुरक्षित रखना चाहिए तथा डिबिया के भीतर गोले को रखते समय उस पर थोड़ा सा सिन्दूर मल देना चाहिए। साथ ही डिबिया में थोड़ी सी लोंग और कपूर भी रख देने चाहिए। बाद में जब भी उस गोले का प्रयोग किया जाए, तभी उस पर नया सिन्दूर चढ़ा लेना चाहिए और दुबारा डिबिया में रखते समय भी उस पर सिन्दूर चढ़ाकर, हर बार डिबिया में नया कपूर और लोंग रखनी चाहिए। जब भी प्रयोग करना हो, तभी डिबिया को खोलना चाहिए अन्य समय उसे बन्द ही रखना चाहिए।

अच्छी नस्ल के पशु प्राप्त करने का तन्त्र

अच्छी नस्ल के पशु प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

जिस समय कोई पशु मैथुन कर रहा हो, उस समय यदि कौवे अथवा कौवी की उस पर दृष्टि पड़े तो उसकी सन्तान अच्छे नस्ल की होती है। यदि कौवा देख रहा होगा तो सन्तान नर होगी और यदि कौवी देख रही होगी तो सन्तान मादा होगी।

अस्तु अच्छी नस्ल का पशु प्राप्त करने के लिए पशु के गर्भाधान के समय नर या मादा जैसा भी बच्चा प्राप्त करना हो, उसी के अनुसार कौवा अथवा कौवी को पहले से ही पकड़ कर पिंजड़े में बन्द करके अपने पास रखना चाहिए तथा पशु के गर्भाधान के समय उस पिंजड़े को कहीं पास में ही रख लेना चाहिए, ताकि कौवे अथवा कौवी की दृष्टि गर्भाधान के समय उस पशु के ऊपर जा पड़े।

भूत प्रेत को दूर करने का तन्त्र

भूत प्रेत को दूर करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

एकादशी के दिन किसी श्मशान अथवा कब्रिस्तान में जाकर मृत मनुष्य के मस्तक, बाँह, टांग और छाती को हड्डियों के चार छोटे-छोटे टुकड़े ले आएँ। फिर संध्या के समय एक बन्द कमरे में बैठकर हड्डियों के चारों टुकड़ों को, एक कुश के आसन पर, जिसके ऊपर लाल रंग का कपड़ा बिछा हुआ हो, रखकर उन्हें अगर धूप और कपूर का पन्द्रह मिनट तक धुआँ दें फिर कमरे को बन्द करके स्वयं बाहर निकल आएँ। एक घण्टे बाद पुनः उस कमरे में जाकर, उस लाल रंग के कपड़े में जिसके ऊपर हड्डियाँ रखी हुई हों, हड्डियों को बाँधकर तीन गाँठें लगाएँ और सुरक्षित रख दें।

इसके पश्चात् जिस कब्रिस्तान से हड्डियाँ लाई गई थीं, उसी कब्रिस्तान की भूमि में अथवा उसके समीप स्थित ऐसे स्थान पर, जहाँ कि किसी वृक्ष पर कौवे का घोंसला हो वहां जायें और घोंसले का पता लगाकर वापिस चले आएँ। फिर नवमी तिथि की रात को एक बजे पुनः उसी स्थान जा पहुँचे तथा

एक दम नंगे होकर उस वृक्ष पर चढ़ जाएँ, जिस पर कौवे का घोंसला हो, घोंसले में से कौवे को पकड़कर नीचे उतर आएँ तभी अपने कपड़े पहन लें।

कौवे को एक लाल रंग के थैले में, जिसे पहले से ही अपने साथ ले जाया गया हो, बन्द करके थैले को बाएँ हाथ में लेकर, घर लौट आएँ। घर आकर कौवे को थैले में से निकालकर, ताँबे के तारों से बने हुए पिंजड़े में बन्द कर दें। तदुपरान्त पूर्वोक्त हड्डियों की पोटली को भी पिंजड़े में कौवे के आगे रख दें। फिर पिंजड़े को एक लाल रंग के सूती वस्त्र से ढक दें।

दूसरे दिन प्रातःकाल कौवे को साधारण दाना-पानी दें तथा पिंजड़े में से हड्डियों की पोटली को निकालकर किसी अँधेरे कमरे में लोहे के सन्दूक के भीतर रख दें तथा कौवे के पिंजड़े को बाहर उजाले में रख दें ताकि वह भली-भाँति खा पी सके। उसी दिन सन्ध्या के समय लोहे की एक प्याली में दो तोले दही, एक तोले कच्चा दूध, एक माशे गुलाब जल, थोड़ी सी असली कश्मीरी केशर तथा एक माशा लोबान रखकर मिला दें और उस प्याले को कौवे के पिंजड़े में रख दें। फिर उस हड्डी वाली पोटली को भी सन्दूक में से निकालकर कौवे को पिंजड़े में रख दें।

फिर मिट्टी के एक प्याले में जलते हुए कोयले रखकर, उन पर सफेद चन्दन का बुरादा, धूप और हरसिल डालकर धुआँ उत्पन्न करें। यह ध्यान रखें कि वह धुआँ पिंजड़े में रखी हुई हड्डियों की पोटली, दूध की प्याली तथा कौवे को भी लगे।

उस दिन रात्रि के समय भी हड्डियों की पोटली को पिंजड़े में ही पड़ा रहने देना चाहिए तथा पिंजड़े को लाल रंग के वस्त्र से ढक देना चाहिए। यही क्रिया निरन्तर नौ दिन तक करनी चाहिए।

दसवें दिन प्रातः अथवा सायं काल हड्डियों की पोटली को पिंजड़े से बाहर निकालकर लोहे के सन्दूक में बन्द कर दें। फिर लाल रंग के उसी थैले में, जिसमें कौवे को पकड़कर लाया गया था, कौवे को पिंजड़े से निकालकर डाल लें और उस कौवे वाले थैले को लेकर उसी वृक्ष के समीप जा पहुँचे, जहाँ से कि कौवे को पकड़कर लाया गया था। वहाँ पहुँचकर कौवे को थैले से बाहर निकालकर मार डालें और उसका हृदय निकालकर, मृत शरीर के

शेष भाग को वहीं जमीन में एक गड्ढा खोदकर गाढ़ दें। फिर कौवे के हृदय को उसी लाल रंग के थैले में डालकर घर लौट आएँ और उसे हड्डी वाली पोटली के साथ ही सन्दूक में बन्द करके रख दें।

बृहस्पतिवार की रात्रि में एक ऐसा बड़ा खरल लें, जिसमें एक सेर तक पानी आ सके। उस खरल में पोटली की हड्डियों तथा कौवे के हृदय को डालकर एक पाव केवड़े का अर्क भर दें तथा सब वस्तुओं को खरल करना आरम्भ करें जब तक सब वस्तुएँ अत्यन्त महीन तथा शुष्क होकर गोली बाँधने के योग्य न हो जाए, तब तक निरन्तर खरल करते रहें। फिर उस मिश्रण के तीन भाग करके एक टिकिया सी बनाकर, छाया में सुखा लें। सूख जाने पर टिकिया के साथ एक माशे कपूर, एक माशे कश्मीरी केशर, एक माशे असली कस्तूरी तथा लोबान मिलाकर, उसे एक लाल रंग के सूती वस्त्र में लपेटकर, लाल रंग के धागे से ही इस प्रकार सी दें कि कोई वस्तु बाहर न निकल सके।

जिस व्यक्ति के ऊपर भूत-प्रेत का साया हो, उसके गले में उक्त लाल वस्त्र की पोटली की ताँबे के ताबीज में मंढवाकर पहना दें तो भूत-प्रेत का साया दूर हो जाएगा।

इसके अतिरिक्त यह टिकिया निम्नलिखित कार्यों में भी चमत्कारी लाभ पहुँचाती है—

१. जिस मकान में बार-बार आग लग जाया करती हो, उस मकान की दहलीज में इस टिकिया को दबा दें तो उसमें आग लगना बन्द हो जाएगा।
२. जिस घर में चोरी हो जाती है, उसकी दहलीज में उक्त टिकिया को दबा देने से चोरी होना बन्द हो जाता है।
३. जो खेत उजड़ अथवा नष्ट हो जाता हो, उसमें किसी स्थान पर एक फुट गहरा गड्ढा खोदकर इस टिकिया को गाढ़कर दबा देने से उस खेत की फसल का उजड़ना रुक जाता है।

जादू-टोने को दूर करने का तन्त्र

जादू-टोने को दूर करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

अमावस्या के दिन प्रातः चार बजे किसी कब्रिस्तान में जाकर, वहाँ के किसी वृक्ष के घोंसले से एक कौवा पकड़ लाएँ। घर आकर उसके मस्तक पर केशर का तिलक लगाएँ तथा गर्दन के चारों ओर केशर से एक गोल घेरा खींचकर, लोहे के पिंजड़े में बन्द कर दें।

सूर्योदय होने पर उसे शुद्ध गाय के घी-चीनी तथा माश (उड़द) के आटे से बना हुआ हलुआ, जिसमें थोड़ा सा लोबान भी पड़ा हो, खाने के लिए दें। दिन में साधारण दाना दें, परन्तु पीने के लिए पानी के स्थान पर, दही फटने से जो नीले रंग का पानी निकलता है, उसे पिलाएँ।

जब शनिवार का दिन आए तब उसे गुड़ और तिल के तेल से बना हुआ माश के आटे का हलुआ खिलाना चाहिए। यह हलुआ लोहे की कढ़ाई में, लोहे की कलछी की सहायता से बनाना चाहिए तथा कौवे के खाने के लिए उसे लोहे के ही किसी पात्र में भर कर पिंजड़े में रखना चाहिए। हलुए को पात्र की पिंजड़े में रखने से पूर्व उस पर आधा माशा असली सिन्दूर छिड़क देना चाहिए तथा ताँबे का एक छोटा सा टुकड़ा हलुए के भीतर दबाकर रख देना चाहिए।

जब कौवा हलुआ खा चुकेगा, तब वह ताँबे का टुकड़ा उसी बर्तन में पड़ा रह जाएगा। उस टुकड़े को कौवे के भोजन के पात्र में से निकालकर अलग रख लें। तदुपरान्त जब कौवे को पकड़े हुए सात दिन पूरे हो जाएँ तब उसे पिंजड़े में से निकालकर उसके मुँह को आकाश की ओर करके छोड़ दें।

तदुपरान्त पूर्वोक्त ताँबे के टुकड़े को किसी सुनार के पास ले जाकर, उसके द्वारा एक ऐसी मूर्ति तैयार कराएँ, जिसकी आकृति मनुष्य के समान हो। मूर्ति के एक ओर कौवे का चित्र तथा दूसरी ओर तराजू का ऐसा चित्र बनवाना चाहिए, जिसके दोनों पलड़े बराबर हों।

उक्त ताँबे की मूर्ति को धूप देकर सुरक्षित रख लें। जब किसी के शरीर पर जादू-टोने का प्रभाव दिखाई दे, उस समय उक्त मूर्ति को, धागे में बाँधकर उस जादू-टोने ग्रस्त व्यक्ति के गले में पहना दें तो जादू-टोने का

प्रभाव दूर हो जाता है।

यदि किसी ने मकान में रहने वाले लोगों पर जादू-टोना कर दिया हो तो उक्त मूर्ति के उस मकान के मुख्य द्वार गाढ़ देना चाहिए। इसी प्रकार यदि किसी खेत या बाग को नष्ट करने के लिए कोई जादू-टोना किया गया हो तो उक्त मूर्ति को उस खेत या बाग में गड्ढा खोदकर गाढ़ देना चाहिए। मूर्ति के प्रभाव से जादू-टोना ग्रस्त घर, खेत अथवा बाग मुक्त हो जाएगा।

जो व्यक्ति उक्त मूर्ति को हर समय अपनी जेब में रखेगा, उसके ऊपर किसी प्रकार के जादू-टोने का असर नहीं पड़ेगा।

चोर द्वारा चोरी न कर सकने का तन्त्र

चोर द्वारा चोरी न कर सकने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

पूर्णिमा की रात्रि को जब आकाश में चाँद पूरी तरह निकला हुआ हो, पूर्व दिशा की ओर वाले किसी वृक्ष से एक कौवे को पकड़ लें, कौवे को हाथ में लिए हुए ही, आँखें बन्द करके नंगे पाँव, दाईं से बाईं ओर को वृक्ष की तीन परिक्रमा लगाएँ। फिर पीछे की ओर देखे बिना, कौवे को लेकर अपने घर चले आएँ और उसे किसी लकड़ी के पिंजड़े में बन्द कर दें तथा पिंजड़े को ऊपर से लाल रंग के सूती वस्त्र द्वारा ढक दें।

दूसरे दिन दोपहर के समय गाय के शुद्ध घी का हलुआ बनाकर, उसके ऊपर पानी में घुले हुए लाल रंग के कुछ छींटे डालें। तत्पश्चात् वह हलुआ किसी बर्तन में भरकर कौवे के खाने के लिए, पिंजड़े के भीतर रख दें। यही भोजन एक सप्ताह तक देते रहें तथा प्रत्येक रात्रि में पिंजड़े को लाल रंग के वस्त्र से ढक दिया करें।

आठवें दिन रात्रि के दस बजे के लगभग कौवे को मार डालें। उस समय उसके शरीर से जो रक्त निकले उसे चीनी मिट्टी के एक पात्र में सुरक्षित रख लें। तदुपरान्त मृत कौवे के पेट को चीरकर भीतर से उसका हृदय निकालकर किसी दूसरे बर्तन में रख लें। मृत शरीर के शेष भाग को बस्ती से दूर ले जाकर किसी निर्जन स्थान में गड्ढा खोदकर गाढ़ दें।

कौवे के हृदय को छाया में सुखा लें। जब वह अच्छी तरह सूख जाए, तब उसे एक खरल में डालकर भली-भाँति घोंट दें, ताकि वह अत्यन्त महीन चूर्ण जैसा बन जाए। फिर, जिस पात्र में कौवे का रक्त सुरक्षित रखा हो, उसमें एक तोला केवड़े का अर्क तथा उपर्युक्त चूर्ण डालकर, सबको एक में मिला दें।

इसके पश्चात् रविवार के दिन किसी कुत्ते का सामने वाला दाँत निकाल लाएँ। उस दाँत को तथा पूर्वोक्त मिश्रण को पुनः खरल में डालकर घोंटना आरम्भ करें। यह क्रिया तब तक करते रहें, जब तक कि सब पदार्थ भली-भाँति एक में मिलकर लेई के रूप में न बदल जाए। इस लेई में कुत्ते का दाँत या तो ज्यों का त्यों मौजूद होगा अथवा फिर उसके टूटे हुए टुकड़े मौजूद होंगे। उस दाँत अथवा उसके टुकड़ों को लेई के बीच में रखकर छाया में सुखा लें। जब भली-भाँति सूख जाए तब उस गोले को छह माशे असली सिन्दूर में चारों ओर लपेट दें। फिर उसे एक लाल रंग के वस्त्र के टुकड़े में रखकर काले रंग के धागे से सी दें तथा एक गोली सी बना लें।

फिर गोली को किसी लकड़ी की डिब्बी में बन्द करके रख दें। इस गोली वाली डिब्बी को जिस मकान, दुकान, खेत या बाग में, धरती में एक फुट गहरा गड्ढा खोदकर दबा दिया जाएगा, वहाँ पर कभी चोरी नहीं होगी। यदि कोई चोर आएगा भी तो उस मकान, दुकान अथवा खेत का स्वामी तुरन्त ही जग पड़ेगा और वह भागते हुए चोर को माल समेत पकड़ लेगा अथवा मालिक के जग जाने के कारण चोर माल मत्ता छोड़कर खाली हाथों भाग जाएगा।

चोर द्वारा स्वयं चोरी बता देने का तन्त्र

चोर द्वारा स्वयं चोरी का रहस्य बता देने के लिए निम्नलिखित तन्त्र कहा गया है—

एक मादा कौवी के बीट को लाकर किसी अँधेरे स्थान से सुखाएँ। सूख जाने पर उसे खरल में डालकर पीसें, जब वह महीन हो जाए, लेई जैसी हो जाए, तब सरकण्डों के तिनकों पर उस लेई का लेप कर दें। जब सरकण्डे

पर लगा हुआ द्रव सूख जाए तब उन सरकण्डों को ढाई-ढाई इंच के टुकड़ों में एक बराबर का काट कर रख लें।

जब किसी के घर में चोरी हो जाए तब उस मकान मालिक से पूछे कि उसे किन-किन व्यक्तियों पर सन्देह है। वह जिन लोगों के नाम बताए उन सब लोगों को बुलाकर एक पंक्ति में बैठा दें तथा सभी के हाथ में पूर्वोक्त एक-एक लकड़ी देकर यह कहें कि ये सब तिनके लम्बाई में एक समान हैं। जो व्यक्ति वास्तविक चोर होगा, उसके हाथ में यह तिनका जाते ही एक इंच बढ़ जाएगा।

उसके उपरान्त एक तिनके को स्वयं भी अपने हाथ में लेकर सन्देह वाले प्रत्येक व्यक्ति की आँख में उसे सुरंग की सलाई की तरह फेरते चले जाएँ तथा पाँच मिनट के लिए सबको अपनी आँखें बन्द कर लेने के लिए कहकर उन सबकी आँखें बन्द करा दें।

इस सब क्रिया के करने पर वास्तविक अपराधी घबरा जाएगा और वह आपको एकान्त में ले जाकर चोरी का सारा रहस्य स्वयं ही बता देगा अथवा फिर तिनके के भय से असली चोर अपने तिनके का थोड़ा सा हिस्सा तोड़ डालेगा। अस्तु पाँच मिनट बाद आप सब लोगों को आँखें खोलने के लिए कहें तथा सब लोगों के हाथ से तिनके लेकर उनकी लम्बाई नापते चले जाएँ। जिस व्यक्ति के तिनके की लम्बाई कम निकले उसे असली चोर समझ लें। ऐसी स्थिति में उसे सबसे अलग ले जाकर कहें कि तुम्हीं वास्तविक अपराधी हो, अतः या तो तुम सीधी तरह चोरी के बारे में सब कुछ बता दो, अन्यथा तुम्हें पुलिस के सुपुर्द कर दिया जाएगा। यह सुनते ही वह यथार्थ अपराधी स्वयं ही चोरी के रहस्य को पूरी तरह प्रकट कर देगा तथा यह भी बता देगा कि चोरी का माल किस जगह रखा हुआ है। इतना ही नहीं, वह माल के पास आपको ले भी जाएगा।

स्वप्न में गुप्त भेद जानने का तन्त्र

किसी अन्य व्यक्ति के मन के गुप्त भेद को स्वयं अपने स्वप्न में जान लेने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

मंगलवार के दिन दोपहर को बारह और एक बजे के बीच कहीं से एक कौवे को पकड़कर घर ले आएँ और उसे पिंजड़े में बन्द कर दें। सामान्य आहार के अतिरिक्त उसे प्रतिदिन पीने के लिए गुलाब जल में मिला हुआ शहद देते रहें। तेरह दिन तक यही क्रिया करें।

तेरहवें दिन रात्रि को दस बजे के लगभग उस कौवे की गर्दन मरोड़कर मार डालें और उसी समय उसका पेट चीरकर उसके दिल को बाहर निकालकर रख लें। मृत शरीर के शेष भाग को किसी निर्जन स्थान में गड्ढा खोदकर गाढ़ दें तथा कौवे के हृदय को किसी लकड़ी की डिबिया में बन्द करके सूखने के लिए धूप में रख दें। पन्द्रह दिन के भीतर ही वह सूख जाएगा। तब उसे उस डिबिया में से निकालकर एक दूसरी डिबिया में रख दें तथा उस दूसरी डिबिया में थोड़ा सा सिन्दूर और तीन माशे असली कस्तूरी भी साथ ही रख दें।

इस डिबिया को सात दिन तक नित्य सोते समय बिना खोले ही दो-तीन मिनट तक हिला दिया करें। तत्पश्चात् डिबिया को हिलाने की आवश्यकता नहीं है। यों ही रखा रहने दें।

जब कभी किसी ऐसे व्यक्ति के मन का भेद स्वयं मालूम करना हो जो किसी भी तरह बताने को तैयार न हो तो उस समय निम्नलिखित प्रयोग करना चाहिए—

रात्रि के समय जब स्वयं सोने के लिए जाएँ तो अपने बिस्तर पर पूर्वोक्त डिबिया को भी ले जाएँ। स्मरण रहे उस समय आपके सोने के कमरे में अन्य कोई व्यक्ति नहीं रहना चाहिए। वहाँ बिस्तर पर बैठकर डिबिया को अपने सामने खोलकर रख लें तथा जिस व्यक्ति के मन का भेद मालूम करना हो उसका ध्यान करके डिबिया की ओर एक मिनट तक टकटकी दृष्टि लगाकर देखते रहें। तदुपरान्त डिबिया को बन्द करके सिरहाने रखकर सो जाएँ। जब आपको गहरी नींद आ जाएगी उस समय स्वप्न में वह व्यक्ति जिसके मन के गुप्त भेद को आप जानना चाहते होंगे, प्रत्यक्ष की भाँति आकर खड़ा हो जाएगा तथा आपको अपने मन के सभी भेद बता देगा। आपको वे सब बातें सोकर जगने के बाद भी याद बनी रहेगी।

मनुष्य के मन के गुप्त भेद को जानने का तन्त्र

किसी स्त्री अथवा पुरुष के मन के गुप्त भेद को जानने के लिए निम्नलिखित बन्त्र बताया गया है—

कौवे की जीभ और सहराई मेंढक की जीभ—इन दोनों को एक डिब्बी में बन्द करके रख लें। फिर जिस स्त्री अथवा पुरुष के मन के गुप्त भेद को जानना हो, सोते समय उसके हृदय के ऊपर इस डिबिया को रख दें तो वह स्त्री या पुरुष नींद में ही अपने हृदय के गुप्त भेदों को स्वयं कहना आरम्भ कर देगा और जगने पर उसे यह स्मरण न रहेगा कि उसने सोते समय क्या-क्या बातें कही हैं।

पुरुष के मन के गुप्त भेद को जानने का तन्त्र

किसी पुरुष के मन के गुप्त भेद को जानने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

कौवे के शरीर के दाएँ भाग की एक हड्डी को साफ करके अपने पास रखकर छोड़ें। जब किसी पुरुष के मन के गुप्त भेद को जानना हो उस समय उस हड्डी को अपने दाएँ हाथ में लेकर अथवा अपनी दाईं ओर की जेब में रखकर उस मनुष्य के पास जा बैठे तो वह उस हड्डी के चमत्कारिक प्रभाव से अपने मन की सभी गुप्त बातों तथा भेदों को अपने आप कहना आरम्भ कर देगा, भले ही उसके कारण उसे आगे चलकर कितनी ही हानि क्यों न उठानी पड़े।

स्त्री के मन के गुप्त भेद को जानने का तन्त्र

किसी स्त्री के मन के गुप्त भेद को जानने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

चन्द्र ग्रहण की रात्रि के दो बजे के समय किसी कौवे के घोंसले के पास जाकर सोते हुए कौवे को अपने दाएँ हाथ से पकड़कर ले आएँ। घर आकर उसे लकड़ी के पिंजड़े में बन्द कर दें।

दूसरे दिन प्रातःकाल उठकर कौवे को कुएँ के शुद्ध पानी से स्नान

कराएँ तथा पिंजड़े को भी भली-भाँति धोएँ फिर पिंजड़े को कपड़े से पोंछकर और सुखाकर उसके निचले हिस्से में हरे रंग का एक कपड़ा बिछा दें तथा कौवे को भी बन्द कर दें।

एक घण्टे बाद एक कांसे के बर्तन में राल, चीनी, धूप, सफेद चन्दन का चूरा और मस्तगी प्रत्येक वस्तु तीन-तीन माशे तथा असली कस्तूरी तीन रत्ती लेकर रख दें। उनके ऊपर बेरी के दहकते हुए कोयलों को रख दें। उस बर्तन को कौवे के पिंजड़े वाले कमरे में रख दें, ताकि वह कमरा सुगन्धित हो जाए। जब धुआँ समाप्त हो जाए परन्तु कमरा सुगन्धित ही हो उस समय शुद्ध घी से चुपड़ी हुई जौ और गेहूँ के सम्मिलित आटे की एक रोटी का चूरा बनाकर उसमें खांड और शुद्ध घी मिलाकर मलीदा बनाएँ उस मलीदे को कौवे के पिंजड़े में खाने के लिए रख दें तथा एक प्याले में थोड़ा सा पानी भी भरकर रख दें। प्याले के पानी में थोड़ी सी असली केशर एवं अम्बर भी डाल देना चाहिए। इन सब वस्तुओं को पिंजड़े में रखकर स्वयं कमरे से बाहर निकल जाएँ।

एक घण्टे के बाद उस कमरे में पुनः पहुँचे। तब तक कौवा मलीदा खा चुका होगा तथा पानी पी चुका होगा। तब कौवे के पिंजड़े को कमरे से बाहर किसी खुले और हवादार स्थान अथवा छत पर रख दें। दोपहर के समय उसे खाने के लिए केवल दही दें तथा सन्ध्या के समय पूर्वोक्त प्रकार का मलीदा और पानी दें। इस प्रकार तीन दिन तक करते रहें।

चौथे दिन प्रातःकाल आठ बजे कौवे के पीने के पानी में शहद मिला दें। जब वह उस पानी को पी चुके, चाहे एक या दो बूँद ही क्यों न पिये, तब उसे पिंजड़े से बाहर निकालकर मार डालें तथा हृदय को निकालकर सुरक्षित रख छोड़ें। मृत शरीर के शेष भागों को किसी निर्जन स्थान में गड्ढा खोदकर दबा देना चाहिए।

कौवे के हृदय को दो माशे खालिस शराब में डालकर तीन दिन तक पड़ा रहने दें। चौथे दिन उसे शराब से बाहर निकाल लें तथा उस पर सब ओर सिन्दूर छिड़क कर एक लकड़ी की डिबिया में बन्द करके रख दें।

इसके उपरान्त एक खरल में थोड़ा सा कपूर, केशर और गुलाब जल

डालकर खूब घोटें। जब वह लेई की तरह हो जाए तब डिबिया में रखे हुए हृदय को बाहर निकालकर उसके ऊपर इस लेई को चारों ओर लगा दें तथा छाया में रखकर सुखा लें। जब सूख जाए तब उसे पूर्वोक्त सिन्दूर वाली डिबिया में बन्द करके फिर रख दें।

जब कभी किसी स्त्री के मन का भेद जानना हो उस समय निम्नलिखित क्रिया करें—

जिस समय वह स्त्री गहरी नींद में सो रही हो उस समय उक्त कौवे के दिल वाली डिबिया को उस सोई हुई स्त्री के हृदय पर रख दें। फलस्वरूप वह स्त्री नींद में ही बोलना और अपने मन के सभी गुप्त भेदों को स्वयं ही प्रकट करना आरम्भ कर देगी। जब वह सब कुछ बता चुके तब डिबिया को उसके हृदय के ऊपर से हटा लेना चाहिए। जब वह स्त्री सोकर उठेगी तब उसे यह ध्यान नहीं रहेगा कि सोते समय वह अपने मुँह से क्या-क्या कह गई है।

गढ़े हुए धन की प्राप्ति का तन्त्र

गढ़े धन को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

यदि धन गाढ़ने वाले व्यक्ति के विषय में यह पता हो कि वह पुरुष था तो एक नर कौवे को और यदि पता हो कि वह स्त्री थी तो वह मादा कौवी को पकड़कर पिंजड़े में बन्द कर दें। तीन दिन तक उसे खाने के लिए साधारण आहार के अतिरिक्त दिन में एक बार किसी भी समय शुद्ध शहद के साथ गेहूँ की रोटी अवश्य दें।

चौथे दिन उस कौवे को मारकर चोंच सहित उसके सिर को अलग रख ले तथा शरीर के शेष भाग को किसी निर्जन स्थान में गड्ढा खोदकर गाढ़ दें। तत्पश्चात् सिर को एक लकड़ी की डिबियाँ में बन्द करके सूखने के लिए किसी अँधेरी कोठरी में रख दें। ४० दिन बाद उस डिबिया को खोलकर देखें तब तक वह सिर बिल्कुल सुख चुका होगा।

फिर शुक्रवार के दिन उस सूखे हुए सिर को एक घण्टे के लिए डिबिया खोलकर धूप में रख दें। तदुपरान्त उसमें दस बूँद असली गुलाब

जल तथा एक माशा शुद्ध शराब डालकर डिबिया को बन्द कर दें।

फिर जब अमावस्या तिथि आए तब आधी रात के समय उक्त डिबिया को अपने सोने की चारपाई के सिराहने के नीचे जमीन में एक फुट गहरा गड्ढा खोदकर गाढ़ दें। चारपाई का सिरहाना पूर्व की ओर तथा पैताना पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिए।

जितने दिन डिबिया में रखे हुए सिर के सूखने में लगे थे उतने ही दिन तक उस चारपाई पर नियमित रूप से सोया करें। इसी बीच एक दिन स्वप्न में आपको उस व्यक्ति के दर्शन हो जाएँगे। जिसने धन को जमीन के भीतर गाढ़ा होगा। साथ ही स्वप्न में ही वह गढ़े हुए धन का सम्पूर्ण भेद भी आपको विस्तारपूर्वक बता देगा तथा सोकर जागने के बाद भी आपको स्वप्न की सभी बातें ज्यों की त्यों याद बनी रहेंगी। उन बातों के अनुसार आप निश्चित स्थान को खोदेंगे तो वहाँ पर गढ़ा हुआ धन आपको अवश्य मिल जाएगा।

गढ़ा हुआ धन दिखाई देने का तन्त्र

गढ़ा हुआ धन दिखाई देने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

काले कौवे की जीभ को तिल्ली के तेल में जलाकर उसे काजल की भाँति पीस लें। इस काजल को उस व्यक्ति की आँखों में लगाएँ जो उल्टा (विष्णु पद) पैदा हुआ हो तो उस व्यक्ति को जमीन के भीतर गढ़ा हुआ धन दिखाई लगता है।

गुप्त खजाना दिखाई देने का तन्त्र

गुप्त खजाना दिखाई देने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

कौवे की जीभ और हुदहुद पक्षी का हृदय इन दोनों वस्तुओं को छाया में सुखाकर खरल में डालकर खूब महीन पीस लें। इस महीन चूर्ण में शहद मिलाकर आँखों में लगाने से पृथ्वी के भीतर गढ़ा हुआ गुप्त खजाना दिखाई देने लगता है।

वाक्-सिद्धि का तन्त्र

वाक्-सिद्धि के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

पूर्णिमा की रात्रि को बारह बजे एक कौवे को उसके घोंसले में से सोते हुए पकड़ ले और उसे अपने दाएँ हाथ में लेकर छाती से लगाए हुए घर लौट आएँ तथा पिंजड़े में बन्द कर दें।

प्रातः चार बजे के समय उस पिंजड़े को अपने सामने रखकर बैठ जाएँ तथा एक घण्टे तक टकटकी लगाकर कौवे की गतिविधियों को देखते रहें।

जब दिन निकलने को हो और कौवा पहली बार कांव शब्द का उच्चारण करे उसी समय उसे पिंजड़े से बाहर निकालकर एक तेज छुरी की सहायता से उसकी पूरी जीभ को बाहर निकाल लें, परन्तु यह ध्यान रखें कि छुरी के कारण उसकी जीभ पर कोई छिद्र न होने पाए।

कौवे के मृत शरीर के शेभ भाग को किसी निर्जन स्थान में गड्ढा खोदकर दबा दें।

कौवे की जीभ को छाया में सुखाने के बाद एक खरल में डाल दें। उसके साथ ही एक माशा अनबिंधे मोती, एक माशा गोरोचन, एक तोला मेंहदी तथा दो तोले केवड़ा का अर्क—इन सब वस्तुओं को भी खरल में डालकर घोंटना आरम्भ कर दें। यहाँ तक घुटाई करें कि सब वस्तुएँ मैदे की तरह महीन तथा खुश्क हो जाएँ। तदुपरान्त उसमें तीन बूँद शुद्ध शहद डालकर सबको एक गोली बनाकर छाया में सुखा लें।

तदुपरान्त सुनार से एक ऐसा ताबीज बनवाएँ, जिसमें तीन रत्ती प्रति तौले के हिसाब से शुद्ध सोना, बाकी सब ताँबा हो। उस ताबीज के भीतर पूर्वोक्त गोली को भरकर, सुनार के द्वारा सोने का टाँका लगवाकर ताबीज का मुँह बन्द करा दें।

उक्त ताबीज को हरे रंग के रेशमी धागे में पिरोकर अपने गले में पहन लें। डोरे की लम्बाई इतनी होनी चाहिए कि ताबीज आपके हृदय को स्पर्श करता रहे। ताबीज को सबसे नीचे रखकर उसके ऊपर से वस्त्र पहन लें। इस ताबीज को धारण करने के बाद, ताबीज के प्रभाव से आपके मुँह से जो भी शब्द निकलेंगे, वे सब सत्य सिद्ध होंगे। इस चमत्कार को देखकर सभी लोग

आपकी अत्यन्त प्रशंसा करेंगे।

एक विशेष प्रकार का तन्त्र

मनोकामनाओं की पूर्ति, रोगों से मुक्ति, धन, यश, विद्या आदि की प्राप्ति के लिए एक विशेष प्रकार का तन्त्र नीचे लिखे अनुसार बताया गया—

जंगल में रात के समय किसी ऐसे स्थान पर जाएँ, जहाँ बहुत से कौवे रहते हों। अपने साथ थोड़े से काले घोड़े की पूँछ के बाल भी लेते जाएँ।

जिन घोंसलों में कौवों के छोटे-छोटे बच्चे दिखाई दें (ध्यान रहे कि उनमें कोयल का कोई बच्चा न हो) उन बच्चों के दोनों पाँवों को घोड़े के बाल से बाँध आएँ।

प्रातःकाल छह बजे के लगभग उन घोंसलों को पुनः जाकर देखें तो पता चलेगा कि जिन बच्चों के पाँवों को आप बाँध आएँ थे, उनके पाँव खुल गए हैं। तब उन बच्चों को अलग करके, उन घोंसलों को उखाड़कर इकट्ठा करके घर ले आएँ।

फिर अँधेरी रात में बारह बजे के लगभग उन घोंसलों को साथ लेकर लगभग किसी नदी के किनारे जा पहुँचे और वहाँ प्रत्येक घोंसले के एक-एक तिनके को अलग-अलग करके नदी के पानी में डालना आरम्भ कर दें। तिनकों को पानी में डालते समय निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते जाएँ—

'कौवा कौड़े शाह मस्त बड़ा, कौवा कौड़े शाह अस्त बड़ा'।

इन तिनकों में से कोई एक तिनका अत्यन्त शक्ति सम्पन्न होगा। जब आप उस तिनके को नदी के पानी में डालेंगे, उस समय अचानक ही नदी में बाढ़ सी आ जाएगी और पानी में बड़ी-बड़ी लहरें उठकर शोर सा होने लगेगा। अनेक प्रकार की भयानक आवाजें भी सुनाई पड़ उठेंगी।

ऐसे समय में यदि आप भयभीत होकर बेहोश हो गए अथवा गिर पड़े अथवा भाग खड़े हुए तो आपका सम्पूर्ण परिश्रम बेकार चला जाएगा। अतः तनिक भी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।

जब नदी में उक्त प्रकार से तरंगे उठने लगे, तब और तिनके डालना

बन्द कर दें। आधा घण्टे बाद वह सब उपद्रव बन्द हो जाएँगे तथा चारों ओर एक दम खामोशी छा जाएगी। जब खामोशी को छाए हुए पन्द्रह मिनट का समय व्यतीत हो जाए, तब अपने हाथ के उस घोंसले के शेष भाग को, जिसका तिनका नदी में डालने से उपद्रव आरम्भ हुए थे अपने दाएँ हाथ में मजबूती से पकड़ लें और उसे तीन बार अपने मुँह में चूमकर पहले मुँह से फिर छाती से स्पर्श कराएँ। तत्पश्चात् नदी से लौटकर अपने घर चले आएँ।

अब उक्त घोंसले के प्रत्येक तिनके को अत्यन्त शक्तिशाली समझना चाहिए। आवश्यकता के समय इस घोंसले के एक-एक तिनके से काम लेना चाहिए। इस घोंसले के तिनके को अपनी पगड़ी या टोपी के अग्रभाग अथवा दाईं ओर की जेब में रखकर यदि कभी राज दरबार में उच्चाधिकारी के पास अथवा अन्य किसी स्थान पर जिस किस काम की इच्छा लेकर पहुँचा जाएगा वह काम अवश्य पूरा होगा। इस घोंसले के तिनके को सोने अथवा चाँदी के ताबीज में मढ़वाकर गले में भी पहना जा सकता है। ताबीज में काले या सफेद रंग का रेशमी डोरा पिरोना चाहिए तथा वह डोरा इतना बड़ा होना चाहिए कि ताबीज केवल छाती तक लटका रहे उससे नीचे न जाए।

पूर्वोक्त घोंसले को एक ऐसी डिबिया में बन्द करके रखना चाहिए, जिसमें थोड़ा सा सिन्दूर, कपूर और सफेद चन्दन का बुरादा भी रख दिया गया हो। जब भी किसी कार्य साधन के लिए घोंसले में से तिनके को निकाला जाए, तब उस तिनके को पहले दूध अथवा दूध की लस्सी में डुबाकर स्नान करा देना चाहिए। उसके बाद ही उसे पगड़ी, टोपी अथवा जेब में रखना चाहिए।

इस घोंसले के तिनके को ताबीज में मढ़वाकर धारण करने से रोगी का रोग भी दूर हो जाता है, अतः किसी भी रोगी को हम घोंसले का तिनका धारण करने के लिए दिया जा सकता है।

इस तिनके को धारण करने से व्यापार में लाभ, रोग से छुटकारा, नौकरी में तरक्की, बन्धन से छुटकारा, मुकद्मे में विजय, परीक्षा में सफलता, अधिकारियों की प्रसन्नता, सर्वत्र सम्मान, धन तथा यश की प्राप्ति होती है। इस घोंसले का प्रत्येंक तिनका जादू की तरह अपना प्रभाव दिखाता है, परन्तु

किसी भी बुरे अथवा पापकर्म के लिए इन तिनकों का प्रयोग नहीं करना चाहिए अन्यथा उस समय तो आपका मनोरथ पूरा हो जाएगा परन्तु बाद में उसका परिणाम अत्यन्त दुःखदायी सिद्ध होगा। यह तिनका चितावर की लकड़ी के नाम से जाता है जिसका तन्त्र शास्त्र में बहुत महत्त्व है।

शत्रु को परास्त करने का तन्त्र

शत्रु को परास्त करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

चाँद की पहली रात्रि अर्थात् द्वितीया के दिन जब चन्द्रमा दिखाई दे उसके दूसरे दिन प्रातःकाल एक कौवे को पकड़कर पिंजड़े में बन्द कर दें। चार दिन तक उसे साधारण दाना-पानी देते रहें। पाँचवे दिन उसका पेट चीरकर दिल निकालकर सुरक्षित रख लें। मृत शरीर के शेष भाग को किसी निर्जन स्थान में गड्ढा खोदकर गाढ़ दें। गाढ़ने के लिए अपने घर से पश्चिम दिशा की ओर जाना चाहिए।

फिर कौवे के दिल को अंगूर के सिरके में डालकर दो दिन तक पड़ा रहने दें। जिस बर्तन में सिरका हो उसका मुँह ढाक कर रखें। तीसरे दिन उसे सिरके से बाहर निकालकर स्वच्छ पानी से भली-भाँति साफ कर लें तथा धूप में इस प्रकार सुखा लें कि वह गल-सड़ न सके। जब वह सूखकर बिल्कुल रीठे की तरह हो जाए तब उसे चमेली के तेल में डालकर तर कर लें और उसके ऊपर शुद्ध सिन्दूर का लेप कर दें फिर उसे एक लकड़ी की डिबिया में बन्द करके सुरक्षित कर दें।

प्रत्येक बृहस्पतिवार की रात्रि को जब उस डिबिया में चमेली के तेल की एक बूँद डालकर दो-तीन रत्ती शुद्ध सिन्दूर छिड़क दिया करें। लकड़ी की डिबिया को अपने घर की किसी आलमारी में सुरक्षित रखा करें। सप्ताह में एक दिन अर्थात् केवल बृहस्पतिवार की रात्रि में ही चमेली का तेल और सिन्दूर लगाने के लिए उसे खोला करें।

जब तक यह डिबिया घर में रहेगी तब तक शत्रु परास्त होता रहेगा और किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सकेगा। यदि वह आपको अथवा आपके परिवार को हानि पहुँचाने का प्रयास करेगा भी तो उसे स्वयं ही हानि

उठानी पड़ेगी। यात्रा के समय इस डिबिया को अपनी दाईं ओर की जेब में साथ रखने से सब प्रकार के संकटों से सुरक्षा बनी रहेगी और कोई शत्रु बाल भी बाँका नहीं कर पाएगा।

शत्रु के हृदय को परिवर्तित करने का तन्त्र

शत्रु के हृदय को परिवर्तित करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

एक कौवे के दिन को निकालकर उस मार्ग में गाढ़ दें जहाँ से शत्रु का आना-जाना बना रहता है। जिस समय भी शत्रु का बायाँ पैर उस स्थान पर पड़ेगा उसी समय से उसका हृदय परिवर्तित हो जाएगा और शत्रुता के विचार को एक दम त्याग देगा। यदि न्यायालय में भी कोई मामला उसने दायर कर रखा होगा तो उसकी पैरवी करना भी छोड़ देगा। जिसके कारण वह मामला खारिज हो जाएगा।

शत्रु द्वारा मुकाबला न कर पाने का तन्त्र

शत्रु द्वारा मुकाबला न कर पाने के सम्बन्ध में निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

मंगलवार अथवा रविवार के दिन काले घोड़े और बकरे के पाँच-पाँच बाल एवं काले मुर्गे तथा कौवे के चार-चार पंख लेकर सबको जलाकर राख कर लें। फिर उस राख को पानी में खरल करके शीशी में सब छोड़ें। इस पानी का तिलक मस्तक पर लगाकर जाने से शत्रु भयभीत हो जाएगा और मुकाबला करने की हिम्मत नहीं करेगा।

शत्रु को कष्ट पहुँचाने का तन्त्र

शत्रु को कष्ट पहुँचाने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

कौए की हड्डी की तीन अंगुल या सात अंगुल की कील बनाकर उसे निम्नलिखित मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करें—

'ओं जां जां जबीं जिये जूँ ठः ठः स्वाहा।'

अभिमन्त्रित कील को शत्रु के घर में गाढ़ दे तो वह अनेक प्रकार कष्ट पाता है।

शत्रु को बीमार करने का तन्त्र

शत्रु को बीमार करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

कौए के शरीर के दाईं और के पंख तथा गीदड़ की पूँछ के बाद इन दोनों वस्तुओं को रविवार के दिन लाकर गूगल की धूप दें। फिर इन वस्तुओं को शत्रु के सोने के बिस्तर पर अथवा बिस्तर के नीचे दबाकर रख दें तो वह शत्रु बिस्तर पर सोते ही बीमार अथवा पागल हो जाएगा।

शत्रु को घर से भगाने का तन्त्र

शत्रु को घर से भगाने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

मंगलवार के दिन किसी वृक्ष से कौए का घोंसला उतार लाएँ। घर लाकर, उसे जलाकर राख कर लें। उस राख को जिस शत्रु के मस्तक पर थोड़ी मात्रा में डाल दिया जाएगा, उसका मन ऐसा उचटेगा कि वह भयभीत होकर अपना घर छोड़कर किसी अन्य स्थान को भाग जाएगा।

प्रतिद्वन्दी को नीचा दिखाने का मन्त्र

प्रतिद्वन्दी को नीचा दिखाने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताए गए हैं—

१. यदि कुश्ती, वजन उठाना आदि शारीरिक बल की प्रतिद्वन्दिता का मामला हो तो अपने दोनों पाँवों के तलवे में तथा दोनों हाथों की हथेलियों पर कौए की चरबी का साधारण लेप कर लें।
२. यदि दिमागी शक्ति या मुकाबला हो तो अपने मस्तक पर हाथ के अंगूठे द्वारा कौए की चरबी का छोटा तिलक लगा लें।
३. यदि वाद-विवाद, शास्त्रार्थ आदि का मुकाबला हो तो यह उपाय करें कि किसी जीवित कौए को पकड़ कर सेब, नाशपाती, अमरूद आदि किसी फल में उस कौए की चोंच को दो-तीन बार दबाकर निकाल लें। फिर उस 'फल को स्वयं खाकर, एक

घंटे बाद मुकाबिला करने के लिए जाएँ।'

उपर्युक्त विधियों से साधन करने पर मुकाबिले में अपने प्रतिद्वन्दी पर विजय प्राप्त होती है।

दो प्रमियों में शत्रुता कराने का तन्त्र

दो प्रेमियों में शत्रुता कराने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताए गए हैं—

१. सोमवार की रात्रि में उल्लू तथा कौए के पंखों को एक साथ जलाकर राख कर लें। यह राख जिन दो प्रमियों के मस्तक पर डाल दी जाएगी, उनमें परस्पर शत्रुता हो जाएगी।

२. रविवार के दिन उल्लू और कौआ इन दोनों का रक्त निकालकर एक शीशी में भर लें। फिर दो प्रेमियों के वस्त्र का एक-एक टुकड़ा लेकर, उन्हें उपर्युक्त शीशी के रक्त में तर करके रख लें। तदुपरान्त कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात्रि में उन टुक्ड़ों को जलाकर राख कर लें। बाद में जब इस राख को उन दोनों प्रेमियों के मस्तक पर डाला जाएगा तो वे एक दूसरे के शत्रु हो जाएँगे।

३. अमावस्या की रात्रि में बिच्छू का सिर लेकर रख लें। फिर मंगलवार तथा रविवार के दिन घूग्घू पक्षी का सिर ले आएँ। तत्पश्चात् किसी दिन कौए के नाखून, चील के पंख तथा उल्लू के पंख ले आएँ। फिर इन सबको बहुत महीन पीस कर, गूगल की धूनी देकर रख लें, आवश्यकता के समय इस चूर्ण को एक-एक चुटकी जिन दो प्रेमियों के घरों में डाल दी जाएगी, उनमें परस्पर शत्रुता हो जाएगी। यदि इस राख को केवल एक ही घर में डाला जाएगा, तो उस घर में रहने वाले पति-पत्नि में परस्पर झगड़ा होना आरंभ हो जाएगा।

४. कौए की आँख को जलते हुए कोयलों पर रखकर यदि दो प्रेमियों के बीच धुँआ दिया जाए, तो उन दोनों में परस्पर शत्रुता हो जाती है।

हाकिम को वश में करने का तन्त्र

हाकिम को वश में करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है।

चाँद की ग्यारहवीं तारीख को रात के ग्यारह बजे कौए के घोंसले में से एक जोड़ी कौए (नर और मादा) को पकड़कर घर ले आएँ। कौए को पकड़ने के लिए जाते समय से लेकर लौटकर वापिस आते समय तक किसी आदमी की दृष्टि आपके ऊपर न पड़ सके, ऐसा प्रबन्ध होना आवश्यक है। कौओं को लेकर घर लौटते समय अथवा घर में जाते समय स्वयं भी पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। घर लाकर कौओ को एक ही पिंजड़े में बंद कर दें तथा खाने के लिए सामान्य दाना-पानी रख दें।

सवेरा होने पर उन दोनों कौओं के सब नाखून काटकर किसी डिबिया में सुरक्षित रख लें, फिर उन दोनों को उन्हीं के घोंसलें में ले जाकर बैठा आएँ।

तदुपरान्त रात्रि को ठीक बारह बजे किसी एकान्त कमरे में बैठकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए उन नाखूनों पर फूँक मारते जाएँ। कुल मिलाकर २२५० बार मन्त्र पढ़कर फूँक मारें। यह क्रिया ११ दिन तक निरन्तर करते रहें। मन्त्र यह है—**'फैलके चन्द्रमुखे सती का पैर पड़े धन कड़े सलाम कर बीमजारी फैल के बीम ताड़े फल लाग तार सवा स्तूर बडिया लाग मेरी अडिया लाग सुन्दर कास्का बड़े फल के दिया जाम कड़े असत नाम आदेश की।'**

उपर्युक्त विधि से ग्यारह दिन तक साधन करने के उपरांत उन नाखूनों को किसी कपड़े में सीं कर रख लें।

जब किस हाकिम के पास जाना हो तो उस कपड़े की पोटली को अपनी कमर में बाँधकर जाएँ तो उसके प्रभाव से हाकिम वशीभूत होकर अच्छा व्यवहार करेगा।

पति-पत्नि में प्रेम वृद्धि के तन्त्र

पति-पत्नि में प्रेम वृद्धि के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताए गए हैं—

१. एक नर-कौए को पकड़कर उसकी पीठ के पंख नोंच लें। फिर

उन पंखों को गुगल और कपूर की धूनी देकर, जलते हुए कोयलों पर रखकर राख बना लें। उस राख को खरल में पीसकर महीन चूर्ण कर लें तथा शीशी में भरकर रख लें। प्रत्येक रविवार के दिन स्नान करने के उपरान्त उक्त शीशी में से थोड़ा सा चूर्ण निकाल कर, उसके द्वारा अपने मस्तक पर तिलक लगा लें। इस प्रयोग को करने वाले पुरुष की पत्नि उससे अत्यधिक प्रेम करने लगती है।

२. एक मादा कौवी को पकड़कर उसकी पूँछ के नीचे के पंख नोंच लें। फिर उन्हें सफेद चन्दन का चूरा तथा हरसिल की धूनी देकर, जलते हुए कोयलों पर रखकर राख बना लें। तदुपरान्त उस राख को खरल में डालकर महीन चूर्ण बनाकर शीशी में भर लें। जो स्त्री प्रत्येक बृहस्पतिवार के दिन उस शीशी में से थोड़ा सा चूर्ण निकालकर अपने मस्तक पर बिन्दी लगाएगी, उसका पति उससे अत्यधिक प्रेम करने लगेगा।

स्त्री को वश में करने का तन्त्र

स्त्री को वश में करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताए गए हैं—

१. शनिवार के दिन काले कौए की जीभ और श्मशान की राख लाकर, उसमें अपने हाथ-पाँव के सभी नाखूनों की राख अपनी प्रेमिका के बाएँ पाँव के नीचे मिट्टी या धूल तथा चौराहे की मिट्टी या धूल—इन सबको मिलाकर, पीसकर चूर्ण कर लें। उस चूर्ण को किसी शीशी में भरकर रख लें। आवश्यकता के समय अपनी प्रेमिका के मस्तक पर उक्त शीशी का थोड़ा सा चूर्ण डाल दें तो वह वशीभूत हो जाएगी।

२. रविवार के दिन एक कौए को पकड़कर पिंजड़े में बंदकर दें। उसे खाने के लिए सामान्य दाना-पानी के अतिरिक्त दिन में एक बार थोड़ा सा दूध और दही—जिसमें शहद अथवा खाँड मिली हुई हो, अवश्य दें।

मंगलवार की रात को बारह और एक बजे के बीच कौए की छाती को चीर कर, उसका दिल निकालकर सुरक्षित रख लें। शेष भाग को किसी स्थान में गड्ढा खोदकर गाढ़ दें। तत्पश्चात् जिस रास्ते से प्रेयसी का निरन्तर आना-जाना बना रहता हो, उसके बीच में तीन-चार इंच गहरा गड्ढा खोदकर, उसमें पूर्वोक्त कौए के दिल को गाढ़कर, ऊपर से गड्ढे को बन्द कर दें। तदुपरान्त स्वयं भी उस मार्ग से आना-जाना बनाए रखें। जब कभी प्रेमिका से साक्षात्कार हो, तब उसके साथ शिष्ट एवं मधुर व्यवहार करें। जिस दिन उस प्रेमिका का दायाँ-पाँव उस मार्ग में गड़े हुए कौए के दिल वाले स्थान पर पड़ेगा, उसी दिन उसका हृदय अपने प्रेमी के प्रति अत्यन्त आकर्षित हो जाएगा और वह अपने प्रेमी के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने के लिए भी प्रस्तुत हो जाएगी।

प्रेमिका वशीकरण तन्त्र

अपने प्रेमी को वशीभूत करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

चाँद की पहली तारीखों में से किसी भी तारीख को जंगल में जाकर कौए के एक पूरे परिवार अर्थात् नर और मादा दोनों को पकड़कर घर ले आएँ और उसे पिंजड़ें में बंद कर दें। खाने के लिए दिन में सामान्य भोजन दें। रात्रि के समय उबले हुए सफेद चावलों में घी और शक्कर मिलाकर, उनमें एक माशा चन्दन का तेल डाल कर किसी कोरे बर्तन में रख लें। रात के समय किसी एकान्त कमरे में बैठकर उक्त चावलों के बर्तन तथा कौओं के पिंजड़े को अपने सामने रखकर बैठ जाएँ। फिर चावलों के बर्तन तथा पिंजड़े को लोबान की धूनी देकर निम्नलिखित मन्त्र को ११०० की संख्या में पढ़ें। मन्त्र यह है—

'फूल हँसे फूल बसे मोहन नार सिघ बसे जो ले उसकी बास सो चला आवे मेरे पास अमुक की पुशी, अमुक गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वर महादेव की माया चाटने कनपुटी नर्क में पड़े।'

प्रत्येक बार इस मन्त्र को पढ़कर चावलों पर फूँक मारनी चाहिए। मन्त्र

की संख्या पूरी हो जाने पर चावलों के बर्तन को कौओं के पिंजड़ें में रख दें। कौए उन चावलों को उसी समय या रात भर में खाकर समाप्त कर डालेंगे। यदि दूसरे दिन यह देखें कि कुछ चावल खाने से बाकी बच रहे हैं, तो उन्हें बर्तन में से निकाल कर, जमीन में किसी स्थान पर गड्ढा खोद कर उसमें दबा दें।

इस प्रकार ग्यारह दिन तक इसी क्रिया को निरन्तर करते रहें। बारहवें दिन उन दोनों कौओं को मारकर, उन दोनों को रक्त निकालकर किसी चीनी मिट्टी के बर्तन में रख लें तथा उनके हृदय को निकाल कर अलग से सुरक्षित रखें। मृत-शरीर को किसी निर्जन स्थान में गड्ढा खोद कर दबा दें।

कौओं के दिल को छाया में सुखा कर चाँदी के ताबीज में भरकर सुरक्षित रख छोड़ें तथा प्याली का रक्त तीन दिन बाद जब सूख जाए, तब उसे खरल में डालकर पीस लें और कपड़छान करके तीन माशे रक्त के चूर्ण में एक तोले के हिसाब से धनिए का इत्र मिलाकर, किसी शीशी में भरकर रख लें।

जब कभी किसी को वश में करने की इच्छा हो, उस समय पूर्वोक्त ताबीज को अपनी दाईं भुजा पर बाँधकर उसके सामने जा पहुँचे तो वह देखते ही आशिक हो जाएगा। इसी प्रकार शीशी के इत्र की कुछ बूँदों को उसके वस्त्र पर लगा दें अथवा सुखा दें, तो वह जीवन भर प्रेम करता रहेगा। इत्र की शीशी को भी पूर्वोक्त मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर देना चाहिए। मन्त्र में जिस स्थान पर अमुक शब्द आया है, उस स्थान पर अपनी प्रेमिका के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

प्रेमी-वशीकरण मन्त्र

अपने प्रेमी (फिर चाहे वह स्त्री हो या पुरुष) को वश में करने के लिए अग्रलिखित तन्त्र बताए गए हैं—

१. चाँद की पहली तारीखों वाले रविवार के दिन सूर्योदय से पूर्व श्मशान में जाकर वहाँ से थोड़ी सी राख ले आएँ। फिर कौए के पंख लाकर जलाएँ और उनकी भस्म को श्मशान की राख में मिला दें। तत्पश्चात् अपने हाथ-पाँव के बीसों नाखूनों को काटकर तथा जलाकर राख कर लें और उनकी राख को भी पूर्वोक्त राख में मिलाकर एक दिल कर दें। इस राख को शीशी में भरकर रख लें। आवश्यकता के समय, जिसे वश में करना हो उसके कपड़ों पर या शरीर पर उक्त शीशी में से थोड़ी सी राख निकालकर, उसे अपने थूक से तर करके लगादें तो वह व्यक्ति राख लगाने वाले के वशीभूत होकर उससे अत्यधिक प्रेम करने लगेगा।

२. कौए के पंख, मोर के पंख तथा हुदहुद पक्षी के सिर का ताज— इन तीनों वस्तुओं को जलाकर राख कर लें। फिर रविवार के दिन सूर्योदय से पूर्व चौराहे की मिट्टी लाकर, पूर्वोक्त राख में मिलाकर रख लें आवश्यकता के समय उक्त मिश्रण को अपने थूक से तर करके, जिस व्यक्ति के वस्त्र अथवा शरीर से लगा दिया जाएगा, वही वशीभूत होकर प्रेम करने लगेगा।

३. महीने के पहले सोमवार को सूर्योदय से पूर्व किसी कौए के घोंसले से थोड़े से पंख ले आएँ। उन्हें बंद अंजीर की लकड़ी में बाँधकर, लकड़ी को किसी काली कुतिया के शरीर पर सात बार मारकर घर ले आएँ। घर लाकर उस लकड़ी को पंखों सहित जलाकर भस्म कर लें। उस भस्म को अपने थूक में तर करके छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर रख लें। आवश्यकता के समय उनमें से एक गोली को जिस स्त्री अथवा पुरुष के शरीर पर मारा जाएगा, कुत्ते की तरह गोली मारने वाले के पीछे-पीछे घूमेगा अर्थात् उसके वशीभूत हो जाएगा।

प्रेयसी को वश में करने का तन्त्र

प्रेयसी को वश में करने के लिए अग्रलिखित तन्त्र कहा गया है—

चाँद की पहली, दूसरी अथवा तीसरी तारीख को जंगल में से एक कौए को पकड़ लाएँ। उसे घर लाकर, पिंजड़ें में बंद करके साधारण पानी देते रहें। कौए को पकड़ने के बाद से जब पहला शनिवार आए, तब रात्रि के

समय किसी एकान्त कमरे में बैठकर, जिसमें एक बिस्तर के अतिरिक्त अन्य कोई सामान न हो, निम्नलिखित प्रयोग आरंभ करें।

मिट्टी के एक कोरे दीपक में तिल का तेल भरें। फिर एक कागज के ऊपर निम्नलिखित मन्त्र को काली स्याही से लिखकर, उस कागज की महीन बत्ती बना लें और उस बत्ती को साफ रुई में लपेट कर दीपक में डाल दें। कागज पर लिखने का मन्त्र इस प्रकार है—

'काला कलवा काला रात, काला भेजूं आधी रात,
जब वह आवे आधी रात, तन मन मुझ लागे सारी रात,
कलवा वीर अमुक को बैठी को उठा लाओ।
सोती को जगा लाओ, खड़ी को दौड़ा लाओ।
हाल लाओ, फिलहाल लाओ, जो न लावो।
तो सगी बहिन भाँजी के सिर पग धरो।'

इस मन्त्र में जिस स्थान पर 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ अपनी प्रेमिका के नाम को लिखना तथा बोलना चाहिए।

पूर्वोक्त विधि से जब दीपक तैयार हो जाए, तब कौए के पिंजड़े को कमरे के ठीक बीचों-बीच रखकर उसके ऊपर दीपक को रखकर जलाएँ तथा स्वयं पिंजड़े के सामने बैठकर पूर्वोक्त मन्त्र को ४१ बार इतने ऊँचे स्वर से पढ़ें कि उसकी ध्वनि कौए के कानों में भी सुनाई दे। जब मन्त्र संख्या पूरी हो जाए, तो दीपक की बत्ती को धीरे-धीरे बढ़ाकर, सारे तेल को समाप्त कर डालें। खाली दीपक को सुरक्षित रहने दें।

दूसरे दिन सुबह जंगल में जाकर रात वाले दीपक को, जमीन में किसी स्थान पर गड्ढा खोदकर दबा दें।

दूसरे दिन फिर नया दीपक तैयार करके पूर्वोक्त सभी क्रियाओं को दोहराएँ। इसी प्रकार निरन्तर इक्कीस दिन तक सभी क्रियाओं को दोहराते रहें। जब इक्कीसवाँ साधन पूरा हो जाए, तब एक कागज के ऊपर पूर्वोक्त मन्त्र को लिखकर उस कौए की बाजू में बाँध दे तथा उसी दिन रात्रि को बारह बजे के लगभग, पिंजड़े में बंद कौए को उसी स्थान पर ले जाकर छोड़ आएँ, जहाँ से कि उसे पकड़ा था। कौए को छोड़कर लौटते समय पीछे

मुड़कर न देखें।

इस साधन को पूरा होने के एक सप्ताह के भीतर ही, प्रेयसी कितनी भी कठोर हृदय की क्यों न हो, साधक की ओर आकर्षित तथा वशीभूत होकर, उसके पाँवों पर आ गिरती है।

प्रेमिका वशीकरण तन्त्र

प्रेमिका को वश में करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताए गए हैं—

१. सोमवार के दिन अपने हाथ और पाँव की उंगलियों के बीसों नाखून और कौए की जीभ को श्मशान के अंगारों में जलाकर राख कर लें। फिर उसे पीसकर उसमें अपना थूक तथा बाएँ हाथ की अनामिका उंगली का रक्त मिलाकर, छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें। आवश्यकता के समय उनमें से एक गोली को पान आदि में रखकर अपनी प्रेमिका को खिलादें तो वह सदैव के लिए वशीभूत हो जाएगी।
२. कौए की चर्बी को अपने मुँह पर मल कर प्रेमिका के सामने पहुँचा जाए तो वशीभूत हो जाती है।
३. चाँद की पहली तारीख को, जब रविवार हो, तब उस दिन रात के समय किसी बाग में जाकर वहाँ से एक कौए को पकड़कर घर ले आए और उसे लोहे के पिंजड़े में बंद करके साधारण दाना-पानी देना आरम्भ करें। केवल सुबह-शाम पराठों के साथ लाल शक्कर का चूरा देना आवश्यक है। इसी प्रकार एक सप्ताह तक करें।

सातवें दिन शनिवार आने पर रात्रि के दस बजे उस कौए को मारकर, उसका दिल बाहर निकाल लें और उसे एक छटाँक चमेली के तेल में डालकर भली भाँति घोंट लें। जब वह खूब महीन हो जाए तो उसे एक मिट्टी के दीपक में भर लें।

फिर उसी मृत कौए के सीने तथा बाजुओं के स्थान से छोटे-छोटे ग्यारह पंख लेकर, उन्हें रुई के एक टुकड़े पर बिछाकर बत्ती बना लें। उस

बत्ती को पूर्वोक्त चमेली के तेल वाले दीपक में डाल दें।

फिर रात्रि के १२ बजे के समय किसी ऐसे बगीचे में जाएँ, जहाँ चमेली के पौधे हों। वहाँ एक चमेली के पौधे के नीचे पूर्वोक्त दीपक को रखें तथा उसके सामने स्वयं बैठकर, पहले गूगल जलाकर धूनी दें। तदुपरांत दीपक को जलाकर निम्नलिखित मन्त्र का १०१ बार उच्चारण करें। मन्त्र इस प्रकार है—

'फाल पखाल सुस्सका क्लोन कजरा मँजरा खाऊं।
आठ पहर में घड़ी जगमोहन मेरा नाऊं।'

इस मन्त्र का पाठ समाप्त होते ही, उस स्थान पर चमेली के पाँच सुन्दर पुष्प प्रकट होंगे। उन फूलों पर भी इसी मन्त्र को पढ़कर फूँक मारें तो वे फूल गायब होकर उस स्थान पर जा पहुँचेंगे, जहाँ पर अपनी प्रेमिका बैठी होगी। ये फूल उस स्त्री के दिल और दिमाग पर अधिकार करके, उसे अपनी ओर आकर्षित कर देंगे और जब तक वह आपके पास नहीं जाएगी, तब तक उसे चैन नहीं पड़ेगा। अस्तु, मन्त्र पाठ समाप्त करने के बाद दीपक को बुझा दें तथा उसमें जो तेल शेष बचा हो, उसे सुरक्षित लेकर घर लौट आएँ। तदनन्तर जब भी अपनी प्रेमिका से भेंट करने के लिए जाएँ, उस समय जाने से पूर्व इस तेल को अपने मुँह पर मल लें। फिर जब आप अपनी प्रेमिका के पास पहुँचेंगे तो वह आपको देखते ही मोहित हो जाएगी।

रुठे हुए प्रेमी को पास बुलाने का तन्त्र

रुठे हुए प्रेमी को पास बुलाने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है—

चाँद की पहली रात में सात-आठ बजे के लगभग एक कौवा पकड़ें। यदि प्रेमी पुरुष हो तो नर कौवा पकड़ें और स्त्री हो तो मादा कौवा पकड़ें। उसे पकड़ कर घर ले आएँ और पिंजड़े में बंद करके रख दें। रात में खाने पीने के लिए कुछ भी न दें।

दूसरे दिन सवेरा होने पर उसे दाना पानी दें। प्रतिदिन गाय के कच्चे दूध में ३ माशा केवड़े का अर्क तथा केसर घोलकर पिलाते रहें। सात दिन

तक यही करें।

आठवीं रात को उसे मारकर, उसका जिगर निकालकर सुरक्षित रख लें। मृत-शरीर के शेष भाग को उसी स्थान पर गड्ढा खोदकर गाढ़ आएँ। जहाँ से कि उसे पकड़कर लाया गया था।

कौवे के जिगर को छायादार स्थान में सुखाएँ। सूख जाने पर उसके चारों ओर सिन्दूर लपेट दें। फिर उसे एक लाल धागे में सब ओर से अच्छी तरह लपेट दें।

जिस दिन आप अपने प्रेमी को बेचैन करना चाहें, उस दिन आधी रात बीत जाने के बाद उस लाल धागे में लिपटे हुए कौवे के जिगर को अपनी दाईं मुट्ठी में लेकर दबाना आरम्भ करें। जितना-जितना आप अधिक दबाएँगे आपकी प्रेमिका अथवा प्रेमी आपके लिए उतना ही अधिक बेचैन होगा और सवेरा होते ही जितने समय में आ सकता होगा, उतने समय में आकर आपके सामने उपस्थित हो जाएगा तथा विरह की शिकायत करेगा।

उसकी बातों को सुनकर यदि आप उसका आलिंगन कर लेंगे तब तो ठीक है, अन्यथा वह भाँति-भाँति से प्रार्थना करके आपका आलिंगन प्राप्त करने को कोशिश करेगा और हमेशा के लिए आपके वश में बना रहेगा।

विरुद्ध प्रेमी को वश में करने का तन्त्र

जिस स्त्री अथवा पुरुष को आप स्वयं तो चाहते हों, परन्तु वह स्वयं आपको न चाहता हो, तो उसे वशीभूत करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र बताया गया है।

जिस स्थान पर मीठे आम के बहुत से वृक्षों के साथ एक ऐसा पुराना बरगद का वृक्ष भी हो, जिस पर कि कौवे रहते हों। उसका पहले से पता लगाकर शुक्ल पक्ष के मंगलवार की रात्रि को १२ बजे उस बरगद के वृक्ष पर चढ़कर, एक मादा कौवी को पकड़ लें और उसे अपनी छाती से लगाकर वृक्ष से नीचे उतरकर घर चले आएँ। रास्ते भर उस कौवी को अपनी छाती से ही लगाए रहें।

घर आकर कौवी को केसरिया रंग के एक थैली में डाल दें और थैली

का मुँह बंद करके, अपनी चारपाई के सिरहाने की ओर लटका कर चारपाई पर सो जाएँ। सुबह होने पर उसे थैले में से निकालकर लोहे के पिंजड़े में बंद कर तथा खाने के लिए साधारण दाना-पानी पिंजड़े में रख दें।

फिर एक कुंडी में एक छटाँक मीठा दही, थोड़ा सा शहद, एक रत्ती भर केशर तथा थोड़ा सा हिना का इत्र डालकर एक डंडे की सहायता से सब वस्तुओं को घोंटकर एक दिल कर दें। कूँडी पत्थर की होनी चाहिए।

सूर्यास्त के समय इस मिश्रण को कौवी के भोजन की थाली में डाल दें। आधी रात तक जब कौवा उस मिश्रण को खा ले तब उसे पिंजड़े से निकालकर पुनः उसी केसरिया रंग के थैले में बंद करके, अपनी चारपाई के सिरहाने लटकाकर सो जाए। सवेरा होने पर उसे फिर थैली में से निकालकर पिंजड़े में बंद करें तथा पूर्वोक्त सभी क्रियाएँ करें। इस क्रम को निरन्तर एक सप्ताह तक करते रहें।

आठवें दिन उस कौवी को लेकर उसी स्थान पर जा पहुँचे जहाँ से कि आपने उसे पकड़ा था। वहाँ उसे मारकर उसके हृदय की लकड़ी की एक डिबिया में सुरक्षित रख लें। मृत शरीर के शेष भाग को उसी स्थान पर एक फुट गहरा गड्ढा खोदकर दबा दें। गड्ढे में कौवी के मृत शरीर को रखने से पूर्व उसमें गुलाब के तीन फूल अवश्य बिछा दें, तदुपरान्त उसके हृदय वाली डिबिया को साथ लेकर घर लौट आएँ।

आगामी पूर्णिमा तक कौवी के हृदय को उसी डिबिया में रखा रहने दो। पूर्णिमा के रात्रि में हृदय को डिबिया में से निकालकर एक खरल में डाल दें साथ ही उसमें एक माशे असल कस्तूरी एक माशे केशर, एक माशे अम्बर तथा तीन गुलाब की पंखुड़ियाँ मिलाकर घोंटना आरम्भ करें। जब तक सब वस्तुएँ खूब महीन पीसकर एक दिल तथा खुश्क न हो जाएँ, तब तक निरन्तर घुटाई करते रहें। जब वह शुष्क होने लगे तब उसे चन्दन की लकड़ी द्वारा खरल में से उठाकर एक-एक गोला सा बना लें।

इस गोले को सूखने तक किसी कागज की डिबिया में रखे रहे तथा प्रतिदिन रात्रि के समय उस डिबिया को धूप तथा चन्दन का धूनी दे दिया करे। एक सप्ताह तक इसी क्रम को चालू रखें। इस अवधि में वह गोला

एकदम सूख जाएगा।

इसके पश्चात् चन्दन को गुलाब जल में घिसकर उसे गोले के ऊपर तीन बार तिलक की तरह लगाएँ। फिर उसके ऊपर एक केसरिया रंग का सूती कपड़ा लपेट दें। तदुपरान्त कपड़े में लिपटे हुए उस गोले को एक लकड़ी की डिबिया में रख दें, साथ ही उस डिबिया में गुलाब के फूल की कुछ पंखुड़ियाँ रखकर थोड़ा सा सिन्दूर भी छिड़क दें और डिबिया को बंद करके रख दें।

इसके पश्चात् निम्नलिखित कार्य करें—

जिस व्यक्ति को अपनाना चाहते हों वह जिस मार्ग से आता-जाता हो, उस सड़क पर लगभग ६ इन्च गहरा गड्ढा खोदकर पूर्वोक्त डिबिया को गाढ़ दें तथा ऊपर से मिट्टी आदि डालकर गड्ढे का मुँह बंद कर दें।

जिस समय आपके प्रेमी का दायाँ पाँव उस स्थान पर पड़ेगा, जिसके नीचे उपर्युक्त डिबिया गढ़ी हो, उसी समय से वह आपसे मिलने के लिए बेचैन हो उठेगा और शीघ्र ही भेंट करने के बाद वह सदैव के लिए आपके वशीभूत हो जाएगा।
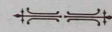
पशु-पक्षी तन्त्र

जंगली सूअर

जंगली सूअर भयानक, खतरनाक और खूँखार वन्य पशु है। इसके मुँह के पास सामने की ओर एक तेजधार, अति कठोर, नुकीले करीब चार इंच से लेकर छह इंच तक की लम्बाई लिए हुए दो दन्त होते हैं। इसी तेज धारदार दाँतों के जरिए सूअर अपने से हिंसक, कालजयी जानवर से भी अपना जीवन रक्षा कर लेता है। इसके सामने यदि खूँखार और अतिबलशाली शेर भी आ जाए और अचानक सूअर पर प्राणघातक हमला कर दे तो सूअर अपने दाँतों से शेर का अंग-प्रत्यंग को छेद-भेद डालता है और आक्रमणकर्ता शेर परास्त होकर भाग जाता है। शेर इसे धोखे से ही पूर्ण तैयारी करके अपना शिकार बना लेता है। अब आप समझ गए होंगे की सूअर की इन नुकीले दाँतों में कितनी शक्ति विराजमान है। हमारे पौराणिक अध्यात्म ग्रन्थों में भी आया है कि भगवान विष्णु को भी पृथ्वी को बचाने के लिए सूअर का अवतार लेना पड़ा। भगवान ने भी अपने वाराह अवतार में सूअर के दन्त के सहारे ही पृथ्वी को दुष्ट राक्षसों के द्वारा डाले गए नरक से बाहर किया। अब सूअर के दाँत या वाराह दन्त का तन्त्र में प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूँ, प्रस्तुत तन्त्र प्रयोग सफल, सिद्ध और विलक्षणतापूर्ण है। प्रस्तुत हैं विभिन्न तान्त्रिक प्रयोग—

शत्रुओं को परास्त करने के लिए

शत्रु तो आखिरकार शत्रु ही होते हैं, चाहे शत्रु किसी भी रूप में हो,

आज मसाल की तरह अति व्यापक रूप ले रहा है। इस समस्या के निवारण के लिए तन्त्र में कई प्रयोग परिलक्षित हैं जो कि आम व्यक्ति इन प्रयोगों को अपनाकर सम्पन्न नहीं कर सकता। यदि अपनाए भी तो सफलता से कोसों दूर रह जाते हैं, उन्हें सफलता नहीं मिल पाती है। आज हमारे पास तन्त्र विषयों पर लिखा गया अनेक तान्त्रिक ग्रन्थ समाज में छा गया है। इन पुस्तकों के अध्ययन से ही ज्ञात होता है कि ये पुस्तक सिर्फ अर्थ की भावना को लेकर ही लिखा गया होगा। बस एक-दूसरे का नकल कर प्रस्तुत किया जा रहा है, जो कि समाज के लिए उपयुक्त नहीं कहा जा सकता है। मैंने इस पुस्तक द्वारा अनुभव सिद्ध प्रयोगों को ही प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जो कि आम व्यक्ति के लिए कारगर सिद्ध हो सकता है। यदि किसी व्यक्ति को सूअर का दाँत मिल जाए तो ऐसा कर लें, कोई भी दिन-रात या समय हो सकता है। इसके लिए आप अपने शत्रु के घर के दरवाजे के सामने की मिट्टी प्राप्त कर लें, उस मिट्टी से आदमी की तरह मूर्ति बना लें फिर एक कटहल के पत्ते में कौवे के पंख के कलम से लाल स्याही या फिर सिन्दूर से शत्रु का नाम लिख लें। इस पत्ते को जलती हुई अग्नि में डाल दें और वीरान रात्रि में, एक सूअर दन्त को शत्रु के घर में फेंक दें, ऐसा कर लेने पर शत्रु निश्चित रूप से परास्त हो जाता है। (सूअर दन्त को बनाई गई आदमी शक्ल की मूर्ति में आर-पार गड़ाकर शत्रु के घर फेंके।)

वशीकरण के लिए

यदि किसी व्यक्ति या स्त्री को अपने वश में करना हो तो ऐसा कर लें। इस प्रयोग में मन्त्र-जाप करने की आवश्यकता नहीं है। सूअर दन्त में वशीकरण करने की शक्ति होती है इसके द्वारा किया गया प्रयोग असफल हो ही नहीं सकता है। स्वयं लेखक ने इसका सफल और प्रमाणिक अनुभव किया है। शूकर दन्त को ही वाराह दन्त या सूअर का दाँत कहा जाता है। इसके ऊपर के किसी भी भाग में जिसका वशीकरण करना हो उसका नाम, नीम की कलम से लिख लें, फिर इस दन्त को काले कपड़े में लपेटकर, गले में धारण करने से वह व्यक्ति या स्त्री मात्र कुछ ही दिन में धारक के वश में

होती है। यह एक अचूक और सफल साधन है। शूकर दन्त को ताबीज की तरह बनवाकर भी धारण कर लेना चाहिए। शूकर दन्त को धारण करने पर पति-पत्नी में एक अति प्रेम का संचार होने लगता है। पति-पत्नी की आपसी कलह कोसों दूर भाग जाती है।

नपुंसकता निवारण

यदि शूकरदन्त को पीड़ित व्यक्ति धागे के सहारे, अपनी कमर में धारण कर ले तो नपुंसक व्यक्ति भी नई उमंग, नई जोश प्राप्त होकर पुरुषत्व की प्राप्ति कर लेगा।

व्यापारिक समस्या

व्यापारी की व्यापार स्थिति घाटे में चल रही हो या धन्धा बन्द होने की कगार पर हो तो, उस व्यापारी को चाहिए की एक सूअर के दाँत को किसी भी रोज, काली गुंजा की एक सौ एक दानों की साथ चाँदी की डिबिया में बन्द करके गल्ला या केश बॉक्स में रखने से उपरोक्त समस्या का निवारण होने लगता है।

बुरे स्वप्न में

खराब सपने आने पर शूकर दन्त को बिस्तर में सिरहाने के नीचे रखने से खराब स्वप्न नहीं आता है।

शत्रु उच्चाटन

अमावस्या की रात्रि में एक शूकर दन्त को जिसका उच्चाटन करना हो उस व्यक्ति के नाम को बोलकर उसके निवास में डाल देने से उस घर में निवास करने वालों का उच्चाटन हो जाता है।

आकर्षण के लिए

शूकर दन्त को बारीक पीसकर, गोरोचन में मिलाकर जिस किसी के

सिर में डाल देने से उसका आकर्षण होता है।

आर्थिक समस्या निवारण

चार शूकर दन्त को शुभ दिवस, गुरुपुष्य या फिर रविपुष्य नक्षत्र हो, उस दिन, शिवलिंगी के एक सौ इक्यावन दाने तथा एक जटावाला नारिकेल के साथ किसी मिट्टी के सुराही में भरकर, रखने से आर्थिक समस्या का निवारण होता है। ऐसा करने पर और भी अचूक प्रभाव सामने आने लगता है। किसी स्टील या ताँबे के पात्र में तीन शूकर दन्त को स्वच्छ जल से धोकर साफ कपड़े से पोंछकर, स्थापित करके उसमें फिर गोरोचन, केशर का तिलक लगाएँ, सामने तेल का दीपक जलाकर, आसन में काला वस्त्र बिछाकर बैठ जाएँ फिर नीचे लिखे मन्त्र को काली हकीक की माला से इक्कीस माला जप करें, वाराह दन्त सिद्ध हो जाएगा। फिर उस दन्त को पूजा स्थल में या धन रखने की जगह रख दें, काली हकीक की माला को नदी या तालाब के जल में विसर्जित कर दें। सच मानें ऐसा कर लेने पर आर्थिक समस्या का निवारण होगा ही।

***मन्त्र—* ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं वाराह दन्ताय नमः॥**

टोना निवारण

विधिपूर्वक सिद्ध किए गए वाराह दन्त को पीड़ित व्यक्ति के सिर से पैर तक नौ बार उतार कर धारण करा देने से हर प्रकार का टोना निवारण सम्भव हो जाता है। किसी भी तरह के किये-कराये का प्रभाव तत्काल से कम होने लगता है।

भूत-प्रेत निवारण

भूत-प्रेत से पीड़ित व्यक्ति ऐसा कर लें, वैसे भूत-प्रेत को अन्धविश्वास ही माना जाता है पर ऐसा मानना सम्भव नहीं है। भूत-प्रेतों की अपनी अलग दुनिया होती है ये अन्धविश्वास नहीं है। सभी भूत-प्रेत प्रताड़ित नहीं करते हैं। यदि भूत-प्रेत परेशान कर रहा हो तो मंत्र सिद्ध शूकर दन्त को पीड़ित

व्यक्ति के पुराने कपड़े में लपेटकर के बहते पानी में छोड़ देने से उपरोक्त समस्या का निवारण होता है। पर यदि भूत-प्रेत व्यक्ति को परेशान नहीं करके घर में उपद्रव मचा दे तो, गरुड़ वृक्ष की नौ इंच के बराबर लकड़ी को नौ बराबर टुकड़ों में काटकर नौ शूकर दन्त के साथ अलग-अलग घर के चारों ओर जमीन में ठोंक देने से भूतों का उपद्रव शान्त हो जाता है। यह मेरा सफल प्रयोग है। ध्यान रहे गरुड़ वृक्ष होता है, इस पेड़ में अनेकों तान्त्रिक गुण पाये जाते हैं। हमारे भारतवर्ष में कहीं-कहीं मिलने की सम्भावना है। वैसे यह पेड़ दुर्लभ प्रजाति की है।

धन प्राप्ति के अचूक प्रयोग

तीन शूकर दन्त, मोर का पंख, हर्रा तीन, एक हल्दी गाँठ एवं उंटकटारा की जड़ी शुभ दिन, रवि पुष्य या गुरु पुष्य के रोज इन सभी सामग्रियों को एक पीले रंग की रेशमी कपड़े में बाँधकर, बाजोट पर स्थापित करके सामने तेल का दीपक जलाकर, धूप की धूनी देकर निम्नलिखित मन्त्र को हड्डी की माला से मात्र ग्यारह बार जप करके सामग्री को आवश्यक शुभ स्थान पर रख देना चाहिए, जप के बाद हड्डी की माला को बहते जल में विसर्जित कर दें। यह प्रयोग अपने में एक दिव्यता समेटे हुए है। यह व्यक्ति को निरन्तर अच्छी आय देता है, धन सम्बन्धी रुकावट दूर होती है। यह एक अचूक साधन है।

***मन्त्र—* ॐ रं श्रीं ह्रीं धं धनदे रति प्रिये स्वाहा।**

नोट : हड्डी की माला अघोरी तान्त्रिकों के पास होती है। यदि आपको न मिल सके तो इन पुस्तक के प्रकाशक से सम्पर्क करें।

कछुआ

कछुआ एक जल जीव है। इस जल जीव की भी तन्त्र में अहम् भूमिका है। मैंने तान्त्रिक विषयों में कछुआ पर गहरा शोध किया है, मैंने इस जल जीव पर कई दुरुह एवं सरलतम तन्त्र प्रयोग किए हैं, सभी प्रयोग मेरे द्वारा अनुभूत हैं। कछुऐ को मार भी दिया जाए तो भी उसकी जीवन शक्ति

बड़ी मुश्किल से मर पाती है। कछुऐ के सभी अंग-प्रत्यंगों को टुकड़ा-टुकड़ा किया जाए फिर भी उसकी जीवात्मा की धड़कन बरकरार रहती है, शायद इसी कारण कछुआ सभी जीव-जन्तुओं में दीर्घायु है। हमारे भारतीय अध्यात्म ग्रन्थों में भी कछुआ के सम्बन्ध में एक प्रसंग आया है कि भगवान विष्णु ने कच्छप का रूप भी धारण किया है। कछुआ लघु आकार से बृहत आकार तक होता है। मैंने दक्षिण भारत की यात्रा में विशाखापट्टनम के समुद्र तटीय क्षेत्र में मछुआरों के द्वारा समुद्र से पकड़ा गया एक विशालकाय कछुआ देखा है। प्रस्तुत हैं विभिन्न तान्त्रिक प्रयोग—
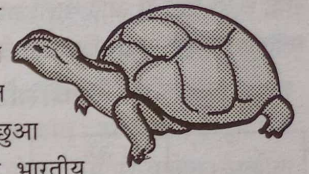
परिवार सुख के लिए

जिस प्रकार दक्षिणवर्ती शंख की खोलनुमा हड्डी को पूज्य माना गया है उसी प्रकार कछुआ की पीठ की तवा के आकार की हड्डी भी बड़े काम की चीज है। यदि कछुआ की पीठ की हड्डी मिल जाए तो सबसे पहले ऐसा कर लें—उसमें, गूलर, काली गुंजा, हरसिंगार की जड़ी को बारीक पीसकर पानी में डालकर घोल तैयार करें फिर इस घोल को कछुआ की पीठ की हड्डी में सभी ओर लगाएँ फिर कलिहारी कंद को अष्टगंध में मिलाकर पीठ पर स्वास्तिक 卐 का चिह्न बनायें फिर इसे पूजा के स्थान पर स्थापित करके नित्यप्रतिदिन मोती की माला से निम्न मन्त्र की कम से कम तीन माला जप कर लें, ऐसा कर लेने पर परिवार में सुख-शान्ति बनी रहती है।

***मन्त्र—* ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सु कच्छपाय नमः।**

सर्वसिद्धिदायक प्रयोग

कछुआ की पीठ की हड्डी प्राप्त करके पीठ के ऊपरी भाग में, गोरोचन, अष्टगन्ध की घोल से सरफोंक की कलम से नीचे बनाए गए यन्त्र को दीपावली या होली के दिन बना लें, फिर इसे सुरक्षित पीले कपड़े में लपेटकर रख लें, मेरे स्वयं के अनुभव में आया है कि साधक यदि ऐसा कर

लेता है तो मार्ग में आने वाली बाधा का निवारण के साथ-साथ व्यक्ति की मनोकामना की सर्वसिद्धि होती है।

सर्वसिद्धि दायक यंत्र

ईशान १	ॐ **श्रीं** ४	**पूर्व** ७	**ह्रीं** १०	**आग्नेय** ३
क्लीं ९	अं अः ल अः	अ आ क ख ग घ ङ २	इ ई च छ ज झ ञ ७	ॐ हूं ८
उत्तर ४	ॐ औं श ण स ह	७ ८ **ॐ** ९ ६	ऋ ऋ त थ द ध न	**दक्षिण** २
फट	ए ऐ य र व ल	लृ ल प फ ब भ म	ऋ ऋ त थ द ध न	ऐ हीं
वायव्य १	**स्वाहा**	**पश्चिम**	**क्रीं** ५	**नैऋत्य** ८

कर्ज निवारण के लिए

कछुआ के दन्त को चाँदी के ताबीज में डालकर गले में धारण करने से कर्ज निवारण सम्भव है ये मेरा कई बार का परीक्षित है। यदि नित्यप्रति निम्न मन्त्र का एक माला स्फटिक की माला से जप कर लिया जाए तो धारक को एक चमत्कारी अनुभव होगा।

नोट : असली स्फटिक की माला प्राप्त करने के लिए रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार से सम्पर्क करें।

मन्त्र—**सत नमो आदेश गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी, ॐ सोहं**

आकाश। डिब्बी पाताल काठी, धरती का चूल्हा करूँ आकाश को ढाया। नवनाथ सिद्धो ने बैठकर भण्डारा किया। चढ़े डिब्बी, उतरे रिद्धि सिद्धि काली। पीली शिर जटा माई। पारवती का उपदेश। शिव मुख आवे, शक्ति मुख जावे। शिव मुख जावे। हाथ खड्ग तूत की माला जाप-जपे श्री सूरियावाला। ऋद्धि पूरे हर घृत पूरे गणेश। अलील पूरे ब्रह्मा, माया पूरे महाकाली हीरा पूरे हिंगलाज। नवखण्ड में जोत जगाई, ऋद्धि लावो भण्डारी माई। ऋद्धि खूँटे, सदा शिव का जड़ाव टूटे। ऋद्धि खूँटे, माता सीता सतवन्ती का सत्य छूटे। ऋद्धि खूँटे, माता पारवती का कंगन टूटे। ऋद्धि खूँटे, मान धान का मान टूटे। चन्द्र, सूर्य देव लाखी इतना कुबेर भण्डार गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। नाथ जी गुरुजी, आदेश आदेश।

धन प्राप्ति के लिए

कछुआ की जीवात्मा को सोने की डिब्बी में डालकर कैश बॉक्स, तिजोरी या फिर व्यापारिक स्थल पर रखने से धन सम्बन्धी समस्या का निवारण हो जाता है। ऐसा करने से व्यक्ति को कई अनेक मार्गों से धन प्राप्ति होती रहेगी, यह सफल और महत्त्वपूर्ण धन प्राप्ति प्रयोग माना गया है।

घरेलू कलह निवारण के लिए

कछुऐ के सामने की, बाँए तरफ के पैर को रखने से घरेलू कलह का निवारण सम्भव हो जाता है। यदि कछुआ के पैर को परिवार के सभी जनों के सिर से पैर तक ग्यारह बार इस नीचे दिए गए मन्त्र को पढ़कर उतारा किया जाए फिर इस पैर को जलती आग में डाल दिया जाए तो सचमुच में घरेलू कलह कोसों दूर भाग जाएगा।

मन्त्र—**ॐ सत नाम गुरु का आदेश। काली काली महाकाली युग आद्याकाली, छाया काली, धूं मांस काली चलाए चले बुलाई आए, इति विनिआस। गुरु गोरखनाथ के मन भावे। काली सुमरूँ काली**

जपूं काली दिगरारू को मैं खाऊँ। जो माता काली कृपा करे सब कष्टों का हरण करे।

शत्रु बाधा दूर करने के लिए

कछुआ की नख, धारण करने वाला, शत्रुबाधा से हमेशा मुक्त रहता है। शत्रु धारक का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता है। कछुआ की नख को काले धागे में पिरोकर गले में धारण कर लेना चाहिए।

काला रंग भँवरे का सा या काजल के समान कछुआ हो, शरीर पर खूब तिल हों, भूरे रंगों वाला हो, साँप की तरह सिर वाला हो, मोटी गर्दन का हो तो वह कछुआ राजा और राष्ट्र की समृद्धि का सूचक है।

(वृहत संहिता से)

सियार या लोमड़ी

सियार या लोमड़ी एक चुस्त और चालाक प्राणी होता है। इस प्राणी के सिर पर एक गाँठ उत्पन्न हो जाती है जिसे सियार सींगी कहा जाता है। असली सियारसींगी में कई गुण होते हैं पर आज व्यापारिक युग है कुछ व्यापारी नकली सियारसींगी भी बेच रहे हैं उनसे बचें। असली सियारसींगी मिल जाए तो विधिपूर्वक ऐसा किया जाता है कि साधक सियारसींगी को पहले निम्न मन्त्र से आवश्यकतानुसार सिद्ध कर लें, सिद्ध करने की विधि इस प्रकार है। सियारसींगी को सर्वप्रथम, सिन्दूर लगाएँ फिर ताँबे की प्लेट में स्थापित करें, सामने तिल का तेल डालकर दीपक जलाएँ और सामने बैठकर मन्त्र जाप कर लें। कम से कम ग्यारह माला मन्त्र जप कर लिया जाए। इससे सियारसींगी सिद्ध हो जाएगी।

मन्त्र—ह्रीं क्लीं स्वाहा

सिद्ध सियारसींगी अचूक प्रभावशाली होती है, वशीकरण के लिए सियारसींगी को निम्न मन्त्र से ग्यारह माला जाप कर लें।

ॐ मनमोहनी रानी ऊँचे सिंहासन पर बैठी मोह रही दरबार, मेरी शक्ति, गुरु की भक्ति। दुहाई तुझे गौरा पारवती हनुमान की आन ना लागे तो लौना चमारी की आन।

यदि सियारसींगी को निम्नलिखित लक्ष्मी मन्त्र से सिद्ध करके तिजोरी में रखा जाए तो धन की कमी नहीं रहेगी।

ॐ श्री ह्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्री ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

यदि सियार की पैर की नख को गले में धारण करके कहीं भी चला जाए तो व्यक्ति के मनचाहे कार्य पूर्ण होते हैं। केवल इसके नख को जड़बुद्धि वाला व्यक्ति धारण कर ले तो चतुर और चालाक हो जाता है। इसकी नख को सेई की काँटा के साथ शत्रु के घर में डाल देने से शत्रु परास्त हो जाता है। छोटे बच्चों को नजर, टोना-टोटका लगे तो उस बालक को सियार के नाखून को धारण करा देने से बालक को नजर और टोना-टोटका नहीं लगेगा।

सेई या शाही

सेई या साही जंगली जीव है इसके सम्पूर्ण अंगों में शरीर में तेज धारदार नुकीले काँटे होते हैं। यदि कोई हिंसक जानवर सेई के ऊपर धावा कर देता है तो सेई अपनी सम्पूर्ण अंगों को अपने काँटों से ढक लेती है, शायद इसीकारण सेई अपनी जीवन रक्षा कर लेती है। सेई के काँटों से अनेकों तन्त्र प्रयोग किए जाते हैं। इसके कुछ प्रयोग संक्षेप में प्रस्तुत हैं—
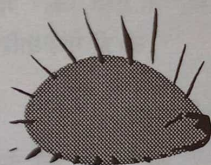
सम्मोहन के लिए

बरगद के पत्तों पर (जिसका सम्मोहन या वशीकरण करना हो उसके केवल नाम को) गोरोचन, अष्टगन्ध से काँटा के द्वारा लिख कर उस नाम पर सेई की काँटे मात्र नौ बार गड़ाते जाएँ फिर उस पत्ते को बहते पानी में डाल देने से व्यक्ति कुछ ही दिन में सम्मोहित होने लगता है।

शत्रु बाधा के लिए

सेई के काँटों को निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके घर पर डाल दिया जाए या फिर शत्रु के घर के दीवार पर ठोंक दिया जाए तो शत्रु अवश्य ही परास्त हो जाता है। यह एक दिव्य और अचूक साधन है।

गर्भ स्तम्भन के लिए

१. महिलाओं के लिए यह प्रयोग सटीक और अचूक साबित हुआ है। यदि कोई स्त्री गर्भ तो धारण कर लेती है पर गर्भ ठहरता नहीं है, असमय में ही गर्भ गिर जाता है। उन महिलाओं को चाहिए की सेई के काँटे तीन इंच के बराबर काले धागे में बाँधकर कमर में धारण कर लेने पर (सेई के काँटा में यह एक विलक्षण शक्ति है) गिरते हुए गर्भ को थाम देती है।

२. सेई का काँटों को बेल के पत्तों पर रख कर अपनी दाहिनी हथेली पर रखकर मुट्ठी में बाँधकर नीचे लिख मन्त्र को मात्र एक सौ आठ बार पढ़कर धारण कर लेने पर गर्भ स्तम्भन होता है।

गर्भ स्तम्भन मन्त्र

ॐ ह्रीं गर्भ धारिणी गर्भ स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

वशीकरण

सेई के काँटे का चूर्ण और फिर कलिहारी कंद दोनों को मिलाकर जिसके भी सिर पर डाला जाएगा उसका वशीकरण हो जाता है।

उच्चाटन

सेई की काँटा लघु कंटकारी की जड़ को निम्न मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर डाल देने पर शत्रु का उच्चाटन हो जाता है। यह एक सफल और अचूक साधन है।

उच्चाटन मन्त्र

ॐ नमो भगवते शत्रु बुद्धि स्तम्भय उच्चाटय स्वाहा।

सिंह

इसके दाँत का यन्त्र बनाकर बच्चे के गले में डालने से उसके दाँत आसानी से निकलते हैं और जो भी व्यक्ति इसका यन्त्र गले में रखेगा उसको दाँत की पीड़ा नहीं होगी।

इसके दाँत का यन्त्र बनाकर बच्चे के गले में डालने से उसको नजर नहीं लगेगी। इसके मस्तक का चर्म जो व्यक्ति अपने पास रखता है उससे सभी भयभीत रहेंगे।
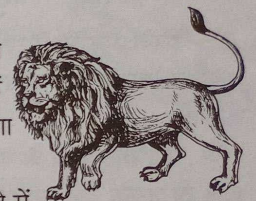
हाथी

इसकी लीद का यन्त्र बनाकर जो औरत अपने पास रखे तो उसको गर्भ नहीं रहेगा।

इसके कान की मैल कोई खा ले तो सात दिन तक निद्रा नहीं आएगी।
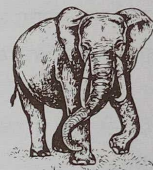
इसकी लीद ९ माशा लेकर चाँदी के यन्त्र में डालकर बालक के गले में डाल दें तो नजर नहीं लगेगी।

घोड़ा

अश्विनी नक्षत्र में इसके खुर की धूनी प्रेत बाधा वाले व्यक्ति को दी जाए तो प्रेत बाधा दूर होगी।

जो व्यक्ति रात को दाँत पीसता हो उसके सिराहने इसका दाँत रख दिया जाए तो उसका दाँत पीसना छूट जाएगा।
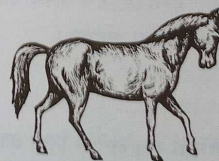
इसकी पूँछ का बाल कमरे के दरवाजे में लटका दिया जाए तो भीतर मच्छर नहीं होंगें। काले घोड़े की नाल को घर के द्वार पर एवं व्यापार स्थल पर ठोंक देने से टोना-टोटका नहीं लगता और वहाँ सुख-शान्ति रहेगी।

कुत्ता

इसके मूत्र में मिट्टी डालकर गोली बनाएँ। उसको सुखाकर ज्वर वाले व्यक्ति के गले में बाँधें तो ज्वर दूर हो जाएगा।

यदि छोटे बच्चे के गले में इसके दाँत का यन्त्र बनाकर डालें तो उसके दाँत आसानी से निकलेंगे। यह एक पालतू पशु है। इसे पालने वाले को कई लाभ होते हैं जैसे—सुरक्षा व जहाँ पर कुत्ता रहेगा वहाँ पर कोई तान्त्रिक प्रयोग नहीं करेगा।

खच्चर

इसके मस्तिष्क का मांस जहाँ पर जलाया जाए, उस स्थान पर जो भी काम किया जाएगा वह कभी सफल नहीं होगा।

इसके दाँत को जो कोई अपनी जेब में रखे तो उसकी जेब कभी खाली नहीं होगी।

इसके खुर अलसी के तेल में जलाकर गंज के स्थान पर लगाएँ तो बाल आ जाएँगें।

इसके कान का मैल जो औरत खाए तो उसको गर्भ नहीं रहेगा।

इसकी हड्डी या मस्तक का मांस किसी को खिला दे तो वह तुरन्त बेहोश हो जाएगा।

इसकी पूँछ के बाल और दो मित्रों के कपड़े जलाकर उस भस्म को उन मित्रों को खिला दें तो उन दोनों में आपस में झगड़ा हो जाएगा।

गधा

जिसे निद्रा नहीं आती हो सिरहाने में गधे का दाँत रख लेने से निद्रा आ जाएगी।

इसके खुर को पानी में घोलकर मिरगी के रोगी को पिलाया जाए तो लाभ होता है।

इसके दाहिने पैर के नाखून की अंगूठी दाहिने हाथ की अंगुली में पहनने से मिरगी रोग शान्त होता है।

इसके खुर का धुँआ प्रसूति के समय कष्ट निवारक होता है।

इसके खुर को तेल में जलाकर कण्ठ माला के रोगी के रोग के स्थान पर मालिश की जाए तो फायदा होगा।

इसकी पसली की हड्डी जिसके घर में गिरा दें उसके घर में रात दिन कलह रहेगी।

इसके मस्तक के चर्म को पानी में घोलकर दो दोस्तों को पिलाया जाए तो उनमें आपस में वैमनस्य हो जाएगा।

जिस समय यह सम्भोग करता हो उस समय इसकी पूँछ के सात बाल लेकर जो व्यक्ति अपनी जंघा पर बाँधे उसकी स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।

इसकी हड्डी को जैतून के तेल में मिलाकर गर्म करके सिर पर मालिश करने से बाल बढ़ते हैं।

रवि पुष्य नक्षत्र में जुई का पंचांग तथा समुद्र फल लाए। इसके मूत्र से गुटिका करे और उसका प्रेम छाया वाले व्यक्ति की आँख में अंजन करे तो प्रेत बाधा दूर हो।

शनिवार या रविवार को धरती पर पड़ने से पहले इसका मूत्र लें उसमें राई को भिगो दें। तीन दिन बाद उसको निकाल कर सुखा लें। रविवार के दिन धूनी देकर दो मित्रों के बीच गिराएँ तो उनमें वैमनस्य हो जाएगा।

रविवार को वह जहाँ लेटे उस जगह की धूल, बिना बोले व बिना किसी के टोके ले आएँ। गुग्गुल की धूनी देकर जिसके मस्तक पर गिराएँ या घर में गाड़ दें तो उस घर में कलह हो जाएगी।

रविवार या मंगलवार को गधा जहाँ लेटे उस जगह की धूल लाएँ जब कोई खाने बैठे तो उस थाली के नीचे थोड़ी धूल रख दें तो खाने वाला बहुत हँसता है।

रविवार को धरती पर पड़ने से पहले इसका मूत्र लें। गुग्गुल की धूनी
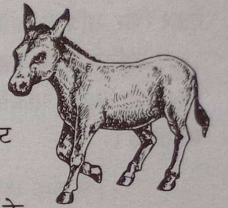
देकर फिर रात्रि में आँख में डालें तो पितृ दिखाई देंगे।

शनिवार को यह जहाँ लेटे, पूर्व की ओर मुँह करके उस जगह की धूल उठा जाएँ। सम्भोग के समय धोती के किनारे बाँधें तो स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।

गीदड़

इसकी दायीं आँख को ताबीज या डिबिया में डालकर अपने पास रखें तो बल बढ़ता है।

इसकी जिह्वा को मंगलवार, शनिवार या अमावस्या को जिसके घर में गाड़ दिया जाए, उस घर में रात-दिन कलह रहेगी।

इसके दाएँ पैर का नाखून जो कोई अपने पास में रखेगा वह चलने में नहीं थकेगा।

ऊँट

ऊँट के बालों की रस्सी बनाकर अपनी जाँघ में बाँधकर सम्भोग करने से जब तक रस्सी को खोला नहीं जाएगा, तब तक वीर्य स्खलन नहीं होगा।

ऊँट के हाड़ की चार कीलें बनाएँ। चारों दिशाओं में गाड़ दें। उसके बीच में आने वाले पशु बाहर नहीं निकल सकेंगे।

इसके दाएँ पैर का नाखून लेकर घर में रखा जाए तो वहाँ से चूहे निकल जाएँगे।

ऊँट की हड्डी में छेद करके सिरहाने की ओर बाँधकर उसी शय्या पर सम्भोग करने से तब तक स्खलन नहीं होता, जब तक की हड्डी को खोल नहीं दिया जाता।

जो बच्चा रात को बिछौने पर मूत्र त्याग कर देता है, उसकी दायीं जंघा पर इसके बाल बाँध देने से रात्रि को मूत्र नहीं करेगा।

मूत्र के रोगी की जंघा पर इसके बाल बाँधें तो मूत्र अधिक नहीं

आएगा।

इसकी मेंगनी जलाकर शहद में बुझाकर डिब्बी में रख ली जाए और जब आग जलाने की जरूरत हो तो एक मेंगनी तोड़कर हवा में रख दें। स्वतः ही आग जल जाएगी।

इसकी चर्बी जिस स्थान पर रखेंगे वहाँ सर्प नहीं आएगा।

भेड़

जिस वृक्ष के नीचे इसका सींग लटका दिया जाए तो उस वृक्ष के फल जल्दी पकते है और मीठे होते हैं।

इसकी चर्बी में मछली की चर्बी सम भाग मिलाकर उसकी बत्ती बनाकर दीपक जलाएँ तो जब तक दीपक जलता रहेगा तब तक घर में पानी भरा हुआ दिखाई देगा।

बकरी

पहाड़ी बकरे का सींग सोए हुए व्यक्ति के सिरहाने रखा जाए तो वह अपने मन की बातें बता देगा।

दूध पीने वाला बच्चा अगर रात को रोता है तो उसके सिरहाने इसकी मेंगनी रख दी जाए तो बच्चा रोना बन्द करके आराम से सोएगा।

श्वेत रंग की बकरी का सींग अगर सोए हुए आदमी के सिरहाने कपड़े में लपेट कर रखा जाए तो वह सोया ही रहेगा।

बकरे की दाढ़ी अगर चौथिया ज्वर वाले व्यक्ति को बाँधी जाए तो ज्वर आना बन्द हो जाएगा।

बिल्ली

तन्त्र जगत में बिल्ली एक चर्चित प्राणी है, कहते हैं बिल्ली की ज़ेर लक्ष्मीकारक होती है पर बिल्ली की नाल का मिलना कठिन ही है। आजकल

नकली बिल्ली की जेर भी कुछ व्यवसायी बेच रहे हैं।

अगर काली बिल्ली की जिह्वा जूतों के नीचे लगाकर कोई व्यक्ति जंगल में जाए तो कोई पशु-पक्षी उसके पास नहीं आएगा।

काली बिल्ली के दाँत अगर किसी के पास रहेंगे तो उसको किसी स्थान का भय नहीं होगा।

बिल्ली की आँवल (ज़ेर) लेकर यदि कोई अपनी तिजोरी में रख दे तो धन व सन्तान की अवश्यमेव वृद्धि होगी।

अगर किसी औरत के ब्लीडिंग हो गई हो तो काली बिल्ली की तिल्ली का यन्त्र बनाकर बाँधा जाये तो रक्त बहना बन्द हो जाएगा।

अगर इसके पाखाने का धूआँ भूत-प्रेत ग्रस्त व्यक्ति को दिया जाए तो प्रेत छाया दूर होगी।

अगर काली बिल्ली का रक्त व खरगोश का रक्त समभाग मिलाकर किसी स्त्री पर डाला जाए तो वह स्त्री उसके वश में होगी।

इसकी आँख का ताबीज बनाकर बालक के गले में पहनाया जाए तो बच्चे को नजर न लगेगी।

मृग (हरिण)

इसकी बाँयी आँख यन्त्र (तावीज) में डालकर जो व्यक्ति अपने पास रखता है उसे औरतें अधिक प्यार करती हैं।

इसकी दाँयी आँख पुष्य नक्षत्र में लेकर अंगूठी में नगीने के नीचे जड़ाकर हाथ में पहनने तो तुष्टि होती है और लोग उससे प्यार करते हैं।

इसके घुटने की हड्डी यदि यात्रा में अपने पास रखें तो सफर में थकावट नहीं होगी।
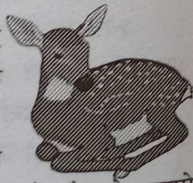
खरगोश

इसके रक्त को गुलाब जल में मिलाकर दीपक में जलाएँ तो खरगोश ही खरगोश चलते दिखाई देंगे।

इसके दाँत का यन्त्र बनाकर अपने पास रखा जाए तो स्मरण शक्ति बढ़ती है।

खरगोश के बालों की बत्ती बनाकर स्त्री अगर अपनी योनि में रखे तो उसकी मासिक ऋतु बन्द हो जाएगी।

गाय

जिस गाय के सींग मिले हुए हों उनके छिलके, श्वेत गुंजा के साथ पीसकर जिसके मस्तक पर गिराएँ वह वश में हो जाएगा।

रविवार को जो बैल मरे उसका सींग मंगायें। उसमें स्त्री के बाएँ पैर की धूल लाकर सींग में भर दें। गुग्गुल की धूनी देकर जिस घर में गाड़ दें तो वह औरत वश में हो जाएगी।

लंगूर

इसकी हड्डी कोई अपने पास रखे तो लोग उसे प्यार करेंगे।

इसके दुग्ध को किसी को पिला दिया जाए तो वह पागल हो जाएगा। इसकी आँख का ताबीज बनाकर पास में रखें तो बल बढ़ता है।

अमावस्या के दिन इसकी खोपड़ी लाकर किसी के घर में गाड़ दी जाए तो उस घर का नाश हो जाएगा।

अमावस्या के दिन इसकी खोपड़ी लाकर उसके ऊपर दो मित्रों का नाम लिखकर श्मशान में गाड़ दी जाए तो उन दोनों की मित्रता टूट जाएगी।

किसी से बन्दर की हड्डी मँगाकर उसको धूप में गड़वा दें तो उसके

घर की विपरीत परिस्थितियाँ टल जाएँगी।

मुर्गा

इसके पेट में पथरी होती है। उसे निकालकर कोई उस पथरी को अपने पास रखे तो उसकी ताकत बढ़ती है।

इस पथरी को घुड़सवार अपनी कमर में बाँधकर यात्रा करे तो उसे थकान नहीं आएगी।

जिस समय दो मुर्गे आपस में लड़ें तो उस समय जो रक्त निकले उस रक्त को पास में रखें। फिर अगर किसी वस्तु में मिलाकर उसे दो मित्रों को खिला दिया जाए तो उनमें आपस में शत्रुता हो जाएगी।

वृश्चिक राशि का चन्द्रमा हो या मंगलवार हो उस दिन यदि काले मुर्गे की विष्ठा किसी के घर के दरवाजे पर लगाई जाए तो उस घर में कलह होती रहेगी।

अगर इसकी चर्बी में मुरदासिंगी मिलाकर उसका लेप करके स्त्री के साथ सम्भोग करें तो स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।

मयूर (मोर)

तन्त्र में मयूर को भी उच्च स्थान प्राप्त है, इसके सम्बन्ध में आगे कुछ तान्त्रिक प्रयोग प्रस्तुत किया जा रहा जो कि प्रमाणिक सिद्ध हुआ है।

इसकी बाँयी ओर की पैर की हड्डी प्रसूता स्त्री के पैर में बाँधी जाए तो प्रसूति के समय पीड़ा नहीं होती है।

इसकी चोंच के साथ पन्द्रह का यन्त्र लिखकर ताबीज बनाकर पास में रखें तो धन सम्पत्ति बढ़ेगी। पन्द्रह के सिद्ध यन्त्र बनाने के लिए सिद्ध बाबा औढरनाथ तपस्वी की 'यन्त्र विद्या के १२१ प्रयोग' इस पुस्तक को रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार से मँगाकर देखें। यन्त्रों पर अविश्वास करने वालों के लिए यह पुस्तक चुनौती है।

इसकी हड्डी का यन्त्र बनाकर बच्चे के गले में बाँधा जाए तो उसको
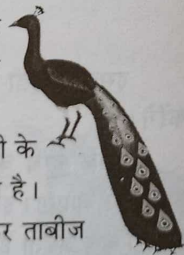
नजर नहीं लगेगी।

इसके मस्तक को कलंगी जो अपने पास रखे तो लोग उसे प्यार करेंगे।

लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग

प्रस्तुत प्रयोग एक ऐसा विलक्षणपूर्ण प्रयोग है जो कि आज तक किसी ने अनुभव नहीं किया होगा और न ही किसी भी तान्त्रिक ग्रन्थ में प्रस्तुत किया गया होगा। इस प्रयोग में लक्ष्मी को रिझाने की चमत्कारी गुण है यदि किसी ने इसे अपना लिया तो समझो लक्ष्मी की कृपा प्राप्त हो गई। ऐसा करने के लिए मयूर पंख की चाँद, शेर का दाँत, लाजवन्ती की जड़ी, हरसिंगार का फूल और शिवलिंगी सभी को एक ही पोटली में रखकर तिजोरी में रख देने से साधक कभी भी धन के लिए व्याकुल नहीं होगा।

व्यापारिक उन्नति

व्यापार में चहुमुखी उन्नति चाहने वालों के लिए यह प्रयोग विस्फोटक सिद्ध हो सकता है, करके देखें। मयूर का बायाँ पैर और शेर की मूँछ एक साथ सफेद कपड़े में बाँधकर दुकान में रखने से दुकान की बिक्री अत्यधिक बढ़ जाती है। मयूर कलंगी व काली गुंजा के २७ दाने एक साथ रखने वाला भी व्यापारिक उन्नति प्राप्त करता है।

गर्भ धारण

मयूर के दाहिने पैर के नाखून को यदि नि:सन्तान महिला अपनी कमर पर धारण कर लेती है तो उसे गर्भधारण अवश्य ही होता है।

कबूतर

कबूतर को तो सभी जानते है। यह बड़ा शुभ पक्षी होता है। कबूतर जिस घर में जितनी तादाद पर बढ़ते जाएँगे उस घर में लक्ष्मी की वृद्धि निरन्तर बढ़ती जाती है। यह अटूट सत्य है। यदि घर में किसी को भयानक रोग होने वाला होता है तो कबूतर को इसका अहसास हो जाता है। कबूतर
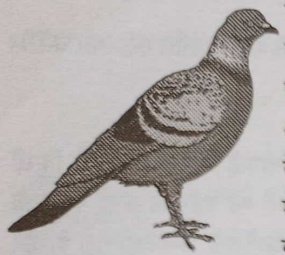
उस घर को छोड़ कर भाग जाता है। कबूतर को दुष्ट तान्त्रिक बलि के रूप में भी देवियों को प्रसन्न करने के लिए उपयोग करते हैं। आज भी यह सर्वदा प्रचलित है परन्तु समाज के लिए ऐसी बलि प्रथा ठीक नहीं है। कबूतर में लक्ष्मी को रिझाने की क्षमता है। यदि किसी का अहित करने के लिए कबूतर की बलि दी जाती है तो उसका सर्वनाश हो सकता है। मैंने अनुभव किया है कि जब कोई दुष्ट तान्त्रिक कबूतर को बलि देने के लिए ले जाता है उस वक्त यदि कबूतर के मुँह से दया रूपी बोली निकलती है। शायद किसी ने इस कबूतर की इस बोली को अनुभव किया हो। कबूतर धीरे-धीरे यह बोलता है—श्रीं श्रीं श्रीं और यह तो लक्ष्मी जी का मन्त्र है। अत: ये गहरे शोध का विषय है। अच्छा तो यही होगा कि इस तरह के दिव्य गुणों से भरपूर कबूतर की बलि न दी जाए। इतना ही सचेत करना चाहूँगा कि किसी भी तान्त्रिक को इस सत्यता का पता लगाना चाहिए।

तान्त्रिक प्रयोग

जंगली कबूतर की विष्ठा को तेल में मिलाकर गुप्तांग पर मालिश करने से शिथिलता दूर होती है।

इसकी विष्ठा में सुहागा समभाग मिलकार शिश्न पर लेपकर सम्भोग करें तो पुत्र ही उत्पन्न हो।

इसकी दाँयी आँख का यन्त्र बनाकर या अंगूठी में जड़ाकर अपने पास रखा जाए तो सब लोग उसे प्यार करेंगे।

जो पुरुष इसकी विष्ठा में सेंधा नमक मिलाकर शिश्न पर लेपकर जिस स्त्री के साथ सम्भोग करे तो वह औरत उसके वश में रहेगी।

इसके पत्ते में कपूर, सुहागा, पीपल, मधु समभाग मिलाकर लेपकर फिर सम्भोग किया जाए तो स्त्री मोहित होती है।

चमगादड़

चमगादड़ रात्रिचर पक्षियों के श्रेणी में आता है। ये प्राय: रात्रि को ही अपना भोजन करती है। दिन को इसकी आँखों से दिखाई नहीं पड़ता है। चमगादड़ के नाखून को सोने में मढ़वाकर धारण करने से धारणकर्ता की जेब हमेशा लक्ष्मी से भरी रहेगी। इसके नख को बारीक पीसकर माथे पर लगा लिया जाए तो एक महत्त्वपूर्ण बाजीकरण की शक्ति देता है। इसके नाखून को पीसकर पान में डालकर सेवन करा दिया जाए तो वशीकरण होता है। छोटे बच्चों को इसकी नख का ताबीज भी धारण कराया जाता है। जिससे बच्चे की जादू-टोना से सुरक्षा बनी रहे।

इसके मस्तिष्क का यन्त्र बनाकर कोई अपने पास में रखे तो बल की वृद्धि होगी और सांसारिक इच्छाएँ बढ़ेंगी।

इसकी विष्ठा को तिल्ली के तेल में भूनकर गुप्तांग पर मालिश की जाए तो शिथिलता दूर हो जाएगी।

इसके कपाल को सिरहाने रखा जाए तो निद्रा नहीं आएगी।

बाज

पक्षियों में बाज बहुचर्चित पक्षी है, ये मांस भक्षी हैं। यह प्राय: अपने से छोटी पक्षियों का शिकार करता रहता है। इसका शिकार, चूहा, सर्प, खरगोश इत्यादि हैं। इस पक्षी के पंखों में अपार शक्तिशाली ताकत होती है। इन्हीं पंख के सहारे यह खरगोश को भी मार डालता है। तन्त्र में इस मांसभक्षी बाज पक्षी की भूमिका भी कम नहीं है। टोना-टोटका के बचाव के लिए प्राय: गाँवों में इसके पंख को काम में लाते हैं। इसके पैर में तेजधार नाखून होता है। शायद ही इसके पैर की पकड़ से

इसका शिकार छूटता होगा। इसके नाखून को बच्चों को धारण करा देने से बाहरी हवा और भूत-प्रेतों का आक्रमण नहीं हो पाता है।

इस पक्षी के ११ पंखों को किसी धागे के सहारे बाँधकर दुकान में रखने से दुकान में नजर, टोना-टोटका नहीं लगता है। इस पक्षी की चोंच बहुत ही खतरनाक दृष्टिगोचर होती है। इसे किसी शत्रु के घर डाल देने से शत्रु पीड़ित होता है। इस पक्षी के कलेजे में मिरगी जैसी घातक बीमारी को समाप्त करने की शक्ति है। इसकी रीढ़ की हड्डी को जेब में रखकर जुआ खेलने से जुआ में जीत होती है। बाज के सात पंखों को आग में जलाकर शत्रु के घर के दीवार पर लगा दिया जाए तो उच्चाटन होता है।

जिस वृक्ष के साथ इसके नाखून बाँध दें उस वृक्ष पर चिड़ियाँ नहीं बैठेंगी।

चन्द्रमा जिस समय वृश्चिक राशि में हो तो इसकी चोंच लेकर इसके साथ इसके चमड़े पर शत्रु का नाम लिखकर जंगल में गाड़ दें तो शत्रु का नाश हो जाएगा।

मेंढक

इसकी चर्बी में अंजीर की लकड़ी भिंगोकर चूल्हे में डाल दें तो जितनी चाहे आग जलाएँ उस पर कोई वस्तु नहीं पकेगी।

सोई हुई औरत के सीने पर इसकी जिह्वा रख दी जाए तो वह अपने मन का भेद बता देगी।

इसके मांस को आटे में गूँथकर रोटी पकाएँ और फिर जिस पर चोरी का शक हो यदि उसको खिला दें तो वह अपने मन का भेद बता देगा।

अबाबील

इसकी हड्डी के साथ दुश्मन के पेशाब की धूल ताबीज में डालकर रख दें तो उसका पेशाब बन्द हो जाएगा।

इसकी हड्डी को ताँबे के ताबीज में डालकर गले में लटकाकर रात को छाती पर रखते हुए सो जाए तो उसे रात में स्वप्न में युद्ध होता दिखाई देगा। आखिर में उसके जो दुश्मन हैं वे दिखाई देंगे। उनको पहचान लें फिर दूसरे रोज उन व्यक्तियों के पैर की मिट्टी मँगाकर उस ताबीज में डाल कर रख दें तो तीन दिन के भीतर ही वह मित्रता करने पर बाध्य हो जाएँगे।

इसकी आँख को कपड़े में लपेटकर किसी के सिरहाने रखें तो उसको नींद नहीं आएगी।

इसकी दायीं आँख को स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर हाथ में डालें तो धन की वृद्धि होती है।

इसका मांस जिस स्त्री को खिला दिया जाए तो उसकी कामेच्छा दूर हो जाती है।

इसकी हड्डी के साथ दुश्मन के पैर की धूल ताबीज में डालकर भारी शिला के नीचे रख दें तो उसको नींद नहीं आएगी।

अगर इसके घोंसले की घास को पानी में धोकर उस पानी को प्रसूता स्त्री को दें तो उसकी पीड़ा दूर हो जाएगी।

गिद्ध

गिद्ध भयानक स्वरूप वाला पक्षी होता है। यह भी मांस भक्षी पक्षी होता है। इसकी चोंच कुछ मुड़ी हुई होती है। जैसे गरुड़ के मुँह की शक्ल में दिखाई देती है वैसे ही गिद्ध की चोंच देखने पर भयानक लगती है। इसके पैर कुछ लम्बे और पैर के पंजों की उंगलियों में कठोर और शक्तिशाली नाखून होते है। जो कैसी भी वस्तु में खरोंच कर सकते हैं। मरे हुए मवेशियों को खाने के लिए गिद्ध कहीं दूर से झुण्डों में आकर थोड़े ही समय में खाकर सफाचट कर देते हैं। गिद्धों का विशाल परिवार एक झुण्ड होता है मानो वो किसी राजा के सैनिक हों। यह प्राय: जंगलों के बीहड़ों में अपने रहने लायक निवास चुनते हैं। कहते हैं गिद्ध

की आँख बहुत तेज होती है अतः हजारों कोस दूर से भी देख सकता है। तन्त्र में गिद्ध के कुछ अंगों का प्रयोग किया जाता है। जैसे गिद्ध के पंख की हड्डी अन्दर से पोली होती है और टुकड़ों में बंटी होती है। यदि कहीं भी मरे हुए गिद्ध का पंख मिले तो पंख की हड्डी प्राप्त करके उसे काले रंग के धागे में गूंथ कर अपने बाएँ बाजू में बाँधकर जुआ खेला जाए तो जुए में निरन्तर जीत होती है। गिद्ध के दोनों पैरों को काली रस्सी में बाँधकर मकान के किसी एक किनारे पर लटका करके बाँधा जाए तो उस घर में अतृप्त आत्मा जैसे भूत-प्रेतों का उपद्रव नहीं होता है। मैंने कुछ गाँवों में इसका प्रयोग किया है। मैंने देखा है गिद्ध की खूँखारनुमा चोंच को दुकान के सामने बाँधकर रखने पर उस दुकान के टोने-टोटके जैसे घातक उपद्रव शान्त होते हैं। गिद्ध की रीढ़ की हड्डी क्रूर दिवस शनिवार को किसी के घर में डाल देने से उस घर में निवास करने वालों का उच्चाटन हो जाता है। गिद्ध की आँख को छाया में सुखाकर कपड़े के सहारे बाँधकर मस्तक पर धारण करने पर दिव्य दृष्टि की प्राप्ति होती है। यदि कोई साधक साधना करते-करते थक गया हो उसे सफलता नहीं मिल रही हो तो उनको गिद्ध की आँख का प्रयोग करना चाहिए। गिद्ध की आँख मस्तक पर धारण करके मन्त्र जाप करें तो निश्चित रूप से मन्त्र जल्दी सिद्ध होकर दिव्यत्व का अनुभव कराता है। गिद्ध की गर्दन की हड्डी कमर में धारण करने से मर्दाना शक्ति बढ़ जाती है। गिद्ध की पूँछ के पंख को अग्नि में जलाकर उसमें लाजवन्ती का रस मिलाकर माथे पर तिलक लगाने से वशीकरण की शक्ति प्राप्त होती है।

नेवला
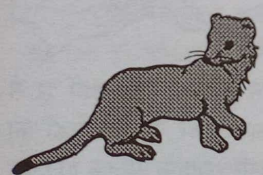
नेवला एक लघु आकार का जानवर होता है। इसे किसी जादू करने वाले के पास देखा जा सकता है। वैसे नेवला हमारे गाँव के आस-पास सुनसान जगह या फिर मरघट में देखा जा सकता है। आप नेवले और सर्प की लड़ाई तो देखते ही होंगे। यह अपने मुँह से साँप को टुकड़ों में बाँट देता है। कहने का तात्पर्य यह

है कि नेवला साँप के टुकड़े-टुकड़े कर देता है। किसी भी विषधारी सर्प को यह आसानी से पकड़ लेता है। पर यहाँ चौकाने वाला तथ्य भी है कि नेवला विषैले साँप का तो हनन करता है पर यदि कोई गरुड़ वृक्ष की लकड़ी को नेवले के सिर पर रख दे तो नेवला या तो मर जाता है या फिर बेहोश हो जाता है। कारण यह है कि गरुड़ वृक्ष में कैसा भी विष हो उसको शमन करने की एक महत्त्वपूर्ण शक्ति होती है। नेवला गरुड़ वृक्ष से डरता है। गरुड़ वृक्ष कहाँ है, किस जगह है इसे वह अपनी नाक के श्वास से जान लेता है और वह उससे सतर्क रहता है।

तन्त्र में नेवले का प्रयोग किया जाता है। सुबह के समय किसी को नेवला दिखाई दे तो शुभ शकुन होता है। नेवले की पूँछ दिखने में अच्छी लगती है। उसे घर की छत पर लटका करके बाँधने से उस घर में निरन्तर धन का आगमन होता है। नेवले के सिर की हड्डी को बारीक पीसकर जिस किसी को जहरीले साँप ने काट दिया हो उसके मस्तक पर लगाने से साँप का जहर तत्काल समाप्त होता है। यह एक अच्छा व अचूक साधन है। इसका प्रयोग कर लेना चाहिए। नेवले के दाँत की अंगूठी धारण करने से आकस्मिक धन प्राप्ति होती है। नेवले के पैर का नख धारण करने पर बच्चों का टोने-टोटके का बचाव होता है। नेवले का कलेजा, उल्लू का कलेजा व शिवलिंगी को एक साथ रखने वाला धनप्राप्ति करता है। इससे कर्ज का निवारण भी होता है। यह एक कारगर उपाय है। नेवले के बाल को सफेद गुंजा के साथ पीसकर लगाने से वशीकरण होता है। नेवले की जीभ को छाया में सुखाकर उसमें अष्टगन्ध, केसर लगाकर ताँबे के लोटे में भरकर तिजोरी में रखने से तिजोरी हमेशा धन से भरी रहेगी। यह भी एक अनुभव किया गया उपाय है।

भालू

भालू को तो सभी जानते हैं। यह प्रायः रात को गाँव के किनारे आकर भ्रमण करता है। इसकी खाल यदि मिले तो भूत-प्रेत सिद्धि के लिए आसन के रूप में काम में लाई जाती है। इसकी चर्म पर बैठकर साधना की जाए तो

भूत-प्रेत, किन्नर, पिशाच, कर्ण पिशाचनी, बगलामुखी की कठोर साधना भी सफल होती है। पर यह न भूलें कि साधना मार्ग जटिल और कष्टमय होता है। भालू के दाँत को यदि कमर में धारण कर लिया जाए तो नामर्द भी मर्द बन जाता है। उसकी कामशक्ति अत्यधिक बढ़ जाती है। भालू का मांस विषैले साँप के बिल के सामने रखने पर साँप तुरन्त उस बिल से बाहर आ जाता है। यह एक चमत्कारी उपाय है। भालू के बालों की धूनी देने पर भूत-प्रेत भाग जाते हैं। छोटे बच्चों को भालू के बाल को धारण भी कराया जाता है जिससे कि उनका नजर टोने-टोटके से बचाव हो सके। भालू के नख को धारण करने पर मिरगी की बीमारी ठीक होती है। भालू की एक और विशेषता यह है कि इसकी हड्डी को किसी बाड़ी में बाँधकर गाड़ दिया जाए तो उस बाड़ी में लगाई हुई साग सब्जी का नाश होता है। यह एक जबरदस्त उपाय है। समाज के हित में ऐसा नहीं करना चाहिए।

सल्लू साँप (साल खपरी)

सल्लू साँप को साल खपरी के नाम से जाना जाता है। सल्लू इसके पूरे शरीर में होती है। इस सल्लू की एक विशेषता है कि यह जब भागता है तो चक्के के समान अपने पूरे शरीर को बना लेता है और फिर जिस तरह गाड़ी का पहिया घुमता है बस उसी तरह सल्लू भी घूमते हुए भागता है। इसके शरीर पर खपरी होती है। इस खपरी को छेद करके उँगली में धारण करने पर पथरी की बीमारी ठीक होती है।

सल्लू लघु आकार से लेकर बृहत आकार तक देखा गया है। इसकी एक और विशेषता है कि सल्लू से शेर भी डरता है यदि कोई भयानक शेर सल्लू को पकड़ने लगता है तो उस वक्त सल्लू अपनी पूँछ से शेर पर इस कदर प्रहार करता है कि शेर डरकर भाग जाता है। सल्लू की खपरी के ऊपर माँ काली का चित्र बनवाकर पूजा स्थल पर रख लिया जाए तो माँ काली की कृपा बनी रहती है।

हुद-हुद

हुद-हुद एक खूबसूरत पक्षी होता है। इसके सिर के ऊपर एक कलंगी होती है जो इस पक्षी की शोभा बढ़ाती है। हुद-हुद की कलंगी भी लक्ष्मी कारक होती है। इसकी कलंगी को हमेशा लक्ष्मी जी की तस्वीर के सामने रखने पर लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

इसके दाएँ पैर को सिरहाने रखा जाए तो निद्रा बिलकुल नहीं आएगी।

इसकी जिह्वा का ताबीज बनाकर पास में रखें तो शत्रु उससे भय खाएगा।

रविवार को इसका रक्त लेकर अपना शुक्र मिलाकर यदि किसी स्त्री को खिलाया जाए तो वह स्त्री वश में हो जाएगी।

इसके नाखून में अपने नाखून मिलाकर शुक्ल पक्ष में शुक्रवार के दिन जिस स्त्री को खिलाया जाए वह अत्यन्त प्यार करेगी।

इसके मस्तक को सुखाकर किसी के सिरहाने रखें तो उसको निद्रा बहुत आएगी।

इसके मस्तक को सुखाकर तेल में मिलाकर चेहरे पर मालिश की जाए तो सभी सम्मान करेंगे।

इसके दिल का यन्त्र बनाकर अपने पास रखें तो ताकत की वृद्धि होती है।

इसके मस्तक को कोई अपने पास रखे तो स्मरण शक्ति बढ़ती है।

बगुला

बगुला प्रायः तालाब के किनारे नदी के जल के किनारे मँडराते हुए देखा जा सकता है। यह पक्षी भी मांस भक्षी होता है। मेढ़क, मछली, घोंघा, कीड़े-मकोड़े इसका मुख्य भोजन हैं। बगुले का महत्त्व भी तन्त्र में कम नहीं है। इसकी चोंच को यदि चाँदी के पत्र में बन्द करके तिजोरी में रख लिया जाए तो धन वृद्धि होती है। बगुले के पंख की हड्डी की माला बनाकर उसका प्रयोग भूत-प्रेत सिद्धि के

लिए साधना में सफलता के लिए किया जाता है। बगुले के पैर को यदि घर में रख लिया जाए तो उस घर में कलह नहीं होती है।

बगुला का शब्द

किब्किषिशब्दः पूर्णः करायिकायाः शुभ कहकहेति।
क्षमाय केवलं कहकरेति न त्वर्थीलब्धिकरः॥
कोटुक्लीति क्षेम्यः स्वरः कटुक्लिति वृष्टये तस्याः।
अफल कोटिकिलीति च दीप्तः खलु गुं कृतः शब्दः॥

अर्थात्—आकाश में उड़ने वाले बगुले का 'किषु किषु' शब्द तथा 'कह कह' शब्द शुभ होता है। 'कर कर' शब्द केवल यथास्थिति को घोषित करता है। इस शब्द से धन लाभ की सूचना नहीं मिलती है। अपितु प्राप्त स्थिति की रक्षा ही होती है। बगुला का 'कोटिक्कुली' ऐसा शब्द शुभ और कल्याणकारक होता है। कटुकली शब्द वर्षा की सूचना देता है। कोटूकली शब्द निष्फल तथा 'गुं गुं' शब्द दीप्त अर्थात् अशुभ होता है।

बगुला की जीभ को काली गुंजा के साथ पीसकर तिलक लगाकर साधना की जाए तो साधना में सफलता निश्चित तौर से मिलती है, यह अकाट्य सत्य है। यदि ताँबे के लोटे में जल भरकर उस उस लोटे में बगुला के सात पंख डाल कर वह जल किसी रोगी के ऊपर डाल दिया जाता है तो वह रोग से मुक्ति पा लेता है। यदि बगुला अकस्मात घर की छत पर आकर 'गूं गूं' शब्द बोले तो उस घरवासी को धन प्राप्ति होती है।

सर्प

सर्प तन्त्र जगत में मान्य है। इसकी बिना टूटे-फूटे केंचूली, एक हर्रा और मयूर की चाँद रखने वाला, कभी भी धन के लिए निराश नहीं होगा। यदि सामने से साँप आता हुआ दिखे तो शत्रु से मुलाकात अवश्य ही होती है। दायीं और बायीं ओर से आता सर्प दिखे तो यात्रा में असफलता की सूचना देता है।

छिपकली

छिपकली एक घरेलू जीव है ये प्रायः हमारे घर पर ही निवास करती है, धनत्रयोदशी के रोज इसका देखना शुभ माना गया है। तन्त्र शास्त्र के अनुसार छिपकली की पूँछ चाँदी के ताबीज में भरकर धारण करने से धनलाभ होता है।

टिटहरी

टिटहरी एक सुन्दर पक्षी होता है इसके पैर लम्बे होते हैं। ये 'टी-टी-टी' शब्द बोलता है, कभी-कभी 'टी-टी-द टी-टी-द' शब्द बोलता है। जब शेर जंगलों में विचरण करता है तो टिटहरी शेर की पीठ को नोचती है और उड़ जाती है। टिटहरी का प्रसंग हमारे पूज्य ग्रन्थ रामायण में आया है कि जब टिटहरी रात को सोती है तो अपने दोनों पैर आकाश की ओर उठाकर सोती है, शायद टिटहरी यह सोचती है कि बादल मेरे ऊपर न गिर पड़े। टिटहरी के पंख को तन्त्र कार्य में प्रयोग में लाया जाता है, इसके पंख को भूत-प्रेत पीड़ित व्यक्ति के सिर के ऊपर से पैर तक इक्कीस बार उतारकर आग में जलाया जाता है तो तथाकथित भूत-बाधा का निवारण हो जाता है। टिटहरी के पैर घर पर रखना अत्यन्त शुभ माना गया है।